तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 8-9, अंक- 12-1, नवंबर-दिसंबर 2020, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

प्रतिकूल रही धाराएँ पर हम अड़े रहे
योद्धा बन कर्तव्य-पथ पर खड़े रहे

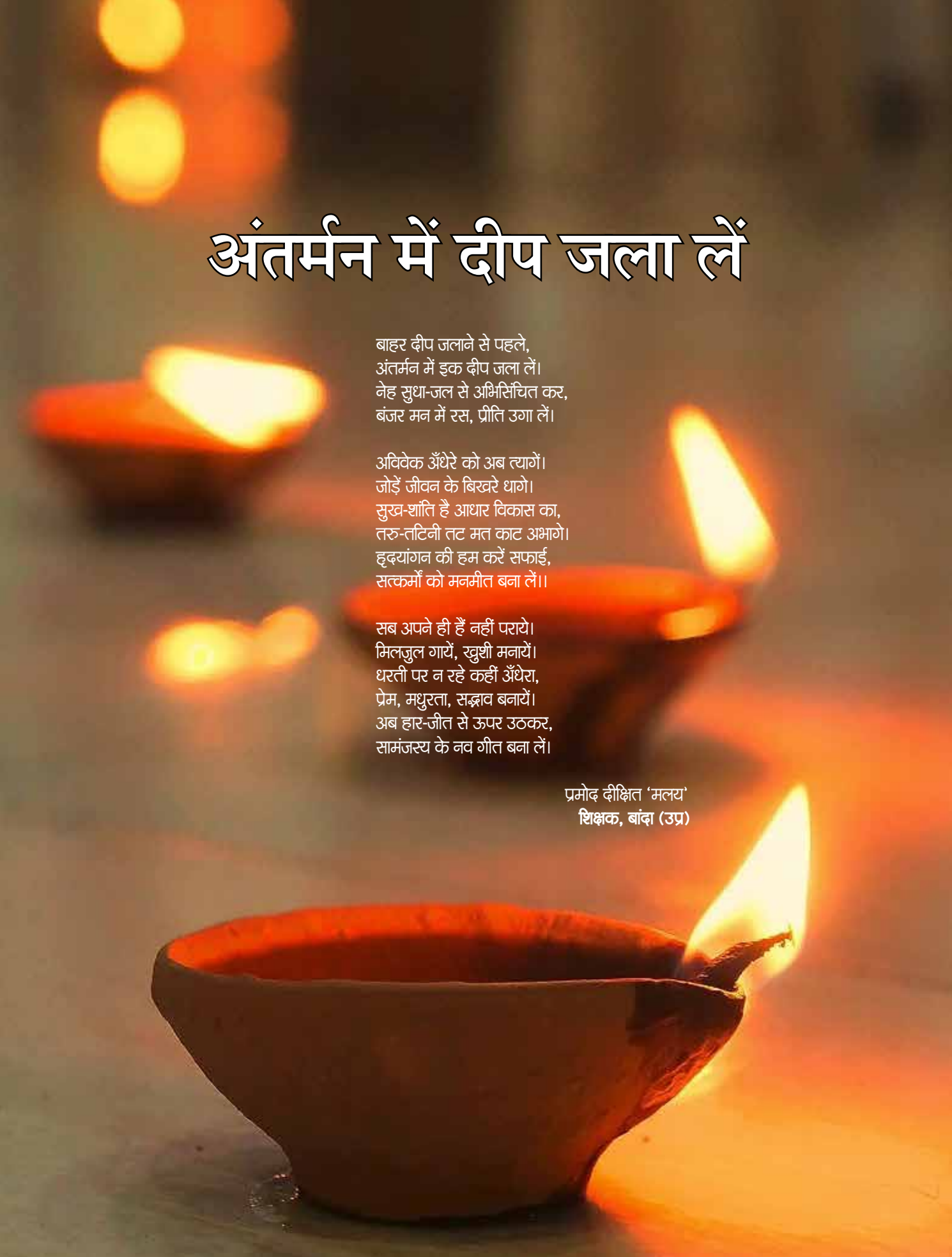

अंतर्मन में दीप जला लें

बाहर दीप जलाने से पहले,
अंतर्मन में इक दीप जला लें।
नेह सुधा-जल से अभिसिंचित कर,
बंजर मन में रस, प्रीति उगा लें।

अविवेक अँधेरे को अब त्यागें।
जोड़ें जीवन के बिखरे धागे।
सुख-शांति है आधार विकास का,
तरु-तटिनी तट मत काट अभागे।
हृदयांगन की हम करें सफाई,
सत्कर्मों को मनमीत बना लें।।

सब अपने ही हैं नहीं पराये।
मिलजुल गायें, खुशी मनायें।
धरती पर न रहे कहीं अँधेरा,
प्रेम, मधुरता, सद्भाव बनायें।
अब हार-जीत से ऊपर उठकर,
सामंजस्य के नव गीत बना लें।

प्रमोद दीक्षित 'मलय'
शिक्षक, बांदा (उप्र)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

नवंबर-दिसंबर 2020

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
नितिन कुमार यादव
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. रजनीश गर्ग
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सतिन्द्र सिवाच
संयुक्त निदेशक (प्रशासन),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

> "शिक्षक कभी साधारण नहीं होता। प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।"
>
> -चाणक्य

- कोरोनाः विभाग ने आपदा को अवसर में बदला 5
- शनैः-शनैः बाल-कलरव से गुंजित होंगी शालाएँ 8
- स्कूल खोलने के मार्ग में आएँगी अनेक चुनौतियाँ 10
- कोरोना काल में वरदान बनीं 'दीक्षा' और 'निष्ठा' 12
- अब योग होगा हर विद्यार्थी की दिनचर्या में शामिल : मुख्यमंत्री 14
- हरियाणा राज्य प्रशिक्षण नीति-2020 मानव संसाधन क्षमता संवर्धन का अनूठा कार्यक्रम 16
- क्यूआर कोडिड चार्टों से मिलेगी विद्यार्थियों को विशेष जानकारी 17
- अपने वेतन से खरीद कर जरूरमंद बच्चों को बाँटे स्मार्ट फोन 17
- 'दिवास्वप्न' के आलोक में वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य 18
- शिक्षा, साहित्य व समाजसेवा में 'आर्टिस्ट' ने बनाई विशिष्ट पहचान 20
- माँ-बाप के सपने पूरे करना चाहती है छात्रा मुस्कान 21
- कैसे बना हमारा संविधान ? 22
- शैक्षणिक व सांस्कृतिक कीर्तिमान स्थापित किए हैं इस्माइलाबाद के संस्कृति विद्यालय ने 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- परीक्षा में अंकों का महत्त्व 30
- हर दिन, हर पल आगे कैसे बढ़ें 31
- Teacher accountability: Non-teaching work... 32
- Elders are a boon of life 38
- The Rainbow Without a Hue 39
- Compendium of Academic Courses After +2 40
- hEarth 45
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

आपकी नज़रों में आफताब की है जितनी अज़्मत हम चिरागों का भी उतना ही अदब करते हैं

आदिकाल से ही मनुष्य ने प्रकाश के महत्त्व को समझ लिया था। उस दिन एक चमत्कार हुआ होगा जिस दिन उसने पहली बार अपनी कंदरा में मिट्टी का दीया रखा होगा। इस दीये ने उसे बाहर से ही नहीं भीतर से भी प्रकाशित किया होगा। धीरे-धीरे माटी का यह नन्हा दीया मानव जीवन का अभिन्न अंग बन गया। कालान्तर में यह उसकी मन की प्रसन्नता की अभिव्यक्ति का सूचक बन गया। उसका कोई भी मांगलिक अवसर इसके बिना अधूरा रहने लगा। वास्तव में यह नन्हा-सा दिखने वाला दीया प्रतीक है शुभता का, मंगल का, प्रकाश का, हर तरह के अंधकार से अनवरत संघर्ष कर उसे परास्त करने का। यह सूर्य का प्रतिनिधि है। स्वयं जल कर दूसरों को प्रकाशमान करना ही दीप की जीवन-यात्रा है।

दीप प्रकाश फैलाता है तो गुरुजन ज्ञान। वैसे भी अज्ञानता को अंधकार तथा ज्ञान को प्रकाश का प्रतीक माना जाता है। इस तरह देखें तो अध्यापक विद्यार्थियों के मन में पसरे अज्ञानता के तिमिर को हर कर उसे ज्ञान के उजाले से भरता है।

आइए, इस प्रकाशपर्व पर संकल्प लें कि हम इस कोरोना काल में भी अपनी संपूर्ण शक्ति से शिक्षक-धर्म के दायित्व का निर्वाह करते हुए शिक्षा के प्रकाश से बालकों की समस्त शक्तियों का विकास करेंगे, ताकि वे समाज का एक उत्तरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र-संपन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओतप्रोत हों।

आलोक-पर्व पर अनेकानेक मंगलकामनाएँ।

-संपादक

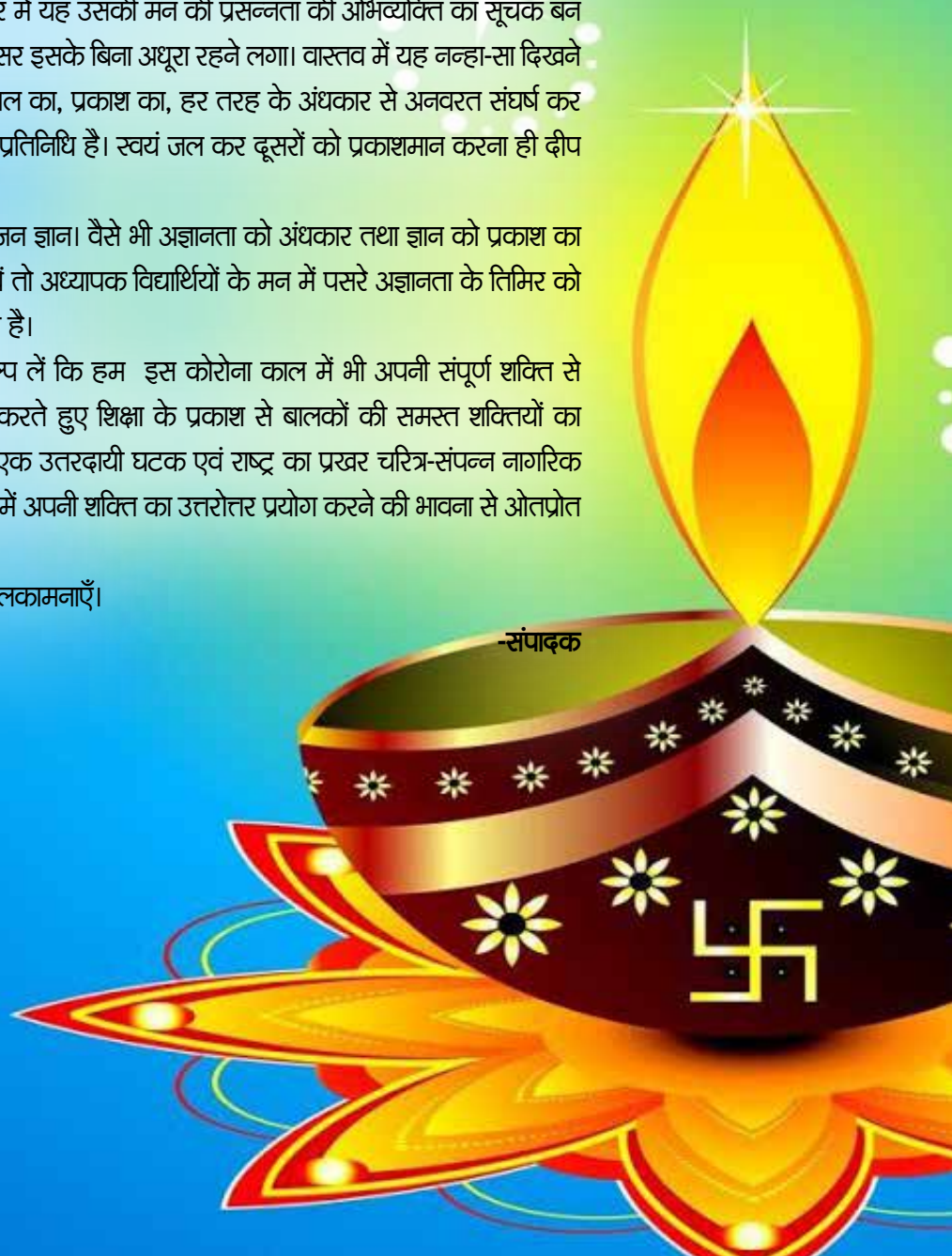

कोरोनाः विभाग ने आपदा को अवसर में बदला

डॉ. योगेश वासिष्ठ

वर्ष 2019 के वर्षान्त में कोरोना वायरस से उत्पन्न यह बीमारी चीन के वुहान शहर से प्रारम्भ होकर कुछ ही महीनों में पूरे विश्व में फैल गई। इससे पहले वायरस से फैली बीमारियों स्वाइन फ्लू, इबोला, जीका, सार्स, निपाह आदि की तुलना में यह कहीं अधिक घातक व व्यापक सिद्ध हुई है। भारत का पहला मामला केरल में 30 जनवरी, 2020 को प्रकाश में आया। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 31 जनवरी को वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किया। अमेरिका व अन्य यूरोपीय देशों में इसके बढ़ते मामलों को देखकर 11 मार्च को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे महामारी घोषित किया तो अगले ही दिन दिल्ली व हरियाणा आदि राज्यों ने भी इसका अनुसरण किया। भारत सरकार ने 14 मार्च को इसे राष्ट्रीय आपदा स्वीकार कर लिया। माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 मार्च के दिन सभी देशवासियों से सुबह सात बजे से रात नौ बजे तक घर में रहकर जनता कर्फ्यू की अपील की। सभी ने यह अनुभव किया कि यह समय वास्तव में ही संयम और संकल्प का है और पूरे भारत ने एकजुटता का परिचय देकर पूरे समाज की रक्षा के लिए स्वयं को घरों में कैद कर लिया। रात के नौ बजे लोगों का अपने घर के दरवाजों व छतों पर ताली व थाली बजाना कोरोना से युद्ध की बेमिसाल रणभेरी थी। देशवासियों की इस मानसिक तैयारी के बाद 24 मार्च को प्रधानमन्त्री ने राष्ट्र के नाम सन्देश में नारा दिया कि 'जान है तो जहान है' और उन्होंने पहले चरण में 21 दिन के

लॉकडाउन की घोषणा कर दी।

इस बीच सार्वजनिक वाहनों का चक्का जाम हो गया। आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी छोड़कर क्या मॉल, क्या बाज़ार, सब बन्द हो गए। सभी स्कूल कॉलेज बन्द हो गए। छात्रों की बोर्ड व विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ रोक दी गईं। होली की चमक पहले ही फीकी पड़ चुकी थी, रमजान में भी सन्नाटा पसरा रहा। लोगों के रोजगार पर भी संकट आया तो मजदूरों का अपने गाँवों की ओर

पलायन शुरू हो गया। सार्वजनिक वाहनों की तत्काल व्यवस्था न होने पर अफरा-तफरी मच गई। मजदूरों के उमड़ते समूहों ने 'सामाजिक दूरी' के सिद्धान्त के लिए चुनौती खड़ी कर दी। अपने घरों की ओर पैदल ही चल पड़े अनेक मजदूर औरंगाबाद में रेल हादसे का शिकार हो गए। मीडिया में खबरें आईं तो ऐसे में विभिन्न राज्य सरकारों ने, रेलवे ने उन्हें उनके गाँव तक पहुँचाने के इन्तज़ाम किए तो समाज सेवियों ने मानवता की मिसाल कायम कर उनके लिए ठहराव और खानपान की व्यवस्था की। इस दौरान ऐसी खबरें पढ़ने को आईं कि मजदूरों ने भी शिविरों में खाली न बैठकर परिवेश की बेहतरी के लिए श्रम कार्य किया। इस बीच कोरोना के परीक्षण बढ़े और मरीज़ भी बढ़ने लगे तो धीरे-धीरे यह संकट बढ़ता देख लॉकडाउन की शृंखला भी बढ़ने लगी।

विश्व में न्यूज़ीलैंड सरीखे कुछ ही ऐसे स्थान हैं, जहाँ इसका व्यापक प्रसार नहीं हुआ। अन्यथा कोरोना ने अपने प्रसार में किसी को नहीं बख्शा। बच्चे हों या बूढ़े, अमीर हों कि गरीब। सबको इसने अपने चंगुल में ग्रस लिया। यहाँ तक कि अमेरिकी राष्ट्रपति, इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री, भारत के गृह मन्त्री सरीखे ताकतवर नेताओं को भी इसने अपनी चपेट में ले लिया। कोरोना से बचाव के लिए बार-बार हाथ धोने, सावधानी बरतने आदि का सन्देश देने वाले प्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन का भी सावधानी हटने पर इसने लिहाज न कर उन पर अपना वार किया।

कोरोना के मामले देश में और दुनिया में भी अनवरत बढ़ते रहे। ऐसे में प्रधानमन्त्री जी ने देश की अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए फिर साहसिक सन्देश दिया कि 'जान भी, जहान भी।' उन्होंने भारतीयों को स्थानीय उत्पादों की आवाज़ बनने को प्रेरित किया। वित्तमन्त्री ने उद्योग धन्धों को उबारने के लिए कुछ आर्थिक पैकेज दिए। लोग फिर से काम धन्धों पर लौटने लगे। 'दो गज की दूरी, मास्क है जरूरी' की सावधानी के साथ बाजारों में भी रौनक लौटने लगी। फलस्वरूप आज बस, मैट्रो, रेल व हवाई यात्राएँ शुरू हो चुकी हैं। कोरोना की काट के लिए विश्व भर में टीका परीक्षण हो रहे हैं। ऐसे में त्योहारों की उमंग के बीच लोगों को चेताते हुए प्रधानमन्त्री ने फिर सन्देश दिया है कि 'जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं।'

इन सभी विषम परिस्थितियों के बीच जब स्कूलों में छात्रों का आना नहीं हो सका, तब हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने सत्र के प्रारम्भ में ही 'घर से पढ़ाओ' कार्यक्रम की शुरुआत की। इसके द्वारा वहाट्स ऐप समूह बनाकर अपने सभी छात्रों से अध्यापकों का संवाद सुनिश्चित किया। अध्यापकों ने इस माध्यम से न केवल उन्हें गृह कार्य दिया, उनको वीडियो के माध्यम से पढ़ाया अपितु उनके किए गए कार्यों की जाँच भी की। साथ ही विभाग ने सक्षम कार्यक्रम के अन्तर्गत अनेकानेक गतिविधियाँ जैसे स्तरवार प्रश्नोत्तरी आदि संचालित कर उन्हें सकारात्मक रूप से व्यस्त रखने का प्रयास किया। इस सबके लिए पूरे विभाग के अधिकारियों को मॉनीटरिंग का दायित्व भी व्यापक स्तर पर प्रदान किया गया ताकि छात्र शिक्षा का समुचित ध्यान रखा जा सके।

इस दौरान एससीईआरटी द्वारा तकनीकी रूप से दक्ष विभिन्न अध्यापकों के माध्यम से एजुसेट प्रसारण के लिए जो वीडियो तैयार करवाए गए, उनका भी विभाग ने नियमित प्रसारण सुनिश्चित किया ताकि छात्रों की पढ़ाई निर्बाध जारी रह सके। छात्र हित में इन वीडियो का प्रसारण केबल टीवी, जियो लिंक सहित विभिन्न ऐप द्वारा भी सुनिश्चित किया गया। इसके लिए विभाग ने एससीईआरटी के सहयोग से स्वयंप्रभा चैनल पर भी अपने कार्यक्रम शुरू किए। 'विश्व शिक्षा दिवस' अवसर पर 5 अक्तूबर से 'एजुसैट ऑन दीक्षा' कार्यक्रम की शुरुआत भी की गई, ताकि विभागीय एजुसैट चैनल पर

प्रसारित वीडियो इस पोर्टल पर छात्र अपनी सुविधानुसार कभी भी देख सकें। दीक्षा पोर्टल के माध्यम से जहाँ छात्र शिक्षण के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य शुरू हुए, वहीं इसके द्वारा सभी शिक्षकों के लिए निष्ठा प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किया जा रहा है। छात्रों की समस्त शिक्षण गतिविधियों के साप्ताहिक आकलन के लिए 'अवसर ऐप' तथा ई मेंटरिंग व ई-मॉनीटरिंग के लिए 'समीक्षा ऐप' अत्यन्त प्रभावी सिद्ध हो रहे हैं। कोरोना संकट के समय जैसा कि अक्सर प्रधानमन्त्री कहते रहे हैं कि 'हमें आपदा को अवसर में बदलना है।' उक्त सभी तकनीक आधारित कार्य इसी बात का प्रमाण हैं कि हमारे सीमित संसाधनों के होते, जो बातें असम्भव प्रतीत होती थी, वे इस संकट काल में सच्चाई का रूपाकार ले रही हैं। यह संकट तो कुछ समय पश्चात बीत जाएगा किन्तु हमारे शिक्षा क्षेत्र के लिए यह निश्चय ही एक नई राह खोल चुका है।

कोरोना का हमारे जीवन पर बहुविध प्रभाव पड़ा है। इसने हाथ मिलाने की पाश्चात्य पद्धति पर हाथ जोड़ने की भारतीय पद्धति को अपनाने के लिए प्रेरित किया। बाहर से आने पर अथवा कुछ छू लेने पर बार-बार हाथ धोने से जीवन में स्वच्छता व पवित्रता के भाव को महत्त्व दिया। संकट के समय घबराने की अपेक्षा धैर्य व संयम से काम लेने का पाठ पढ़ाया। बाहर की भागदौड़ की बजाय अपने परिवार के साथ समय बिताने के महत्त्व का सबक सिखाया। लॉकडाउन के दौरान हम नदियों का स्वच्छ जल और साफ़ नीला आकाश देखकर वास्तविक प्रकृति के निकट से दर्शन करने में समर्थ रहे। कोरोना योद्धाओं का त्याग, समर्पण व निष्ठा भाव देखकर मानव में ही भगवान को पहचान पाए।

ऐसे अनेक सकारात्मक भावों के साथ कुछ नकारात्मक दृश्य भी उभरे कि कुछ स्थानों पर चिकित्सकों पर ही पत्थरबाजी हुई, पुलिस पर ही हमला हुआ, जो यह दर्शाता है कि हमारे समाज में उपस्थित ऐसे नकारात्मक तत्त्वों को हमें शीघ्र पहचानकर स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उनका इलाज़ करने की भी आवश्यकता है। अनेक लोगों की नौकरी चले जाने से उनके मन में भविष्य के प्रति भय व आशंका जागी है। वे अवसाद का शिकार हो रहे हैं। हमारे बच्चे बाहर निकलकर खेलना-कूदना सब भूल गए हैं और घरों में कैद रहकर मोबाइल ही उनका इष्ट मित्र हो गया है। जहाँ वे इससे अपनी कक्षा का लाभ ले पा रहे हैं। वहीं इसके वे इतना आदी भी हो गए हैं कि व्यर्थ के खेलों में उलझा देखकर माता-पिता उनसे मोबाइल लेना भी चाहें तो वे हठी और चिड़चिड़े हो रहे हैं, बड़ों का कहना नहीं मान रहे हैं।

ऐसे अनेक सकारात्मक व नकारात्मक परिवर्तन हमें बहुत कुछ सोचने को विवश कर रहे हैं। इनसे हमारे भविष्य की दिशा तय होनी है। आज इन सभी बिन्दुओं पर विचार करने की महती आवश्यकता है, क्योंकि सम्पूर्ण मानव जाति की सुरक्षा और मानवीय जिजीविषा के लिए यह कठिन चुनौती का वक्त है। इस आपदा की घड़ी में जबकि विश्व में करोड़ों लोग इसकी चपेट में आ चुके हैं, लाखों लोग अपनी जान गँवा चुके हैं, अपनी सोच और व्यवहार के बारे में सोचने का समय है। मेरे ही शब्दों में -

आओ मिल चिन्तन कर लेवें, कर लेवें मिलकर विचार।
कैसे निपटें इस विपदा से, संग लाई जो आफ़त अपार।

भारत देश ने अपने स्वभाव के अनुरूप इस संकट की घड़ी में अनेक देशों को हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन दवा भेजकर, विभिन्न देशों से अन्तरराष्ट्रीय मंचों पर चर्चा के दौरान मानवता को सर्वोच्च समझा है। अपने देश में भी इसकी मृत्यु दर को कम रखने में भारत सफल रहा है और इसका टीका आने पर प्रत्येक देशवासी तक इसे पहुँचाने के लिए हमारे प्रधानमन्त्री जी संकल्पबद्ध हैं। पर जब तक टीका नहीं आ जाता यह सदा ध्यान रखना है कि अभी कोरोना संकट गया नहीं है। हमारे कार्यालय, हमारे परिवार के सदस्यों के माध्यम से ही वह कब हम तक पहुँच जाए, कह नहीं सकते। निरन्तर बढ़ते मामले इस बारे में हमें फिर चेता रहे हैं। किसी भी स्थिति में यह समय खतरे से बेपरवाह होने अथवा हाथ पर हाथ धरकर बैठने का नहीं है। अतः जब तक इसका इलाज़ नहीं, तब तक इससे घबराए बिना, निगरानी, रोगियों का पृथक्वास, सूचनाओं का पारदर्शी आदान-प्रदान, हाथ धोना, मास्क लगाना आदि सावधानी और भौतिक दूरी ही सही।

अध्यापक शिक्षा विभाग
एससीईआरटी, हरियाणा, गुरुग्राम

शनैः-शनैः बाल-कलरव से गुंजित होंगी शालाएँ

प्रमोद कुमार

बढ़ती सतर्कता और सावधानी के मध्यनजर विद्यार्थियों का स्कूलों की ओर रुझान बढ़ रहा है तथा दैनिक उपस्थिति में भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। यदि गहराई से देखा जाए तो कोविड-19 की त्रासदी ने स्कूली शिक्षा को जिस तरीके से कमजोर किया है उतना प्रभाव बाकी क्षेत्रों पर नहीं पड़ा। हमारे स्कूल पिछले सात महीनों से बच्चों की राह देख रहे थे। सारा वर्ष बच्चों की चहलकदमी, खिलखिलाहट, शोरगुल, पठन-पाठन गतिविधियों से सरोबार रहने वाले स्कूल भवन कोविड त्रासदी के दौरान सूने, बेजान भवनों से दिखने लगे थे। बोर्ड की परीक्षाओं के मध्यनजर अब विद्यालयों को आरम्भ किया गया है तो वह चहल-पहल पुनः लौट आई है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा जारी अनलॉक-5 की हिदायतों को देखते हुए तथा विद्यार्थियों की सुरक्षा और शिक्षा को बराबर महत्त्व देते हुए हरियाणा सरकार के आपदा प्रबन्धन विभाग द्वारा स्कूलों को 2 नवम्बर से कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों की हर रोज तीन घंटे नियमित कक्षाओं के संचालन हेतु खोल दिया गया है। हालांकि अनलॉक-4 की हिदायतों के मध्यनजर कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थी अपने माता-पिता की लिखित अनुमति से अपने अध्यापकों से परामर्श करने के लिए पिछले पाँच सप्ताह से स्कूलों में आ रहे थे तथा यह प्रयोग सफल रहा था। विभाग द्वारा 2 नवम्बर से लगातार विद्यार्थियों की दैनिक उपस्थिति का अवलोकन किया जा रहा है। पहले ही दिन पूरे राज्य में कक्षा 9वीं से 12वीं के सरकारी विद्यालयों के 75,683 विद्यार्थियों द्वारा स्कूलों में शानदार उपस्थिति दर्ज की गई जो निरन्तर बढ़ रही है और 06 नवम्बर को ही 1,26,056 पर पहुँच गई। हालांकि दीवाली के त्योहार के कारण इसमें थोड़ा ठहराव आया है, परन्तु दीवाली के बाद यदि 19 नवम्बर को देखा जाए तो यह संख्या 1,62,350 पर पहुँच गई है। जबकि इसी दौरान विद्यालयों में विद्यार्थियों के जब रेंडम टैस्ट हुए तथा विद्यार्थी और अध्यापक कोरोना पॉजिटिव आए, तब भी छात्र संख्या पर प्रभाव नहीं पड़ा है अर्थात् विद्यार्थी पूरी सुरक्षा अपनाते हुए एसओपी का पालन करते हुए अपनी स्कूली शिक्षा को महत्त्व दे रहे हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा इसके लिए प्रयास किए गए हैं जिसमें विद्यालयों को सेनेटाइज करने, स्वच्छता बनाये रखने के लिए आवश्यक सामग्री के लिए बजट व्यवस्था करना, तापमान जाँचने के उपकरण, हाथ धोने के साबुन की व्यवस्था, विभिन्न प्रकार के वेब पोर्टल, आरोग्य सेतु एप्प को अनिवार्य करना, स्कूलों में स्थान-स्थान पर आईईसी सामग्री लगाना तथा प्रशिक्षण वीडियो बनाना, अध्यापकों, अभिभावकों तथा विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देना, बड़े विद्यालयों को छोटे-छोटे समूहों में बाँटना, बबल की संरचना करना, स्कूलों में प्रवेश और निकास द्वारों की संख्या बढ़ाना एवं निर्धारित करना आदि हैं जो एसओपी का महत्त्वपूर्ण भाग हैं तथा सभी इसकी अनुपालना कर रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग द्वारा रेंडम सैम्पल लेकर जब विद्यार्थियों और अध्यापकों के टैस्ट किए गए तो स्कूलों में कुछ विद्यार्थी तथा अध्यापक पॉजिटिव पाए गए। इन सभी विद्यालयों को दो सप्ताह के लिए बन्द कर दिया गया है तथा परिसर को समुचित रूप से सेनेटाइज किया गया है। यहाँ एक और बिन्दु उल्लेखनीय है कि ये सभी केस एसिमटोमेटिक हैं, क्योंकि जिन विद्यार्थियों तथा अध्यापकों का तापमान अधिक होता है, उन्हें तो स्कूल

में प्रवेश ही नहीं दिया जाता। विभाग किसी भी ऐसी स्थिति से निपटने के लिए सतत प्रयास कर रहा है। स्कूलों को समुचित मात्रा में बजट उपलब्ध करवाया गया है तथा ये स्पष्ट दिशानिर्देश दिए गए हैं कि किसी भी अवस्था में कोई भी लापरवाही न की जाए।

हाल ही में अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव पर एक सर्वे करवाया गया

जिसके अनुसार कोविड-19 के आरम्भ में ऑनलाइन शिक्षा पर पूरा जोर दिया गया, परन्तु हाल ही में माता-पिता भी मानने लगे हैं कि ऑनलाइन शिक्षा का लाभ नहीं हो रहा है क्योंकि अधिकांश बच्चों की पहुँच से ऑनलाइन शिक्षा दूर है। सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे विद्यार्थियों के पास इंटरनेट और हार्डवेयर नहीं है, अध्यापकों द्वारा इसे अनुपयुक्त माना गया है, क्योंकि इससे विद्यार्थी का मूल्यांकन संभव नहीं है। इस संदर्भ में विभाग द्वारा जब सितम्बर मास में अभिभावकों से सर्वे करवाया गया था तो 85 प्रतिशत अभिभावकों का मानना था कि यदि स्कूलों में अच्छे से सामाजिक दूरी का पालन करवाते हुए शिक्षा दी जाती है तो बच्चों को स्कूल भेजना ही अच्छा विकल्प है।

शिक्षा विभाग एसओपी का कड़ाई से पालन कर रहा है। बच्चों का नियमित तापमान जाँचा जा रहा है, सामाजिक दूरी का पालन करवाया जा रहा है, अधिक से अधिक प्रशिक्षण दिया जा रहा है तथा माता-पिता से सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त किया जा रहा है। इसके साथ-साथ विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्य स्कूल के साथ मिलकर स्कूल वातावरण को संक्रमण मुक्त तथा पढ़ाई युक्त बनाने का प्रयास कर रहे हैं। यह समय घबराने का नहीं अपितु सावधान होने का है। जरा सी लापरवाही बड़ा रूप धारण न करे, इसके लिए स्वास्थ्य विभाग अपनी निर्बाध सेवायें स्कूल शिक्षा विभाग को उपलब्ध करवा रहा है। प्रत्येक जिले में स्वास्थ्य शिक्षा विभाग द्वारा एक नोडल अधिकारी बनाया गया है जो स्कूलों द्वारा माँगी गई किसी भी प्रकार की सहायता के लिए हर समय उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त विभाग की एसओपी के अनुसार स्कूलों में हर रोज बच्चों का तापमान जाँचा जाता है। उसके अनुसार ही जिन विद्यार्थियों का तापमान सामान्य पाया जाता है उन्हें ही स्कूल में आने की अनुमति प्रदान की जाती है। जिन विद्यार्थियों का तापमान सामान्य से अधिक आता है उनका ब्यौरा तुरन्त स्वास्थ्य विभाग को दिया जाता है और स्वास्थ्य विभाग उनके टैस्ट करता है। यदि 18 नवंबर का उल्लेख करें तो पूरे राज्य में 315 विद्यार्थियों और 53 अध्यापकों का तापमान सामान्य से अधिक पाया गया। स्कूल खुलने से पहले सभी अध्यापकों का कोरोना टैस्ट सफलतापूर्वक सम्पन्न किया गया अब फिर से कोविड की त्रासदी में शिक्षा को जारी रखने के लिए स्कूल शिक्षा विभाग और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

कक्षा दसवीं और बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं का आयोजन मार्च के पहले अथवा दूसरे सप्ताह में किया जाता है। यदि इसका अवलोकन किया जाए तो विद्यार्थियों के पास आज केवल 80 कार्य दिवस (नवम्बर-8, दिसम्बर-24, जनवरी-24, फरवरी-24) हैं जो इस शैक्षणिक वर्ष में बकाया हैं तथा इन सीमित कार्य दिवसों में ही उन्हें सतत, समग्र मूल्यांकन, प्रयोगशाला के प्रयोग, विभिन्न प्रोजैक्ट वर्क, प्री बोर्ड परीक्षा, बोर्ड परीक्षा की तैयारी तथा अन्य कार्य करने हैं। इसके साथ-साथ पाठ्यक्रम भी पूरा करना है, हालांकि विद्यार्थियों को राहत देने के लिए 30 प्रतिशत पाठ्यक्रम कम किया गया है परन्तु यह काफी नहीं है। इसी कारण ही अध्यापक, अभिभावक और विद्यार्थियों के लिए बहुत कठिन दौर है परन्तु अध्यापक और विद्यार्थी न कभी हारे हैं, न हारेंगे। गुरु-शिष्य की जोड़ी को कोविड-19 की त्रासदी तो क्या बड़ी से बड़ी आपदा भी नहीं हरा सकती। आज सभी माता-पिता इस आस में बैठे हैं कि उनके सान्निध्य में रहकर, स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए विद्यार्थी इन 80 दिनों में तन-मन से जुटकर अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेंगे।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

स्कूल खोलने के मार्ग में आएँगी अनेक चुनौतियाँ

सजगता से मिलेगी सफलता

अरुण कुमार कैहरबा

कोरोना महामारी से त्रस्त और लंबे समय से बंद रहे विद्यालय एक बार फिर करवट ले रहे हैं। विद्यार्थियों की पदचाप और आवाज से वीरान पड़े स्कूलों में रौनक लौटने लगी है। लेकिन अभी कोरोना का साया और दहशत साफ देखी जा सकती है। अनिवार्य रूप से कोरोना के संक्रमण से बच्चों को बचाने के लिए विशेष एहतियात बरती जाए। विभाग द्वारा स्कूलों को खोलने के लिए दिशा-निर्देश दिए गए हैं और कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों की कक्षाएँ शुरू कर दी गई हैं।

कोरोना महामारी 21वीं सदी की एक भयानक त्रासदी साबित हुई है। किसी को अनुमान भी नहीं था कि किसी एक स्थान पर पैदा हुआ वायरस ऐसी भयानक तबाही ला देगा। लेकिन दिसंबर 2019 में चीन के वुहान में दिखाई दिया वायरस देखते ही देखते दुनिया भर में न केवल फैल गया बल्कि इसने व्यापक रूप से लोगों को अपनी चपेट में भी ले लिया। लाखों लोगों की जान चली गई। वायरस के संक्रमण से प्रभावित हुए लोगों की संख्या करोड़ों में है।

मार्च महीने में कोविड-19 से बचाव के लिए देशभर में लॉकडाउन लगाया गया था। विभिन्न चरणों में लगाए गए लॉकडाउन और वायरस से सभी क्षेत्र बुरी तरह से प्रभावित हुए। लेकिन शिक्षा का क्षेत्र एकबारगी तो पूरी तरह चरमरा गया। बच्चे व युवा किसी भी देश की सबसे बड़ी पूँजी हैं और भविष्य उन्हीं पर निर्भर करता है। ऐसे में उन्हें कोरोना के प्रभाव से बचाने के लिए स्कूल, कॉलेज व विश्वविद्यालय सभी बंद करने पड़े। यह बहुत बड़ा आघात था, लेकिन इन परिस्थितियों में और कोई विकल्प भी तो नहीं था। बिना मिले-जुले और संपर्क में आए शिक्षा की प्रक्रिया से विद्यार्थियों को जोड़े रखने का विकल्प था-ऑनलाइन शिक्षा। सरकार व शिक्षा विभाग ने घर से ही सीखने के ऑनलाइन माध्यमों पर जोर दिया। विद्यार्थियों को व्हाट्सएप समूहों से जोड़ने का कार्य किया गया। उनके लिए अध्ययन सामग्री निर्मित करके भेजी गई। अध्यापकों ने अपने स्तर पर भी शानदार प्रदर्शन करते हुए विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा प्रदान की। इससे विद्यार्थी लाभान्वित हुए। लेकिन बड़ी संख्या में ऐसे भी विद्यार्थी हैं, जिनके पास आर्थिक-सामाजिक कारणों से न तो मोबाइल फोन है और न इंटरनेट कनेक्शन। व्हाट्सएप समूहों में भी कई विद्यार्थी एक ही नंबर से जुड़े मिले। परिवार के दो से अधिक विद्यार्थी एक मोबाइल से एक ही समय में कार्य नहीं कर सकते थे। जिससे बहुत से बच्चे शिक्षा की ऑनलाइन धारा से बाहर हो गए। विभाग ने शिक्षामित्र बनाकर क्षतिपूर्ति करने की कोशिश तो की, लेकिन अनेकानेक कारणों से सभी विद्यार्थियों का शिक्षा की नवनिर्मित ऑनलाइन धारा में समावेश नहीं हो पाया है। वंचित समुदायों के विद्यार्थी, विशेष आवश्यकता वाले बच्चे व लड़कियों की शिक्षा बहुत पीछे रह गई है।

अध्ययन करने पर यह भी पाया गया कि मोबाइल के अत्यधिक प्रयोग से बहुत से विद्यार्थियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वैसे तो महामारी ने समाज के हर वर्ग पर ही नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाले हैं, लेकिन बच्चों पर इन परिस्थितियों का सबसे अधिक बुरा असर हुआ है। ऊपर से जिस मोबाइल से आज तक बच्चों को बचाने के संदेश दिए जा रहे थे, एक दम शिक्षा के लिए भी मोबाइल पर निर्भर हो जाना अपनी बातों से मुँह मोड़ना भी था। घर के बड़े लोगों की कामकाज में व्यस्तता और बच्चों का मोबाइल में इंटरनेट के माध्यम से पढ़ना ज्यादा अच्छा विकल्प नहीं है। इसमें बहुत से जोखिम हैं। शैक्षिक मंच से भटक कर किसी अन्य मनोरंजक सामग्री पर जाने की आशंकाएँ हैं। एकाग्रता को बनाए रखना मुश्किल होता है।

स्कूलों के वातावरण में और प्रशिक्षित अध्यापकों के सान्निध्य में पढ़ने का कोई विकल्प नहीं है। इस तरीके में अध्यापक विद्यार्थियों के मनोविज्ञान को समझ कर अपने तौर-तरीकों में बदलाव लाता है। नई सामग्री का प्रयोग करता है। शिक्षण-अधिगम को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास करता है। विराम देता है और जरूरत पड़ने पर विद्यार्थियों से शारीरिक गतिविधियाँ करवाता है। विद्यार्थियों से बात करते हुए यह बात बार-बार उभर कर आई है।

विद्यार्थी ही क्यों अध्यापक भी ऑनलाइन पढ़ा-पढ़ाकर ऊब चुके हैं। आमने-सामने पढ़ने और पढ़ाने का कोई भी विकल्प नहीं हो सकता। जितना जल्दी हो, स्कूल खुलें, अभिभावकों, अध्यापकों, विद्यार्थियों व पूरे समाज से ये भावनाएँ बार-बार सामने आ रही हैं। हालांकि भावनाएँ अपनी जगह हैं और कोविड-19 संक्रमण का खतरा अपनी जगह।

सारी स्थितियों को देखते हुए विभाग ने स्कूल खोलने की शुरुआत कर दी है। नौवीं से 12वीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए स्कूल शुरु हो गए हैं। विद्यार्थियों को मास्क लगाकर और शारीरिक दूरी बरतते हुए स्कूल आने के लिए कहा गया है। स्कूल में आते ही उनका तापमान लिया जा रहा है। हाथ सेनिटाइज करने का प्रबंध किया गया है। कक्षा-कक्ष में विद्यार्थियों को दूर-दूर बिठाया जा रहा है। विद्यार्थियों को एक-दूसरे से सामान का आदान-प्रदान नहीं करने के लिए कहा गया है। दिन में विद्यार्थी तीन घंटे ही स्कूल में रह रहे हैं। इससे पहले मार्गदर्शन लेने के लिए विद्यार्थियों को स्कूल आने की अनुमति दी गई थी। यह सभी विद्यार्थियों के लिए स्कूल खोलने की शुरुआत है।

सभी उम्र के सभी बच्चों के लिए स्कूल खोलना आसान कार्य नहीं है। रास्ते में अनेक प्रकार की चुनौतियाँ मुँह बाए हुए हैं। यदि किसी एक स्थान पर भी नियमों की पालना में कोई ढ़ील बरती गई तो स्कूल खुलने की संभावनाएँ फिर से क्षीण हो सकती हैं। सबसे बड़ी दिक्कत तो विद्यार्थियों की स्कूलों तक आवाजाही की है। बसों या विभिन्न प्रकार के वाहनों के जरिये स्कूल में आने वाले विद्यार्थियों के लिए वाहनों में शारीरिक दूरी की पालना करवाना आसान नहीं है। जिन स्कूलों के पास खुद की बसें हैं, उनमें तो कड़ी मशक्कत करके शायद यह संभव भी हो जाए, लेकिन सार्वजनिक वाहनों से आने-जाने वाले विद्यार्थियों के लिए मुश्किलें कम नहीं होंगी। बहुत बड़ी संख्या में अध्यापक भी जिलों की सीमाएँ पार करके पहुँचते हैं, बसों में नियमों की पालना अपने हाथ में नहीं होती है।

स्कूलों में आते ही विद्यार्थियों का तापमान मापना और उसे दर्ज करना तो किसी तरह से हो जाता है। लेकिन छुट्टी के समय अनुशासन बनाए रखना काफी मुश्किल होता है। ऐसे में बच्चों से शारीरिक दूरी के नियम की पालना करवाना टेढ़ी खीर है। योजनाबद्ध ढ़ंग से फिलहाल बड़े विद्यार्थियों के लिए स्कूल खोले गए हैं। छोटे बच्चों से नियमों की पालना करवाना और भी मुश्किल काम है। समाज को इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। सवाल यह है कि क्या हमारा समाज कोविड नियमों की पालना करता हुआ दिखाई दे रहा है। निगाह डाल कर देखें तो चारों ओर बेपरवाही व घोर उदासीनता का मंजर दिखाई देता है। लॉकडाउन के नियमों में आई ढील के बाद मोबाइल की रिंगटोन में ही नियमों की पालना का संदेश दिया जाता है। बाकी सारे स्थानों पर आवाजाही चल पड़ी है। बड़े-बड़े समारोह आयोजित करने शुरू हो गए हैं। बच्चों को कोविड-19 से उपजी आपदा के प्रति संवेदनशीलता कहीं दिखाई ही नहीं दे रही है तो वे उसका अनुसरण कैसे करेंगे? केवल स्कूल अपने आप में ही इन नियमों की पालना में सफल हो जाएँगे, इसमें संदेह है। यदि अभिभावकों ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण नहीं दिया है तो उनसे सामाजिक दूरी बनवाई ही नहीं जा सकती। जिन स्कूलों में संसाधनों व स्टाफ की कमी है और जिन स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या अधिक है। वहाँ भी नियमों की पालना मुश्किल कार्य है।

ऐसे में व्यापक स्तर पर जागरूकता फैलाए जाने की जरूरत है। कोरोना के कारण व्यक्तिगत व सामुदायिक स्वच्छता के नियमों के प्रति दृढ़ता अत्यावश्यक है। बार-बार साबुन से हाथ धोना स्वच्छता का मूलमंत्र बनकर सामने आया है। इसके लिए सार्वजनिक स्थानों पर उत्सव आयोजित होने चाहियें। सार्वजनिक स्थानों पर साबुन से हाथ धोने की व्यवस्था की जानी चाहिए। ताकि समाज इसकी पालना करे। समुदाय में अधिकाधिक प्रचारित और अमल में लाई जाने वाली चीजों को बच्चे अपने आप अपना लेंगे।

एक बड़ी समस्या मास्क का लंबे समय तक प्रयोग करने की भी है। बाजार में विभिन्न प्रकार के मास्क उपलब्ध हैं। कई मास्क का प्रयोग करना तो बहुत ही असुविधाजनक है। कुछ मास्क कान खींचते हैं। मास्क से काफी देर तक नाक और मुँह को अच्छी तरह से ढ़क कर रखना भी परेशानी देने वाला होता है। कुछ मास्क ऐसे हैं, जोकि केवल एक दो बार ही प्रयोग में लाए जाने चाहिएं। लेकिन परिवारों की आर्थिक स्थितियों के कारण एक ही मास्क का प्रयोग बच्चे कई दिन तक कर सकते हैं। मास्क को बिना धोए इस्तेमाल करते जाने के कारण भी संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है।

विशेषज्ञों की मानें तो यह वायरस पूरी तरह से जाने वाला नहीं है। ऐसे में सतर्कता और सजगता बहुत जरूरी है। बच्चे किसी भी देश का भविष्य हैं। उन्हें किसी भी तरह से जोखिम में नहीं डाला जा सकता। वैसे भी सुरक्षा का नंबर पहला है और शिक्षा का दूसरा। सुरक्षित वातावरण में शिक्षा प्रदान करना स्कूलों की अहम जिम्मेदारी है। बच्चों को वायरस से बचाव के लिए प्रशिक्षित करने के लिए सामुदायिक जागरूकता और कुशलता बहुत जरूरी है। इस मामले में अध्यापकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका बनती है। स्कूलों को खोलने की प्रक्रिया शुरू करते हुए अभिभावकों के जागरूकता शिविर आयोजित होने चाहियें। अध्यापकों को बच्चों को औपचारिक शिक्षा देने वाले विशेषज्ञ के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता व परामर्शदाता की भूमिका निभानी पड़ेगी। जो विद्यार्थी स्कूल में आने लगे हैं, उन्हें सिलेबस करवाने से भी अधिक महत्त्वपूर्ण महामारी की चुनौती से जूझने में सक्षम बनाना है। उम्मीद की जानी चाहिए कि सिलसिलेवार धीरे-धीरे सभी बच्चों के लिए स्कूल खुलने लगेंगे। लेकिन यह काम पूरी सजगता की अपेक्षा करता है।

हिन्दी प्राध्यापक
राजकीय उच्च विद्यालय, करेड़ा खुर्द
खण्ड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर

कोरोना काल में वरदान बनीं 'दीक्षा' और 'निष्ठा'

मनोज कौशिक

आवश्यकता आविष्कार की जननी है, एक बार फिर यह कहावत चरितार्थ होती दिखी। कोरोना काल में टेक्नोलॉजी से अनभिज्ञ एक सामान्य शिक्षक ने कंप्यूटर एवं संचार तकनीक का जिस लगन से प्रयोग किया उससे सभी परिचित हैं। कोविड-19 के इस कठिन समय में जब सम्पूर्ण विश्व महामारी से संघर्ष करते हुए अपने जन जीवन को सामान्य करने का अथक प्रयास कर रहा है, शिक्षा-जगत ने भी, अपने अस्तित्व पर आये इस नए संकट की गंभीरता को समझा है। हमारे शिक्षकों ने टेक्नोलॉजी में अधिक पारंगत न होते हुए भी, हर संभव उपायों से, घर पर उपलब्ध साधनों का छात्रों के हित में बखूबी इस्तेमाल करके यह सिद्ध कर दिया कि दृढ इच्छा शक्ति के बूते कठिन एवं असंभव परिस्थितियों में भी राह स्वतः निकल आती है।

ऑनलाइन पठन पाठन का इतना अधिक प्रयोग विगत कई दशकों में संभवतः कभी देखने को नहीं मिला। इस दौर में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित दीक्षा योजना एक वरदान बनाकर उभरी। इस वर्ष लॉकडाउन के समय इस डिजिटल माध्यम ने हरियाणा ही नहीं, अपितु देश भर में शिक्षकों को न केवल मानक एवं गुणवत्तापूर्ण विषय सामग्री देने का सफल प्रयास किया बल्कि ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के जरिये उनका सशक्तिकरण भी किया, जो अब तक अनवरत रूप से जारी है।

दीक्षा (DIKSHA): -डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर नॉलेज शेयरिंग), एक ऐसा नेशनल डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर है जिसका उपयोग राज्य अपने संबंधित शिक्षक और छात्र केंद्रित पहल के लिए कर सकते हैं। यह शिक्षकों और छात्रों को सभी भारतीय भाषाओं में सभी विषयों और स्तरों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षण, सीखने और आकलन संसाधनों तक पहुँचने और निर्मित करने में सक्षम बनाता है। दीक्षा-हरियाणा का उद्देश्य शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के द्वारा शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है, जिसमें डिजिटल शिक्षण,अधिगम एवं प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। यह शिक्षकों और छात्रों के लिए राज्य में सीखने के परिणामों (लर्निंग आउटकम्स) की गुणवत्ता और वितरण को मजबूत करने के लिए एक व्यापक ऑनलाइन मंच है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में, दीक्षा- हरियाणा को राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एससीईआरटी), हरियाणा द्वारा अतिरिक्त मुख्य सचिव, हरियाणा सरकार की अध्यक्षता में लॉन्च किया गया है।

शिक्षक क्षमता संवर्धन में भारत सरकार की एक और महत्त्वपूर्ण पहल निष्ठा से हम अब अपरिचित नहीं हैं। गत अकादमिक सत्र 2019-20 में एनसीईआरटी के सहयोग से संचालित निष्ठा कार्यक्रम के द्वारा राज्य के 65000 से अधिक शिक्षकों को प्रत्यक्ष रूप में राज्य, जिले एवं खंड स्तर की प्रशिक्षण कार्यशालाओं के माध्यम से प्रशिक्षित किया गया।

निष्ठा (NISHTHA): नेशनल इनिशिएटिव फॉर स्कूल हेड्स एंड टीचर्स होलिस्टिक एडवांसमेंट एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण के माध्यम से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक क्षमता निर्माण कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य प्रारंभिक स्तर पर सभी शिक्षकों और स्कूल प्रिंसिपलों के बीच दक्षता का निर्माण करना है। पदाधिकारियों (राज्य, जिला, ब्लॉक, क्लस्टर स्तर पर) को सीखने के परिणामों, स्कूल आधारित मूल्यांकन, शिक्षार्थी- केंद्रित शिक्षाशास्त्र, शिक्षा में नई पहल, कई शिक्षाओं के माध्यम से बच्चों की विविध आवश्यकताओं को संबोधित करने आदि पर एकीकृत तरीके से प्रशिक्षित किया जाता है। यह राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर राष्ट्रीय

संसाधन समूह (एनआरजी) और राज्य संसाधन समूह (एसआरजी) का गठन करके आयोजित किया जा रहा है, जो बाद में 42 लाख शिक्षकों को प्रशिक्षित करेगा। इस क्षमता निर्माण पहल के साथ प्रशिक्षण, निगरानी और सहायता तंत्र की डिलीवरी के लिए एक मजबूत पोर्टल / प्रबंधन सूचना प्रणाली (एमआईएस) का उपयोग किया गया है। कोविड-19 महामारी की स्थिति को ध्यान में रखते हुए, अब ऑनलाइन मोड में एसआरजी और शिक्षक प्रशिक्षण आयोजित करने की योजना बनाई गई है।

निष्ठा से मुख्य अपेक्षित परिणाम हैं-

छात्रों के सीखने के परिणामों में सुधार।

समावेशी कक्षा के माहौल को सक्षम और समृद्ध बनाना ।

शिक्षक काउंसलर के रूप में छात्रों की सामाजिक, भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के प्रति सतर्क और उत्तरदायी बनते हैं ।

शिक्षकों को कला का उपयोग करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है ताकि छात्रों में रचनात्मकता और नवीनता बढ़े।

शिक्षकों को उनके समग्र विकास के लिए छात्रों के व्यक्तिगत-सामाजिक गुणों को विकसित करने और मजबूत करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

स्वस्थ और सुरक्षित स्कूल वातावरण का निर्माण।

शिक्षण और मूल्यांकन में आईसीटी का एकीकरण।

स्ट्रेस फ्री स्कूल डेवलपिंग असेसमेंट का विकास।

शिक्षक एक्टिविटी बेस्ड लर्निंग को अपनाते हैं और रॉट लर्निंग से योग्यता आधारित लर्निंग की ओर बढ़ते हैं।

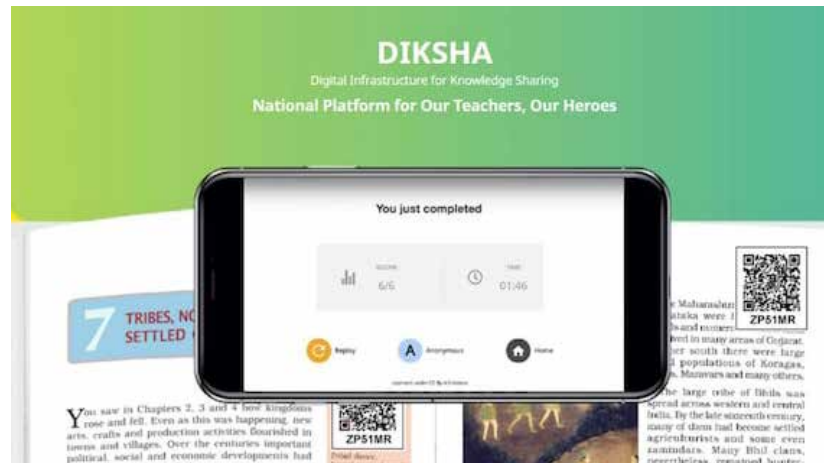

शिक्षक और स्कूल प्रमुख स्कूली शिक्षा में नई पहल के बारे में जानते हैं।

नई पहल को बढ़ावा देने के लिए स्कूलों के लिए शैक्षिक और प्रशासनिक नेतृत्व प्रदान करने में स्कूलों के प्रमुखों का परिवर्तन।

निष्ठा कोर्सेज का दीक्षा पोर्टल हरियाणा पर शुभारम्भ दिनांक 16 अक्टूबर, 2020 से हुआ। एनसीईआरटी के दिशानिर्देशों के अनुसार राज्य में कक्षा 1-8 के सभी शिक्षकों और मेंटोर्स के लिए 18 कोर्सेज को छह चरणों में, ऑनलाइन मोड में कराये जाने की योजना का एससीईआरटी द्वारा क्रियान्वयन प्रारंभ हो चुका है । प्रत्येक चरण में तीन कोर्सेज को प्रभावी रूप से शिक्षकों तक पहुँचाने के लिए राज्य, जिला और खंड स्तर पर अकादमिक व तकनीकी समितियों का गठन एससीईआरटी की देखरेख में किया गया है। इसके अतिरिक्त 15 दिनों के लिए एक समय सारणी भी उपलब्ध कराई गयी है जिसका प्रारूप इस प्रकार है-

प्रथम 5 दिन सभी मेंटोर्स द्वारा तीनों कोर्सेज का पूर्ण किया जाना।

तीनों कोर्सेज में राज्य के निर्धारित क्रम अनुसार ज्वाइन व पूर्ण कराना।

प्रथम 10 दिनों में सभी तीन कोर्सेज में प्रतिभागियों का ज्वाइन व पंजीकरण सुनिश्चित करना।

अंतिम 4 दिनों में से पहले दिन एससीईआरटी टीम द्वारा कोर्सेज की विषयवस्तु पर जिले की अकादमिक टीम का उन्मुखीकरण, तत्पश्चात शेष तीन दिनों में डाइट टीम द्वारा शिक्षक समूहों से, विषयवस्तु की धरातल पर उपयोगिता पर चर्चा कराना।

सभी प्रतिभागियों से ऑनलाइन फॉर्म द्वारा कोर्सेज की प्रगति एवं प्रतिपुष्टि को प्रत्येक चरण में तीन बार सुनिश्चित करना।

प्रतिभागी शिक्षकों के उत्साह, मेंटोर्स के सहयोग, राज्य शिक्षा विभाग के निर्देशन और उपरोक्त सुव्यवस्थित क्रियान्वयन योजना के साथ वर्तमान में हरियाणा राज्य का यह कार्यक्रम, राष्ट्रीय मंचों पर सराहा गया है और इसकी गिनती अग्रणी राज्यों में की जा रही है। इन दोनों अति उपयोगी पहलों के परिप्रेक्ष्य में यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि दीक्षा पर निष्ठा सोने पर सुहागा ही है। दीक्षा पोर्टल के माध्यम से अध्यापकों को ऑनलाइन तरीकों से दी जाने वाली निष्ठा की उच्च स्तरीय सामग्री न केवल उन्हें इन बदली हुई परिस्थितियों में एक नए भविष्य के लिए तैयार कर रही है बल्कि डिजिटल संसाधनों के उपयोग में उन्हें सिद्धहस्त करते हुए उनके आत्मविश्वास को एक नए स्तर पर ले जा रही है।

विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी, गुरुग्राम, हरियाणा

अब योग होगा हर विद्यार्थी की दिनचर्या में शामिल : मुख्यमंत्री

डॉ. प्रदीप राठौर

अब योग हर विद्यार्थी की दिनचर्या में शामिल होगा। इसके लिए एक चरणबद्ध कार्यक्रम बनाया गया है। इस कार्यक्रम को लागू करने से पूर्व हर विद्यालय से एक-एक शिक्षक को विधिवत् प्रशिक्षित किया जाएगा ताकि प्रातः प्रातकालीन सभाओं में योग का समावेश जा सके। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन चरणों में 6,000 स्कूलों में चलाया जाएगा। यह विचार मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल ने हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद व हरियाणा योग परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रदेश के अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन करते समय व्यक्त किये। इस 7 दिवसीय प्रशिक्षण के उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल वेबेक्स के जरिये पानीपत से जुड़े, जबकि शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल यमुनानगर से, विधानसभा अध्यक्ष श्री ज्ञान चंद गुप्ता पंचकूला से, विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह व राज्य परियोजना निदेशक डॉ. रजनीश गर्ग मुख्यमंत्री निवास चंडीगढ़ से जुड़े।

मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा है कि प्रदेश के स्कूलों में योग शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 1,000 आयुष सहायकों के पदों की स्वीकृति दी गई है। इसके अलावा प्रदेश में अब तक 560 व्यायाम-शालाएँ स्थापित की गई हैं तथा 600 और स्थापित की जाएँगी।

इससे पूर्व हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद के निदेशक डॉ. रजनीश गर्ग ने माननीय मुख्यमंत्री तथा अन्य गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा से सभी को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि परिषद के द्वारा गत दो वर्षों से छठी से बारहवीं के विद्यार्थियों की योग-प्रतियोगिताएँ कराई जाती रही हैं, लेकिन विद्यालयों में प्रशिक्षित योग अध्यापकों की कमी खल रही थी। इसलिए प्रत्येक विद्यालय से एक अध्यापक को योग का प्रशिक्षण देने का कार्यक्रम बनाया गया है। उन्होंने बताया कि अध्यापकों के लिए यह प्रशिक्षण शिविर एक सप्ताह का होगा, जिसमें पहले चरण में 2200 अध्यापकों को योग में प्रशिक्षित किया जाएगा।

विद्यालय शिक्षा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने बताया कि विभाग हर विद्यार्थी को

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए तो सदैव प्रयत्नशील है ही, साथ ही उनके सर्वांगीण विकास के लिए खेल, रोमांचक गतिविधियों को भी बढ़ावा देता रहा है। अब इस शृंखला में एक और कड़ी जुड़ रही है। तीन चरणों में चल रहे प्रशिक्षण कार्यक्रम से प्रशिक्षित होकर जाने वाले अध्यापक अपने-अपने विद्यालयों के विद्यार्थियों को नियमित रूप से योग कराएँगे। उन्होंने बताया कि हरियाणा देश का पहला राज्य बन गया है जिसने विद्यार्थियों की दिनचर्या में योग शिक्षा को समायोजित किया है।

कार्यक्रम में मुख्यमंत्री महोदय के जुड़ने से पूर्व संबंधित जिलों के उपायुक्तों व अन्य प्रशासनिक अधिकारियों ने भी जिला स्तरीय कार्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित किया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों का उत्साह देखते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसा लगता है कि आज ही 21 जून, योग दिवस आ गया हो। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि कोरोना काल में योग साधना, व्यायाम साधना, प्राणायाम बहुत लाभदायक रहे हैं।

उन्होंने कहा कि योग से कर्म में कुशलता आती है। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हर व्यक्ति के जीवन में योग का महत्त्व बढ़ाया जाए। अष्टयोग विद्या मन, आत्मा और शरीर को जोड़कर जो क्रिया-प्रतिक्रिया देती है, उसे योग साधना कहा गया है। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने योग को मान्यता दी है और आज विश्व के 200 देश योग को अपना रहे हैं। यही कारण है कि योग आज विश्व विख्यात हो चुका है।

संयम, सहनशीलता योग से ही संभव-

मुख्यमंत्री ने कहा कि योग मनुष्य को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रखने में सहायक है। प्राचीनकाल में गुरुकुल में जब शिक्षा प्रदान की जाती थी तो शिक्षक और बच्चे हर तरह से योग में पारंगत होते थे और इसे आगे बढ़ाते थे। योग के माध्यम से ही जीवन के तनाव और चिंताओं से पार पाया जा सकता है क्योंकि संयम, सहनशीलता योग के कारण ही सम्भव है। उन्होंने कहा कि योग से संबंधित प्रतियोगिताएँ खंड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक आयोजित की जाएँगी। योग से कर्म में कुशलता आती है और मन स्थिर होता है। योग करने वाले को योगी भी कहा गया है। अब समय आ गया है कि हर व्यक्ति योगी बने और इस साधना को आगे बढ़ाए।

योग भारत की पहचान रहा-

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में यमुनानगर से जुड़े शिक्षा मंत्री कँवरपाल गुर्जर ने कहा कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन और आत्मा निवास करते हैं। योग भारत की पहचान रहा है। पूरे विश्व में योग को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बाबा रामदेव का आभार प्रकट करते हुए कहा कि उन्होंने योग को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है। उन्होंने मुख्यमंत्री का योग शिक्षा के बारे में व्यक्तिगत रूप से रुचि लेने पर धन्यवाद भी किया। उन्होंने कहा कि बच्चों को चरित्रवान बनाने के लिए योग जरूरी है।

पंचकूला से जुड़े विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए सभी अध्यापकों के साथ शिक्षा विभाग के अधिकारियों और प्रदेश सरकार का धन्यवाद किया और कहा कि योग के प्रचार-प्रसार के लिए यह आयोजन बहुत अच्छा है। हरियाणा योग परिषद के चेयरमैन डॉ.जयदीप आर्य ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा जिस तरह से योग को बढ़ाने के लिये योग परिषद का गठन किया गया है, उससे योग विधा को बल मिला है और इससे नये आयाम स्थापित होंगे।

मुख्यमंत्री महोदय ने हिसार के योग प्रशिक्षक मुकेश से, पंचकूला के योग प्रशिक्षार्थी श्री शमशेर व झज्जर जिले के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जसौरखेड़ी की छात्रा सोनिया से भी बात की। कार्यक्रम का संचालन मुख्यमंत्री निवास चंडीगढ़ से प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

हरियाणा राज्य प्रशिक्षण नीति-2020 मानव संसाधन क्षमता संवर्धन का अनूठा कार्यक्रम

हरियाणा सरकार ने अपने मानव संसाधन की क्षमता के निर्माण की चुनौतियों का सामना करने के लिए हरियाणा राज्य प्रशिक्षण नीति- 2020 का सूत्रपात किया है, ताकि वे बेहतर तरीके से अपने कार्यों का निष्पादन करने के साथ-साथ मानवता की सेवा भी कर सकें।

नीति एक नज़र में-

वास्तव में, राष्ट्रीय प्रशिक्षण नीति को पहली बार 1996 के वर्ष में अधिसूचित किया गया था और 2012 में फिर से मानव संसाधन विकसित करने की दृष्टि के साथ संशोधित किया गया था। इसलिए, हरियाणा राज्य प्रशिक्षण नीति एक स्पष्ट व औपचारिक रूपरेखा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए तैयार की गई है जिस के तहत राज्य भर में 'कर्मचारियों की प्रशिक्षण सम्बन्धी आवश्यकताओं' के अनुसार प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है।

नीति दस्तावेज़ की प्रस्तावना में कहा गया है कि सभी स्तरों पर मानव संसाधन की दक्षता, अखंडता और कौशल का एक उच्च स्तर प्राप्त करना व राज्य को अधिक ऊँचाइयों पर ले जाना राज्य का प्रमुख उद्देश्य है। मानव संसाधन के विकास का अर्थ है कार्य बल का अधिक विकास करना जिसमें निम्न शामिल हैं- 1.उत्तरदायी होना 2.प्रतिबद्धहोना 3.रिजल्ट ओरिएंटेड होना 4.पारदर्शी होना 5.जवाबदेह होना 6.ओरिएंटेशन में बदलाव।

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मुख्य जोर नैतिक मूल्यों, सकारात्मक दृष्टिकोण, कार्य के प्रति प्रतिबद्धता और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति सहानुभूति के विकास पर आधारित होना चाहिए।

नीति में कर्मचारियों के सरकारी सेवा में कार्यग्रहण करने से पहले और कार्यग्रहण के बाद या फिर पदोन्नति के समय कठोर ट्रेनिंग पर बहुत जोर दिया गया है, अतः 'सबका प्रशिक्षण' (ट्रेनिंग टू ऑल) पॉलिसी की टैग-लाइन प्रतीत होती है। अर्थात वर्तमान प्रशिक्षण नीति ने इंडक्शन ट्रेनिंग और प्रमोशन के समय भी सभी कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया है। इतना ही नहीं कर्मचारियों के लिए सेवा के दौरान 50 घंटे प्रतिवर्ष के हिसाब से 'सतत व्यावसायिक विकास' के अलावा 5 दिनों के लिए प्रतिवर्ष रिफ्रेशर प्रशिक्षण का भी प्रावधान है। इस आशय हेतु शिक्षा विभाग ने राज्य भर में अग्रणी रहते हुए तुरंत प्रभाव से 'प्रशिक्षण योजना व निगरानी प्रकोष्ठ' का गठन किया, जिसने सभी वर्गों के एक लाख से अधिक कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता के विश्लेषण के आधार पर प्रशिक्षणों के आयोजन हेतु 'हरियाणा लोक प्रशासन संस्थान' (हिपा) व राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एससीईआरटी) को प्रशिक्षण की आवश्यकताओं, वर्गानुसार प्रशिक्षणों के आयोजन हेतु समय व स्थान हेतु सुझाव व विभाग के भीतर कार्यरत ऐसे कर्मचारियों की सूचियाँ प्रेषित कर दी हैं जो बाकि कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु बतौर मुख्य-प्रशिक्षक कार्य करने के इच्छुक हैं। प्रशिक्षकों के साथ-साथ विभाग के बाहर से विख्यात शिक्षाविदों व अन्य संसाधन व्यक्तियों का भी एक पैनल तैयार किया जा रहा है, जो कर्मचारियों के क्षमता संवर्धन हेतु सुझाव व प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इसके अतिरिक्त विभाग द्वारा एक 'वार्षिक प्रशिक्षण कार्यक्रम' भी तैयार किया जा रहा है जो फिर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान करने का समय, स्थान व कर्मचारियों की संख्या आदि दर्शाएगा ताकि पूरा प्रशिक्षण कार्यक्रम सुनियोजित ढंग से व तय समयानुसार संचालित हो सके।

प्रशिक्षणों को मुख्यतः इन श्रेणियों में विभक्त किया गया है- **क**. फाउंडेशन ट्रेनिंग, **ख**. प्रमोशन पर ट्रेनिंग, **ग**. रिफ्रेशर ट्रेनिंग, **घ**.ट्रांसफर उपरान्त ट्रेनिंग

उक्त सभी कार्यों को अमलीजामा पहनाने हेतु माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, मौलिक शिक्षा निदेशालय, समग्र शिक्षा, एससीईआरटी में प्रशिक्षण समन्वय को नामित किया गया है।

विभाग, कर्मचारियों द्वारा लिए गए सभी प्रशिक्षणों के एचआरएमएस पोर्टल पर रिकॉर्ड रखेगा और कर्मचारियों द्वारा उनके 'ऐन्युअल अप्रैज़ल परफोर्मेंस रिपोर्ट' में उनके द्वारा लिए गए प्रशिक्षणों को उचित महत्त्व देने का प्रयास करेगा।

प्रशिक्षण में शामिल अधिकारियों को अन्य राज्यों की सर्वोत्तम संस्थाओं व सर्वोत्तम माध्यमों से सीखने के साथ ही अपनी क्षमता निर्माण के लिए विदेशी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए भी पर्याप्त अवसर दिए जाएँगे। राज्य व जिला स्तर पर प्रशिक्षण को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु पर्याप्त वित्त का प्रावधान किया गया है।

अतः अब राज्य सरकार व विभाग ने अपने कर्मचारियों का पर्याप्त क्षमता संवर्धन करते हुए राज्य को एक आदर्श व प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी राज्य साबित करने हेतु कमर कस ली है।

डॉ. अजय बलहरा
मुख्य संयोजक (प्रशिक्षण)-सह-प्रभारी
प्रशिक्षण योजना व निगरानी प्रकोष्ठ

अपने वेतन से खरीद कर जरूरमंद बच्चों को बाँटे स्मार्ट फोन

ऑनलाइन कक्षा में पढ़ने के लिए पन्द्रह वर्षीय रानी के लिए केवल एक ही विकल्प था, वह यह कि किसी पड़ोसी का मोबाइल कुछ देर के लिए माँग कर लाती। रानी के घर की आर्थिक दशा ऐसी नहीं कि स्मार्ट फोन खरीद पाए। कुछ वर्ष पूर्व उसने अपने पिता को खो दिया था। अब माँ की कमाई से ही घर का खर्च चलता है। यह कमाई भी बस इतनी ही है कि दो जून की रोटी मुश्किल से नसीब होती है। लेकिन अब बात कुछ ऐसी हुई कि रानी के चेहरे पर भी प्रसन्नता के भाव हैं। अब उसके पास भी स्मार्ट फोन है। फरीदाबाद की जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी रीतू चौधरी की एक शानदार पहल ने उसके सपने को साकार कर दिया है। यहाँ एक मोबाइल बैंक बनाया गया है, जहाँ उन बच्चों को

निःशुल्क मोबाइल फोन उपलब्ध कराया जाता है, जो इसे खरीदने की आर्थिक क्षमता नहीं रखते। पहले चरण में 20 विद्यार्थियों को मोबाइल फोन बाँटे जा चुके हैं, शीघ्र ही 120 विद्यार्थियों को मोबाइल फोन देने की तैयारी की जा रही है।

श्रीमती चौधरी ने बताया कि कोरोना काल में कुछ विद्यार्थियों के पास मोबाइल फोन का न होना उनके शिक्षण को बाधित कर रहा था। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उनके मन में 'मोबाइल बैंक' स्थापित करने का विचार आया। कुछ अध्यापकों व गैर-सरकारी संगठनों से जब बात की तो उन्होंने भी सहयोग देने की बात की। पहले चरण में 20 जरूरतमंदों को मोबाइल फोन दिए जा चुके हैं। ये सारे फोन उन्होंने स्वयं अपनी धनराशि से खरीदे हैं। उन्होंने बताया कि वे अपने 'मोबाइल बैंक' में नये व पुराने दोनों प्रकार के मोबाइल फोन स्वीकार कर रही हैं। बड़ी संख्या में अध्यापक व दानी सज्जन बैंक के लिए मोबाइल फोन दान में दे रहे हैं। श्रीमती चौधरी के इस प्रयास की चहुँ ओर प्रशंसा हो रही है।

- शिक्षासारथी डेस्क

क्यूआर कोडिड चार्टों से मिलेगी विद्यार्थियों को विशेष जानकारी

अगर चार्ट में क्यूआर कोड लगा दिये जायें, तो जाहिर सी बात है कि यह और भी ज्ञानवर्धक बन जाएगा। ऐसा सोचकर ही राजकीय विद्यालय बजघेड़ा के मौलिक मुख्याध्यापक मनोज कुमार लाकड़ा के निर्देशन में उनके विद्यार्थियों ने एक अनूठा प्रयोग किया।

अध्यापक के मार्गदर्शन में कक्षा बारहवीं के छात्र हिमांशु ने विशेष क्यू-आर कोडिड चार्टों का निर्माण किया है जिनमें भारतीय प्रधानमंत्री, भारतीय राष्ट्रपति, हरियाणा के मुख्यमंत्री, हरियाणा के महान खिलाड़ी, भारतीय महान वैज्ञानिक, भारतीय नदियाँ, मानव तंत्र, फलदार पेड़, भारत का नक्शा, हरियाणा का नक्शा, कक्षा छठी से कक्षा दसवीं तक की सभी पाठ्यपुस्तकें कक्षावार क्यूआर कोडिड चार्ट बनाए हैं जिन्हें बच्चे मोबाइल फोन द्वारा क्यूआर को स्कैनर ऐप की सहायता से स्कैन कर इनके विषय में तुरंत व विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। विशेष रूप में भारत का नक्शा बनाया गया है जिसमें सभी राज्यों व केंद्र शासित प्रदेशों के क्यूआर कोड हैं, ऐसा ही एक हरियाणा का नक्शा है जिसमें सभी जिलों के क्यूआर कोड निर्धारित स्थान पर लगाये गए हैं। ये क्यूआर कोडिड नक्शे बड़े ही आकर्षक बने है। इन क्यूआर कोडिड चार्टों को विद्यालय की हर कक्षा में लगाया गया हैं ।

गौरतलब है कि अध्यापक को अपने शिक्षण कार्य को रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए कई प्रकार के संसाधनों का प्रयोग करना पड़ता है और वही संसाधन अधिक उपयोगी होते हैं जो छात्रों को सीखने के लिए अधिक अनुभव प्रदान करें। अध्यापक इसके लिए बच्चों की रुचि के हिसाब से शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करता है जो बच्चों की ज्ञानेन्द्रियों, आँख, और कान को अधिक सक्रिय बनाकर उनके लिए विशेष सामग्री को अधिक सुबोध, रोचक व प्रभावशाली बनाता है। इसी कड़ी में जिले के रावमा विद्यालय बजघेड़ा में क्यूआर कोडिड चार्ट कक्षाओं की दीवारों पर लगाए गए हैं। इन सभी चार्टों में फोटो सहित क्यूआर कोड भी लगाए गए हैं जिनमें फोटो से सम्बन्धित हर प्रकार की जानकारियाँ अब विद्यार्थी क्यू-आर कोड ले सकेंगे। इन विशेष क्यूआर कोड या बारकोड से विद्यार्थी व अध्यापक अपने स्मार्ट मोबाइल फोन का उपयोग करके अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता मौलिक मुख्याध्यापक मनोज कुमार लाकड़ा हर समय पढ़ाई में विज्ञान व आईसीटी क्षेत्र में नए नए नवाचार करते रहते हैं। उनकी प्रेरणा से विद्यालय की कक्षा बारहवीं के छात्र हिमांशु ने यह कार्य किया है। हिमांशु ने बताया कि उनके अध्यापक ने क्यूआर कोड को कैसे जनरेट करते हैं, सिखाया था। उसी से प्रेरित होकर उसने पिछले वर्ष एनसीईआरटी की कक्षा पहली से दसवीं तक की सभी पुस्तकों तथा हिंदी व्याकरण पुस्तक को क्यूआर कोड का 130 पुस्तकों का प्रियोडिक टेबल बनाया था। इसके साथ-साथ विद्यालय के हर पेड़-पौधों की विशिष्ट जानकारियों के क्यूआर कोड बनाकर हर पेड़ पर लगाए थे।

-शिक्षासारथी डेस्क

'दिवास्वप्न' के आलोक में वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य

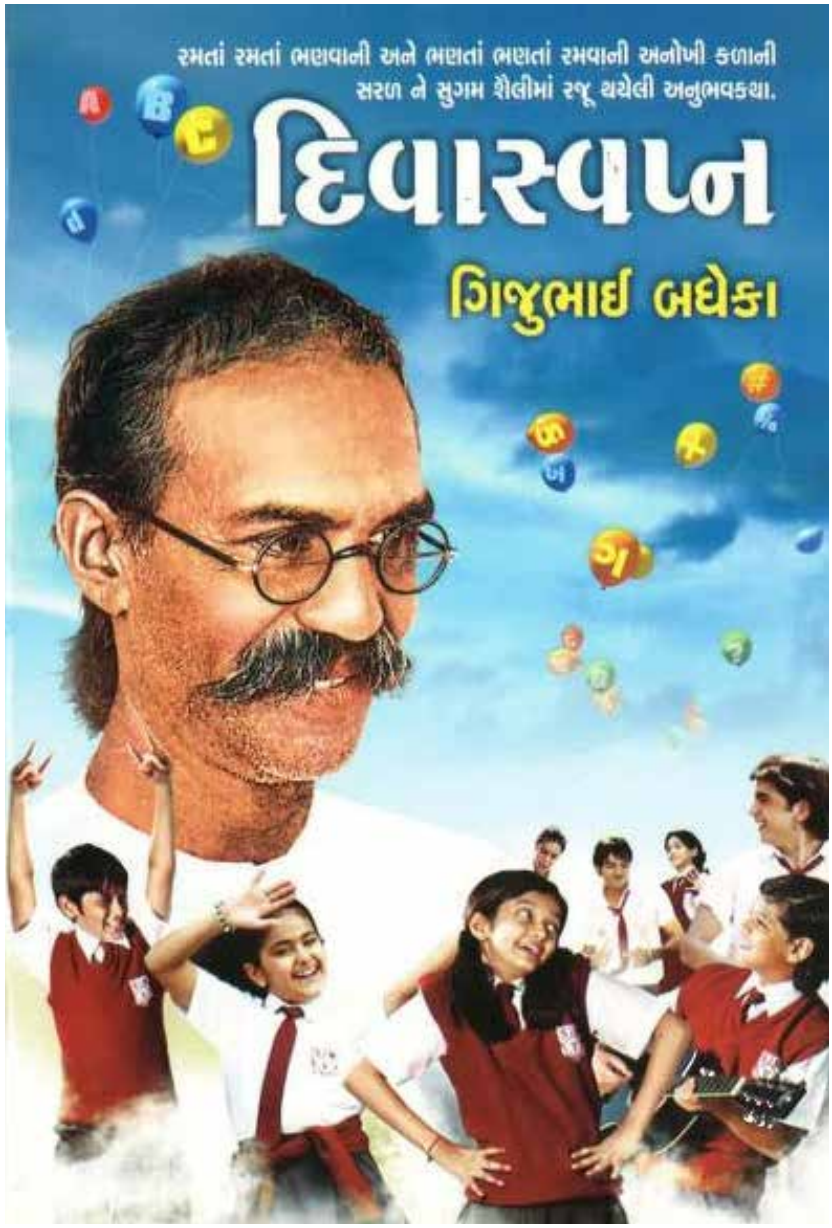

प्रमोद दीक्षित 'मलय'

गत शताब्दी के प्रारंभ में देश के राजनीतिक फलक पर एक युगांतरकारी घटना हुई जिसने देश-दुनिया को प्रभावित किया। वह वह घटना थी, जनवरी 1915 में महात्मा गांधी की दक्षिण अफ्रीका से भारत वापसी। गांधी जी के साथ ही एक व्यक्ति, गिजुभाई बधेका, भी भारत आए हैं जो अफ्रीका में गांधी जी के साथ आश्रम में रहते हुए वकालत के काम में सहयोग करते थे। भारत आने के बाद महात्मा गांधी देश की राजनीति और सामाजिक-सांस्कृतिक ताने-बाने को समझने के लिए यात्राओं पर निकले। गिजुभाई की रुचि राजनीति में न थी, और वह वकालत के पेशे से भी नहीं जुड़ना चाहते थे। नियति ने शायद उनके लिए कुछ नया करने, नये दृश्य रचने-रंगने को एक नया वितान सुरक्षित रख छोड़ा था। पथ सूझते न देख, द्वंद्व में फंसे गिजुभाई ने एक दिन गांधी जी के समक्ष एक सवाल रखा कि यहाँ मैं क्या करूँ और गांधीजी ने कहा कि गिजु! तुम बच्चों के लिए एक विद्यालय खोलो। एक ऐसा विद्यालय जहाँ बच्चों को अपनापन मिले, जहाँ बच्चों के मस्तिष्क, हृदय और हाथ के हुनर को तराशा जाए। बस, गिजुभाई को जैसे राह मिल गई और वह हटकर कुछ नया रचने के संकल्प के साथ पथ पर बढ़ने लगे। बड़ा आश्चर्य होता है यह जानकर कि गिजुभाई बधेका जिसका संबंध शिक्षा के क्षेत्र से दूर-दूर तक नहीं था, उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में ऐसे नवीन प्रयोग किये जो आज भी न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि प्रकाश स्तंभ की भाँति शिक्षकों का मार्गदर्शन भी कर रहे हैं। गिजुभाई ने 1916 में भावनगर (गुजरात में) दक्षिणामूर्ति बालमंदिर से जुड़कर अपने शिक्षा सम्बंधी प्रयोग आरम्भ किये। 15 वर्षों की शिक्षकीय साधना से हासिल अनुभव को ही 1932 में 'दिवास्वप्न' के रूप में लोक को सौंप दिया। आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व गिजुभाई विद्यालय की छवि एक आनंदघर के रूप में देखते हैं और वह न केवल कल्पना करते हैं बल्कि तमाम झंझावातों, रुकावटों एवं बाधाओं से लड़ते-जूझते हुए अपने प्रयोग सिद्ध करते हैं। प्रस्तुत आलेख में आगे की यात्रा हम 'दिवास्वप्न' के रथ पर सवार होकर करेंगे।

आगे बढ़ने से पहले मुझे वर्तमान शैक्षिक तंत्र के परिदृश्य में उभर रहे सवालों को उठाना समीचीन प्रतीत होता है ताकि विगत एक शताब्दी के गुजरे समय में शैक्षिक ढाँचे में हुए बदलावों को हम दिवास्वप्न के निकष के आधार पर समझ सकें। आज शिक्षकों के सम्मुख स्वयं की अस्मिता एवं अस्तित्व की रक्षा करने का संकट मुँह बाये खड़ा है। विद्यालय एवं कक्षाओं में स्वयं के विवेक एवं बच्चों की आवश्यकतानुरूप पाठ्य सामग्री तय एवं निर्माण करने और काम करने की आजादी नहीं है

वरन् उनकी रचनात्मकता ऊपर से प्राप्त तमाम दिशा-निर्देशों के बोझ तले दबने-पिसने को विवश है। शिक्षकों पर सरकारों का (और समाज का भी) भरोसा नहीं है, इसीलिए विद्यालयों एवं कक्षाओं में उनकी उपस्थिति एवं क्रियाकलापों की निगरानी के लिए तमाम तकनीकी उपकरण लगवाने के साथ ही औचक निरीक्षण भी किये जा रहे हैं। ध्येय समर्पित शिक्षकों के काम का उपहास और उपेक्षा की जा रही है, विडंबना तो यह है कि जमीनी काम कर रहे शिक्षकों कें प्रयासों का माखौल उड़ाने में शिक्षक साथी भी शामिल दिखाई देते हैं। अब 'दिवास्वप्न' की ओर बढ़ते हैं।

गिजुभाई की शिक्षा अधिकारी से पहली भेंट ही निराश करने वाली रही, पर उनके आग्रह पर अधिकारी तमाम हिदायतें और विभागीय नियमों का हवाला देते हुए कहते हैं, 'देखो, जैसे चाहो वैसे प्रयोग करने की स्वतंत्रता तो तुम्हें है ही, लेकिन यह भी ध्यान में रखना कि बारहवें महीने में परीक्षा सामने आ खड़ी होगी और तुम्हारा काम परीक्षा के परिणामों से मापा जाएगा।' मेरे मानस पटल पर प्रश्न कौंधता है कि आज भी हम इस परीक्षा प्रणाली से मुक्त नहीं हो पाए हैं। यह परीक्षा प्रणाली जो बच्चों के मौलिक एवं स्वतंत्र चिंतन करने, कल्पना, अनुमान, अवलोकन, तर्क, तुलना आदि से उपजे उसके अनुभव से अर्जित-निर्मित ज्ञान की अभिव्यक्ति में एक सबसे बड़ी बाधा के रूप से उपस्थित है। परीक्षा में उसका मूल्यांकन उत्तरपुस्किाओं में पाठ्यपुस्तकों पर आधारित तथ्यों एवं निष्कर्षों के पुनर्लेखन पर ही निर्भर है। यह परीक्षा प्रणाली बच्चों को रटने की पद्धति को स्वीकारने को विवश करती है न कि उनमें वैज्ञानिक दृष्टि एवं चेतना का संचार करने तथा तार्किक विश्लेषण करने की क्षमता का विकास करने की। हालांकि सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के रूप में एक आकर्षक इंद्रधनुष सामने दिखता जरूर है पर वह शैक्षिक धरातल पर उतरने से अभी कोसों दूर है। बच्चे अनंत ऊर्जा से लबरेज होते हैं। एक शिक्षक को बच्चों के साथ काम करते समय न केवल स्वयं में ऊर्जा, सहनशक्ति, संवेदनशीलता एवं धैर्य बनाए रखना होता है बल्कि सभी बच्चों के साथ मिलकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को गति भी देना होता है। ऐसी स्थिति में प्रायः पूर्व नियोजित योजनाएँ ध्वस्त हो जाती हैं और शिक्षक को तत्काल नई गतिविधियाँ खोजनी आवश्यक हो जाती हैं। गिजुभाई लिखते हैं, 'मेरे ये नोट्स बेकार हैं। घर में बैठे-बैठे अटकलें लगाना और कल्पना में पढ़ा लेना सहज था, लेकिन यह तो लोहे के चने चबाने जैसा है।' आज भी शिक्षक इन्हीं चुनौतियों से जूझते हुए बच्चों के सर्वांगीण विकास में प्राणपण से जुटे हुए हैं।

गिजुभाई 'दिवास्वप्न' में एक दृश्य उकेरते हैं, 'छुट्टी शब्द सुनते ही लड़के 'हो-हो' करके कमरे से बाहर निकले और सारे स्कूल में खलबली मच गई। सारा वातावरण 'छुट्टी, छुट्टी, छुट्टी' शब्दों से गूँज उठा। लड़के उछलते-कूदते और छलाँगें भरते घरों की तरफ भागने लगे।' उल्लेखनीय है, विद्यालयों का वर्तमान दृश्य इससे बहुत अलग नहीं है। बच्चे स्कूलों से जल्द घर पहुँचना चाहते हैं। छुट्टी बच्चों को आनंद प्रदान करती हैं। छुट्टी की घंटी बजते ही कक्षाओं में कैद कल्पना एवं रचनात्मकता की खुशबू जैसे बंधनों से मुक्त हो जाने का उत्सव मनाती हुई परिवेश में बिखर जाती है। अनिर्वचनीय उत्साह, उल्लास और प्रसन्नता बच्चों के चेहरों पर देखा जा सकता है। तमाम शिक्षा आयोग के रिपोर्ट एवं शिक्षा नीतियों की अनुशंसाओं के बावजूद हम कक्षाओं को पारंपरिक जड़ता से मुक्त करके विद्यालयीय परिवेश को सहज सुरम्य, समता-ममता भरा आनंददायी नहीं बना पाए हैं। विचारणीय है, विद्यालयों में हम घर जैसा प्यार-दुलार एवं अपनेपन का वातावरण सर्जित नहीं कर पाये हैं। शिक्षकों को समझना होगा कि सीखना-सिखाना सर्वदा दबाव एवं तनावरहित, रुचिपूर्ण एवं प्रेममय वातावरण में ही सम्भव होता है। ऐसा आह्लादित परिवेश रचने हेतु 'दिवास्वप्न' शिक्षकों के लिए पथ संकेत के सहज सूत्र प्रदान करता हैं और वे सूत्र हैं- कहानी, कविता और खेल। अतः शिक्षकों को पाठ्य एवं बाल-मनोनुकूल कविताएँ, कहानियाँ एवं खेल स्वयं लिखने-खोजने की ओर प्रवृत्त होना होगा।

'दिवास्वप्न' के नायक शिक्षक 'लक्ष्मीशंकर' के माध्यम से जिस शिक्षा समर्पित ध्येयनिष्ठ, बालहितैषी शिक्षक की कल्पना गिजुभाई ने की थी वो लक्ष्मीशंकर शिक्षक शिक्षिकाओं में क्यों नहीं दिखता, यह एक सवाल शिक्षक समाज के सम्मुख उत्तर की प्रतीक्षा में मौन खड़ा है। दरअसल आज बच्चों का शैक्षिक सामाजिक नुकसान भविष्य में समाज और राष्ट्र की एक बड़ी क्षति के रूप में प्रकट होने वाला है, यह हम नहीं समझ पा रहे है। गिजुभाई दिवास्वप्न के माध्यम से भारतीय शिक्षा तंत्र के नीति निर्धारकों को एक रास्ता सुझाते दिखाई देते हैं। एक ऐसा रास्ता जिससे गुजर कर हम जड़ विद्यालयीय परिवेश में जीवन का संचार कर सकते हैं। जहाँ बच्चों का न केवल मधुर कलरव सुनाई दे बल्कि जहाँ उनकी रचनात्मकता भी विभिन्न आयामों के साथ सहज रूप में प्रकट हो सके। बालकेंद्रित शिक्षा वास्तव में विद्यालयों को आनंदघर बनाने की एक रोचक यात्रा ही है जहाँ प्राथमिक विद्यालयों की चहारदीवारी के अंदर लोक-संस्कृति में रचे-बसे बच्चों के प्राणों का स्पंदन हो और उनके परिवार-परिवेश का राग ध्वनित हो, जहाँ उनकी भाषा-बोली को महत्त्व एवं सम्मान मिले, जहाँ प्रत्येक पल उत्सवधर्मिता की खुशी से सराबोर हो, जहाँ नित नवल सृजन की इच्छा-आकांक्षा और सिद्धि का शुभ संकल्प हो।

सम्प्रति- लेखक भाषा शिक्षक हैं और विद्यालयों को आनन्दघर बनाने के अभियान पर काम कर रहे हैं। प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक बदलावों, आनन्ददायी शिक्षण एवं नवाचारी मुद्दों पर सतत लेखन एवं प्रयोग।

सम्पर्क - बाँदा, (उप्र)
ईमेल : pramodmalay123@gmail.com

बाल कविता :
सूने-सूने स्कूल

बच्चों बिन सूने-सूने
लगते सब स्कूल।
खेलकूद के मैदानों में,
उड़े अनछुई धूल।
कक्षाओं में लटके जाले,
दीवारें कब से गुमसुम-सी।
ब्लैक बोर्ड हुए अनमने,
घण्टी रोई-रोई-सी।
हलचल शोरगुल आवाजें,
लील गया सबको सन्नाटा।
उमंग-तरंग हँसी-खुशी,
बन्द पड़ा है सैर-सपाटा।
शिक्षकगण भी इस चिंता में,
कब खुलेंगे स्कूल हमारे।
खोई रौनक कब लौटेगी?
कब चहकेंगे बाल सितारे ।।

नरेन्द्र सिंह 'नीहार'
A- 67 / B, दुर्गा विहार (देवली)
निकट खानपुर
नई दिल्ली -110080

शिक्षा, साहित्य व समाजसेवा में 'आर्टिस्ट' ने बनाई विशिष्ट पहचान

करतार सिंह जाखड़

भिवानी जिले के गाँव सांगा के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में बतौर प्राध्यापक कार्यरत आनंद प्रकाश 'आर्टिस्ट' किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। शिक्षा के साथ-साथ साहित्य, समाजसेवा क्षेत्र में उन्होंने अपने लेखन व कार्यों के प्रति अपनी अलग पहचान कायम की है। आनंद प्रकाश के सफर की बात की जाए तो उन्होंने शिक्षा क्षेत्र में अपना सफर 8 सितंबर 1983 को गाँव झोझू कलाँ के उसी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय से कला-अध्यापक से शुरू किया, जिस स्कूल में उनकी शिक्षा पूरी हुई। इसके बाद 11 जनवरी, 2000 को वे हिन्दी प्राध्यापक के रूप में पदोन्नत हुए तथा राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय चंदेनी के प्राचार्य का प्रभार मिला। वर्तमान में वे सांगा के राजकीय स्कूल में कार्यरत हैं।

साहित्य क्षेत्र की बात की जाए तो उनके शिष्यों द्वारा उन पर पाँच पुस्तकें उनके व्यक्तित्व पर लिखकर विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध-पत्र के रूप में प्रस्तुत व स्वीकृत की जा चुकी हैं। वहीं वे खुद भी अपनी तरह की विशेष कही जाने वाली ग्यारह पुस्तकों की रचना भी कर चुके हैं तथा तीन से चार रचनाओं पर काम चल रहा है। उनके गीत व रचनाएँ रेडियो पर प्रसारित हो चुके हैं तथा उनके द्वारा रचित गीतों की दो दर्जन कैसेट व सीडी बाजार में भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा यू-ट्यूब पर भी उनके कई दर्जन वीडियो अपलोड किए जा चुके हैं। उनके साहित्य प्रेम का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब तक उनके हजारों लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। भिवानी जिले ही नहीं बल्कि आसपास के जिलों में भी पहले रेडियो व फिल्म आर्टिस्ट व आकाशवाणी का बी. हाई. ग्रेड का ड्रामा आर्टिस्ट होने का गौरव भी उन्हें प्रदान किया गया है। बेटी बचाओ अभियान पर न केवल पहला गीत 'कान खोलके सुण ले माँ एक सवाल यो मेरा, क्यूँ बेटी का नाम भतेरी क्यूँ बेटा नहीं भतेरा' अप्रैल, 2000 में लिखा गया था। उस गीत ने प्रदेश ही नहीं, देश में अपनी पहचान बनाई है। इसी विषय पर पहली हरियाणवी लघु फिल्म 'ताई की तकरार' भी वर्ष 2014-15 में बनाई गई जिसका लोकार्पण 18 जुलाई, 2015 को मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा भिवानी में किया जा चुका है।

वे एक सच्चे कर्मयोगी की भाँति सदैव अपने कार्य की साधना में लीन रहते हैं। साहित्य सृजन, पुस्तक प्रकाशन, आकाशवाणी या दूरदर्शन पर उनकी रचनाओं का प्रसारण, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन तथा ज्वलंत सामाजिक मुद्दों पर साहित्यिक चर्चाओं का आयोजन व स्वरचित स्क्रिप्टस पर अपने कैमरे से लघु फिल्मों व दूसरे कार्यक्रमों का निर्माण करना आदि अनेक गतिविधियों में मैंने अक्सर उन्हें व्यस्त देखा है। मैंने उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित होते देखी हैं और फिर उनकी समीक्षा और चर्चा आदि भी पढ़ी व सुनी-देखी है। जैसे 'खोया हुआ विश्वास' तथा 'विश्वास अभी बाकी है' इनके दो ऐसे उपन्यास हैं, जिनकी चर्चा दूर-दूर तक हुई है। इनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रोफेसर खेमसिंह डहेरिया द्वारा रचित शोध ग्रंथ- 'अभिव्यक्ति के विविध आयाम और आनंद प्रकाश आर्टिस्ट', और मेरे द्वारा उनके जीवन और व्यक्तित्व पर अंग्रेजी भाषा में लिखी गई पहली पुस्तक- 'लाइफ एंड पर्सनैलिटी ऑफ आनंद प्रकाश आर्टिस्ट' और अन्य लेखक-लेखकाओं द्वारा अपने-अपने दृष्टिकोण से इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर लिखी गई पुस्तकें इनके साहित्यिक अवदान को ही नहीं, बल्कि इनके विलक्षण व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डालती है।

कुछ लेखकों ने इनके जीवन और कार्यों पर शोधपरक लेख प्रस्तुत किए हैं तो कुछ ने इनकी पुस्तकों की स्वतंत्र रूप से समीक्षा प्रस्तुत की है। इसी कड़ी में मैंने भी इनके उपन्यास 'विश्वास अभी बाकी है' की समीक्षा की है, जिसे साहित्य जगत के स्वनामधन्य विद्वानों द्वारा काफ़ी सराहा गया है।

श्री आनंद प्रकाश 'आर्टिस्ट' जी साहित्य जगत के ऐसे लोकप्रिय लेखक हैं जिन्होंने हरियाणा के प्रथम राज्यकवि स्वर्गीय उदयभानु हंस पर उनके जीवनकाल में उन पर अंतिम शोधपरक कृति के रूप में उनकी जीवनी-उदयभानु हंस की साहित्यिक उड़ान लिखने का गौरव प्राप्त हुआ है, तो उनके दिवंगत होने के बाद उनकी स्मृति में 'उड़ गया हंस अकेला' नाम से शोधपरक स्मृति ग्रंथ लिखने का गौरव भी इन्हें हासिल हुआ है। इस कार्य के कारण एक लेखक के तौर पर इनका नाम हरियाणा के साहित्य-इतिहास में दर्ज हो चुका है।

उनकी शिक्षा, साहित्य व समाज क्षेत्र में दी गई सेवाओं व योगदान को देखते हुए उन्हें राष्ट्रपति, राज्यपाल व अनेक मुख्यमंत्रियों द्वारा प्रशंसा-पत्र भेजे गए हैं तथा अनेक समाजसेवी संस्थाओं द्वारा उन्हें सम्मानित किया गया है। वर्ष 2012 में ग्राम पंचायत झोझू कलाँ द्वारा उन्हें 'ग्राम रत्न' व वर्ष 2012 में भिवानी परिवार मैत्री संघ ने नई दिल्ली में आयोजित एक भव्य सम्मान समारोह में आनंद प्रकाश 'आर्टिस्ट' को भिवानी गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। शिक्षक व समाजसेवी 'आर्टिस्ट' को इस बात का मलाल है कि एक शिक्षक होने के नाते अन्य क्षेत्रों में उनकी सेवाओं को देखते हुए उन्हें आज तक वह सम्मान प्रदान नहीं किया गया जिसके वे हकदार हैं, परंतु इसके बावजूद वे अपने लक्ष्य की ओर न केवल अग्रसर हैं बल्कि प्रदेश व राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

प्रवक्ता अंग्रेज़ी
राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय तोशाम, जिला- भिवानी, हरियाणा

माँ-बाप के सपने पूरे करना चाहती है छात्रा मुस्कान

किसी भी व्यक्ति के अन्दर कोई भी कला भगवान की देन मानी जाती है। इसके साथ-साथ ये भी काफी मायने रखता है कि हमारे आसपास व घर में किस तरह का माहौल है। किसी को कला निखारने का उचित मौका मिल जाता है तो किसी को नहीं। जहाँ तक विद्यार्थियों की बात है तो विद्यार्थी कलाकार व ऊर्जावान होते है। अगर उन्हें उचित माहौल, मौका तथा प्रोत्साहन मिले तो वे कमाल का काम करके दिखाते हैं। आज लड़कियाँ भी किसी से कम नहीं हैं, बल्कि लड़कियाँ किसी भी कार्य को जुनून के साथ करती हैं इसलिए वे जल्दी सफल हो जाती हैं। वैसे तो कुछ लड़कियाँ बहुमुखी प्रतिभाशाली होती हैं, किन्तु गायन व नृत्य में वे अक्सर निपुण होती हैं। इसी तरह की बहुमुखी प्रतिभाशाली एक छात्रा है- मुस्कान वर्मा।

यमुनानगर की पुरानी सब्जी मंडी स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय की कक्षा बारहवीं में पढ़ने वाली मुस्कान एक ऐसी नृत्यांगना है जिसके अंग-अंग में थिरकन समाई हुई है। पढ़ाई के साथ-साथ घुमक्कड़ी व एक्टिंग में रुचि रखने वाली छात्रा मुस्कान वर्मा जब नृत्य करती है तो दर्शक तालियों की गड़गड़ाहट के साथ झूम उठते हैं। नृत्य करते समय मुस्कान की भाव भंगिमाएँ भी नृत्य करती प्रतीत होती हैं। इसकी एड़ियों की थाप से हॉल गूँज उठता है। यह ऊर्जावान छात्रा हिन्दी के साथ-साथ हरियाणवी, पंजाबी गीत-संगीत पर गजब का नृत्य करती है।

मुस्कान ने बताया कि सबसे पहले 2014 में उसकी बहन गुंजन ने नृत्य सिखाया। फिर तो नृत्य-यात्रा आरम्भ हो गई। बाद में एक अकादमी से पंजाबी नृत्य सीखा, जिससे आत्म-विश्वास बढ़ा। मुस्कान यमुनानगर के वृन्दावन आश्रम में रहती है। यहाँ पर इसने सखी, राधा, पार्वती की भूमिका में बार-बार नृत्य किया। उसके बाद विद्यालय तथा बाहर के कार्यक्रमों में नृत्य की शुरुआत हुई। यह कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं उत्सवों में भाग लेने लगी। कल्चर फेस्ट में मुस्कान की टीम जिले में प्रथम आई तो हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एडवेंचर कैम्प में केरल यात्रा का मौका मिला। मुस्कान ने नेशनल स्तर पर केरल में अपने नृत्य का जादू बिखेरा तो कैम्प इंचार्ज तथा कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने इसे सम्मानित किया। नृत्य प्रतियोगिताओं में विजेता के रूप में मुस्कान बार-बार सम्मानित हो चुकी है।

हरियाणा विधान सभा के पूर्व स्पीकर कँवरपाल सहित अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मुस्कान पुरस्कार प्राप्त कर चुकी है। इस सबके लिए मुस्कान अपने माता-पिता श्रीमती वीना व श्री राजेन्द्र कुमार, बहन गुंजन तथा डांस सहयोगी साहिल तथा शिक्षकों का योगदान मानती है। प्रतिभाशाली छात्रा मुस्कान वर्मा सीए बनना चाहती है। इसके साथ-साथ इसकी इच्छा है कि ये पंजाबी अभिनेत्री बने, क्योंकि एक्टिंग में भी इसकी खास रुचि है। इसकी यह इच्छा भी है कि यह अपने माता-पिता के सपने पूरे करे। छात्रा मुस्कान नृत्य, एक्टिंग के साथ-साथ पढ़ाई में भी होशियार है। दसवीं की बोर्ड परीक्षा में इसने चौरासी प्रतिशत अंक प्राप्त किये। इसका कहना है कि यह पढ़ाई के साथ-साथ नृत्य व एक्टिंग क्षेत्र में नाम कमाना चाहती है।

डॉ.ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एमपी रोही
जिला-फतेहाबाद, हरियाणा

हरि का ये हरियाणा

हरियाणा का जन्मदिन, देख नवम्बर एक।
सीधे सादे गाभरु, राखै नीयत नेक।।
राखै नीयत नेक, देश म्ह सारै छावै।
बीर मर्द कै गैल, खेत म्ह खूब कमावै।।
कहै 'भारती' देख, गजब का म्हारा बाणा।
आज नवम्बर एक, जन्मदिन सै हरियाणा।।

हरियाणा की देश म्ह, अजब निराली शान।
बांके छैले गाभरु, म्हारे वीर जवान।।
म्हारे वीर जवान, शान सै बड़ी निराली।
खड़े सीम पै देख, खूब करते रखवाली।।
कहै 'भारती' खूब, गजब का म्हारा खाणा।
दूध दही की मौज, हरि का ये हरियाणा।।

हरियाणा परदेस म्ह, बहै दूध की धार।
खेत क्यार नै जोतते, दूध दही आहार।।
दूध दही आहार,खूब करै पहलवानी।
ल्यावै मैडल जीत, किसी तै कोनी छानी।।
कहै 'भारती' दूध, दही का चोखा खाणा।
रखै दूध की लाज, मान पावै हरियाणा।।

- भूपसिंह भारती, शिक्षक
रामा विद्यालय डेरोली अहीर
जिला- महेंद्रगढ़

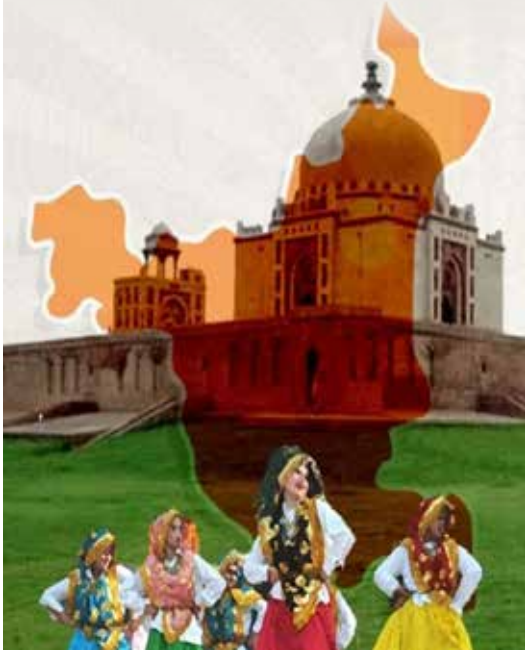

कैसे बना हमारा संविधान ?

जितेंदर राठौड़

संविधान जो महज एक किताब नहीं, भारत की आत्मा है। संविधान देश का सर्वोच्च कानून है, संविधान वह ग्रन्थ है जो सरकार प्रशासन और व्यवस्था के तमाम अंगों को काम काज की शक्ति देता है और उनका दायरा भी तय करता है। यानी देश कैसे चलेगा, सरकार कैसे काम करेगी व्यवस्था का हर अंग कैसे काम करेगा -ये सब संविधान से तय होता है। दुनिया में जब से शासन है, तब से शासन व्यवस्था के नियम तय किए जाते रहे हैं। भारत के सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद ,अथर्ववेद में सामान्य लोगों की सभा और वरिष्ठ जनों की समिति के जरिये शासन प्रशासन के काम का जिक्र है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र और पाणिनि के अष्टाध्यायी, मनुस्मृति जैसे कई ग्रंथों में शासन की व्यवस्था चलाने के नियम निहित हैं। प्रत्येक राष्ट्र अस्तित्व में आने के बाद सबसे पहले अपने संविधान का निर्माण कर अपनी संप्रभुता की घोषणा करता है। संविधान राज्य के प्रति नागरिकों के विश्वास की अभिव्यक्ति है जिसके माध्यम से वे राज्य से अपनी इच्छाओं एवं आशाओं को पूरी करना चाहते हैं । वही संविधान राष्ट्रीय विकास में भरपूर योगदान दे सकता है, जिसे उस राष्ट्र की जनता ने स्वयं बनाया हो या लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा निर्मित हो। ' गिलक्राइस्ट ' के अनुसार - संविधान उन लिखित या अलिखित नियमों अथवा कानूनों का संकलन होता है जिनके द्वारा सरकार का संगठन , सरकार के विभिन्न अंगों में शक्तियों के वितरण और उन शक्तियों के प्रयोग के सामान्य सिद्धान्त निश्चित किये जाते हैं।

भारतीय संविधान का निर्माण

भारतीय संविधान का निर्माण प्रतिनिधियों की ही सभा द्वारा किया गया था। भारतीय संविधान की माँग सबसे पहले महात्मा गाँधी जी ने 1922 में की थी तथा भारत में संविधान सभा के गठन का विचार वर्ष 1934 में पहली बार एमएन रॉय ने रखा। रॉय वामपंथी आंदोलन के प्रखर नेता और आमूल परिवर्तनवादी प्रजातंत्रवाद के पैरोकार थे। 1935 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने पहली बार भारत के संविधान के निर्माण के लिए आधिकारिक रूप से संविधान सभा के गठन की मांग की। 1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से पंडित जवाहरलाल नेहरू ने घोषणा की कि स्वतंत्र भारत के संविधान का निर्माण वयस्क मताधिकार के आधार पर चुनी गई संविधान सभा द्वारा किया जाएगा और इसमें कोई बाहरी हस्तक्षेप नहीं होगा। इस माँग को अंततः ब्रिटिश सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया। इसे सन् 1940 के अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है। सन् 1942 में ब्रिटिश सरकार के प्रतिनिधि एक स्वतंत्र संविधान के निर्माण के लिए ब्रिटिश सरकार के एक प्रारूप प्रस्ताव के साथ भारत आए। जिसे क्रिप्स प्रस्ताव कहा जाता है। क्रिप्स प्रस्ताव को मुस्लिम लीग ने अस्वीकार कर दिया। मुस्लिम लीग की माँग थी कि भारत को दो स्वायत्त हिस्सों में बाँट दिया जाए और दोनों राष्ट्र अपने- अपने संविधान का निर्माण करें। अंततः, वर्ष 1946 में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने भारत में एक तीन सदस्यीय उच्च-स्तरीय शिष्टमंडल भेजने की घोषणा की। इस शिष्टमंडल में ब्रिटिश कैबिनेट के तीन सदस्य- लार्ड पैथिक लारेंस (भारत सचिव), सर स्टेफर्ड क्रिप्स (व्यापार बोर्ड के अध्यक्ष) तथा एवी अलेक्जेंडर (एडमिरैलिटी के प्रथम लार्ड या नौसेना मंत्री) थे। इस मिशन ने दो संविधान सभाओं की माँग को ठुकरा दिया, लेकिन उसने ऐसी संविधान सभा के निर्माण की योजना सामने रखी, जिसने मुस्लिम लीग को काफी हद तक संतुष्ट कर दिया।

संविधान सभा का गठन

कैबिनेट मिशन योजना द्वारा सुझाए गए प्रस्तावों के तहत नवंबर 1946 में संविधान सभा का गठन हुआ। योजना की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं-

संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 389 होगी। इनमें से 296 सीटें ब्रिटिश भारत और 93 सीटें देशी रियासतों को आबंटित की जानी थीं। ब्रिटिश भारत को आबंटित की गईं 296 सीटों में 292 सदस्यों का चयन 11 गवर्नरों के प्रांतों और 4 का चयन मुख्य आयुक्तों के प्रान्तों से किया जाएगा।

प्रत्येक प्रांत व देसी रियासतों को उनकी जनसंख्या के अनुपात में सीटें आबंटित की जाएँगी। मोटे तौर पर कहा जाए तो प्रत्येक दस लाख लोगों पर एक सीट आबंटित की जाएगी।

प्रत्येक ब्रिटिश प्रांत को आबंटित की गई सीटों का

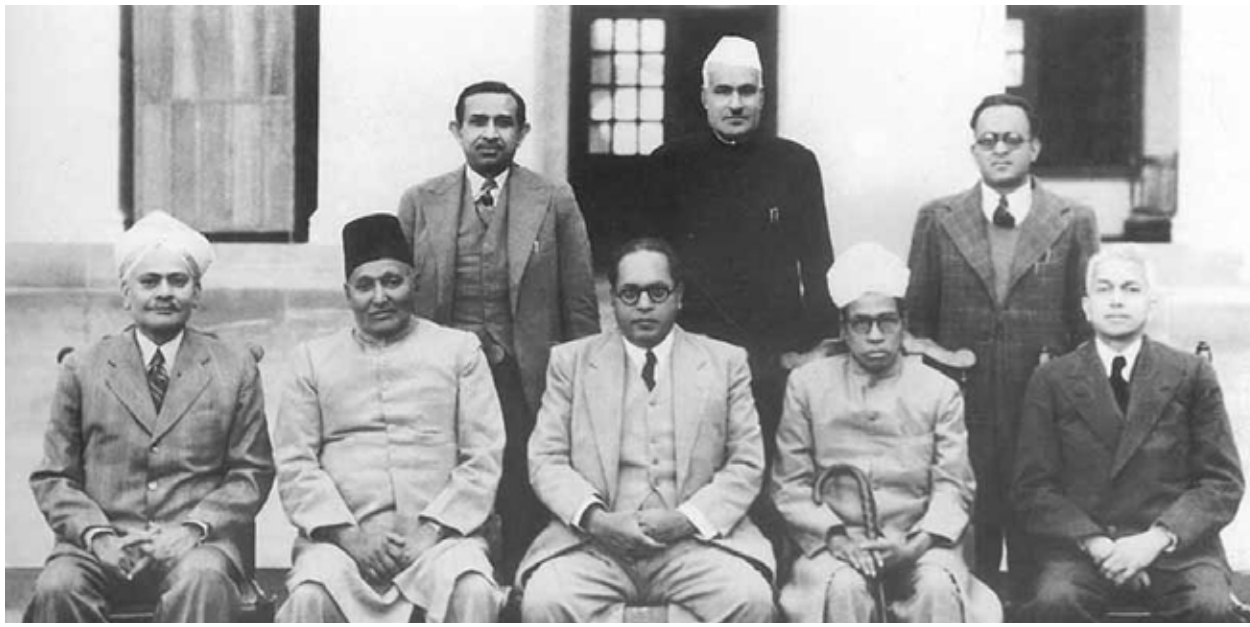

निर्धारण तीन प्रमुख समुदायों मुस्लिम, सिख व सामान्य के बीच उनकी जनसंख्या के अनुपात में किया जाना था।

देसी रियासतों के प्रतिनिधियों का चयन रियासतों के प्रमुखों द्वारा किया जाना था।

अतः यह स्पष्ट था कि संविधान सभा आंशिक रूप से चुनी हुई और आंशिक रूप से नामांकित निकाय थी। इसके अलावा सदस्यों का चयन अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतीय व्यवस्थापिका के सदस्यों द्वारा किया जाना था, जिनका चुनाव एक सीमित मताधिकार के आधार किया गया था।

संविधान सभा की 296 सीटों हेतु चुनाव जुलाई-अगस्त 1946 में हुआ। इस चुनाव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को 208, मुस्लिम लीग को 73 तथा छोटे समूह व स्वतंत्र सदस्यों को 15 सीटें मिलीं। हालांकि देसी रियासतों को आबंटित की गईं 93 सीटें भर नहीं पाये, क्योंकि उन्होंने खुद को संविधान सभा से अलग रखने का निर्णय लिया। यद्यपि संविधान सभा का चुनाव भारत के वयस्क मतदाताओं द्वारा प्रत्यक्ष रूप से नहीं हुआ तथापि इसमें प्रत्येक समुदाय-हिंदू, मुस्लिम, सिख, पारसी, आंग्ल-भारतीय, भारतीय ईसाई, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के प्रतिनिधियों को जगह मिली। इनमें महिलाएँ भी शामिल थीं। महात्मा गांधी और मोहम्मद अली जिन्ना के अपवाद को छोड़ दें तो सभा में उस समय भारत की सभी बड़ी हस्तियाँ शामिल थीं।

संविधान सभा की समितियाँ

संविधान सभा ने संविधान के निर्माण से संबंधित विभिन्न कार्यों को करने के लिए कई समितियों का गठन किया। इनमें से 8 बड़ी समितियाँ थीं तथा अन्य छोटी। इन समितियों तथा इनके अध्यक्षों के नाम इस प्रकार हैं:

1. प्रांतीय संविधान समिति- सरदार पटेल
2. संघीय संविधान समिति- जवाहरलाल नेहरू
3. प्रारूप समिति- डॉ. बीआर अंबेडकर
4. संघ शक्ति समिति- जवाहरलाल नेहरू
5. मौलिक अधिकारों एवं अल्पसंख्यकों संबंधी परामर्श समिति सरदार पटेल, इस समिति की दो उप-समितियाँ थीं:
   (अ) मौलिक अधिकार उप-समिति- जेबी कृपलानी
   (ब) अल्पसंख्यक उप-समिति- एचसी मुखर्जी
6. प्रक्रिया नियम समिति-डॉ.राजेंद्र प्रसाद
7. संचालन समिति- डॉ. राजेंद्र प्रसाद
8. राज्यों के लिये समिति - जवाहरलाल नेहरू

प्रारूप समिति

संविधान सभा की सभी समितियों में सबसे ज्यादा महत्त्वपूर्ण थी प्रारूप समिति। इस समिति का गठन 29 अगस्त, 1947 को हुआ था। यह वह समिति थी जिसे नए संविधान का प्रारूप तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। इसमें सात सदस्य थे, जिनके नाम इस प्रकार हैं:

1. डॉक्टर बीआर अंबेडकर (अध्यक्ष)
2. एन गोपालस्वामी आयंगर
3. अल्लादी कृष्णस्वामी अय्यर
4. डॉक्टर केएम मुंशी
5. सैयद मोहम्मद सादुल्ला
6. एन माधव राव (इन्होंने बीएल मित्र की जगह ली, जिन्होंने स्वास्थ्य कारणों से त्याग-पत्र दे दिया था)
7. टीटी कृष्णामाचारी (इन्होंने सन 1948 में डीपी खेतान की मृत्यु के बाद उनकी जगह ली)

संविधान का प्रभाव में आना

विभिन्न समितियों के प्रस्तावों पर विचार करने के बाद प्रारूप समिति ने भारत के संविधान का पहला प्रारूप तैयार किया। इसे फरवरी 1948 में प्रकाशित किया गया। भारत के लोगों को इस प्रारूप पर चर्चा करने और संशोधनों का प्रस्ताव देने के लिए 8 माह का समय दिया गया। लोगों की शिकायतों, आलोचनाओं और सुझावों के परिप्रेक्ष्य में प्रारूप समिति ने दूसरा प्रारूप तैयार किया, जिसे अक्टूबर, 1948 में प्रकाशित किया गया। प्रारूप समिति ने अपना प्रारूप तैयार करने में छह माह से भी कम का समय लिया। कुल मिलाकर हमारे संविधान को बनाने में 2 वर्ष 11 महीने 18 दिन का समय लगा तथा इस कार्य में लगभग 1 करोड़ रुपये खर्च हुए संविधान पर तीसरी बार 14 नवंबर, 1949 से विचार होना शुरू हुआ। डॉ. बीआर अंबेडकर ने **द कॉन्स्टिट्यूशन ऐज सैटल्ड बाई द असेंबली बी पास्ड** प्रस्ताव पेश किया। संविधान के प्रारूप पर पेश इस प्रस्ताव को 26 नवंबर, 1949 को पारित घोषित कर दिया गया और इस पर अध्यक्ष व सदस्यों के हस्ताक्षर लिए गए। सभा में कुल 299 सदस्यों में से उस दिन केवल 284 सदस्य उपस्थित थे, जिन्होंने संविधान पर हस्ताक्षर किए। इस प्रकार हमारा संविधान 26 नवंबर 1949 को बनकर तैयार हो गया, जिसे 26 जनवरी, 1950 को लागू कर दिया गया। इस दिन को संविधान की शुरुआत के रूप में इसलिए चुना गया, क्योंकि इसका अपना ऐतिहासिक महत्त्व है। 26 जनवरी, 1930 के दिन ही भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन (दिसंबर 1929) में पारित हुए संकल्प के आधार पर पूर्ण स्वराज दिवस मनाया गया था। आज हम 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्रवक्ता राजनीति विज्ञान
आरोही राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रामगढ़ पाण्डवा, कैथल

शैक्षणिक व सांस्कृतिक कीर्तिमान स्थापित किए हैं इस्माइलाबाद के संस्कृति विद्यालय ने

सुनील पुलस्त्य

डॉ. बलवान सिंह

1 नवंबर, 1966 को जब हरियाणा राज्य पंजाब से अलग होकर अस्तित्व में आया, तब तक शिक्षा के क्षेत्र में यह बहुत अग्रणी नहीं था और मुख्यतः कृषि प्रधान माना जाता था। पंजाब से अलग होकर हरियाणा के जागरूक नेताओं को यह बात ध्यान में रही कि यदि हरियाणा को विकास की राह पर ले कर आना है तो उसके लिए शिक्षा बहुत जरूरी है, परिणाम स्वरूप बहुत से नए विद्यालय एवं महाविद्यालय अस्तित्व में आए। इसी कड़ी में सन 1967 में चंडीगढ़-हिसार राजमार्ग पर स्थित इस्माइलाबाद में भी एक राजकीय उच्च विद्यालय की स्थापना की गई। उस समय इस्माइलाबाद एक गाँव के रूप में ही जाना जाता था जो आज एक कस्बे का रूप ले चुका है। यह कुरुक्षेत्र से लगभग 32 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यही विद्यालय बाद में सन 1985 में 10+2 और सन 2007 में मॉडल संस्कृति विद्यालय के रूप में जाना जाने लगा। वर्तमान में यह विद्यालय इस्माइलाबाद कस्बे के काठगढ़-छपरा रोड़ पर स्थित है। वर्तमान में इसका पूरा नाम शहीद बलवीर सिंह राजकीय

आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय है।

विद्यालय का नामकरण इसी विद्यालय के एक होनहार छात्र बलबीर सिंह के नाम पर किया गया है, जिन्होंने कश्मीर में आतंकवादियों से लोहा लेते हुए सन 1999 के कारगिल युद्ध में अपने प्राणों का बलिदान दिया था। किसी भी विद्यालय का नाम उसके विद्यार्थियों तथा अध्यापकों की उपलब्धियों से ही रोशन होता है। इस विद्यालय की स्थापना के कुछ वर्षों के बाद ही यहाँ के विद्यार्थियों ने अलग-अलग क्षेत्रों में अपना वर्चस्व स्थापित किया। मुख्य रूप से चिकित्सा के क्षेत्र में इस विद्यालय के बहुत से विद्यार्थी एमबीबीएस करने के पश्चात डॉक्टर बने इनमें डॉ.नीना कंसल, डॉ.अनुराग गोयल, डॉ.यादविंदर सिंह, डॉ.संदीप शर्मा और डॉ.पवन बंसल प्रमुख हैं। डॉ. पवन बंसल आज भी कुरुक्षेत्र के ख्याति प्राप्त सर्जन माने जाते हैं। बी फार्मा और बीएएमएस कर डॉक्टर बनने वाले और भी बहुत से विद्यार्थियों की एक लंबी सूची है। जहाँ तक पिछले 2 या 3 वर्षों की उपलब्धि की बात है तो यह समय भी विद्यालय का स्वर्णिम काल रहा है। इस काल में विद्यालय के होनहार बच्चों ने शैक्षणिक और सांस्कृतिक दोनों ही क्षेत्रों में नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। सन् 2018 में जहाँ विद्यालय के दो होनहार छात्रों देवांश और गुरजंट सिंह ने सुपर-100 में स्थान पाया तो वहीं 2019 में जयदेवी और मनजोत सिंह ने बारहवीं कॉमर्स में 92.2 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। जयदेवी ने लड़कियों में कुरुक्षेत्र जिले में प्रथम स्थान पाया। इन उपलब्धियों को देखते हुए सन् 2019 के सत्र में विद्यालय के अध्यापकों और छात्रों के सामने प्राचार्य श्री अजायब सिंह ने जिला स्तर पर ही नहीं बल्कि राज्य स्तर पर स्थान प्राप्त करने का लक्ष्य रखा और उसी दृष्टि से तैयारी करने के लिए प्रेरित किया। अध्यापकों और बच्चों ने पूरी लगन और मेहनत से तैयारी की और अपने प्राचार्य को निराश नहीं होने दिया। दसवीं कक्षा में जब एक होनहार छात्रा कोमल ने 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त किए तो बड़ी बेसब्री से बारहवीं कक्षा के परिणाम की प्रतीक्षा की जाने लगी। कुछ दिनों बाद जब बारहवीं कक्षा का परिणाम आया तो विद्यालय के छात्र जसप्रीत सिंह ने 500 में से 495 और अक्षित सिंगला ने 494 अंक अर्जित कर राज्य में क्रमशः तीसरा और चौथा स्थान प्राप्त किया। इन विद्यार्थियों की इस उपलबधि को देखते हुए हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने पंचकूला में राज्य-स्तरीय प्रतिभा सम्मान समारोह में माननीय ज्ञानचंद गुप्ता हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष एवं माननीय कँवर पाल शिक्षामंत्री हरियाणा सरकार के कर-कमलों द्वारा जसप्रीत सिंह को 51,000 रुपये तथा अक्षित सिंगला को 31,000 रुपये देकर सम्मानित कराया। यदि सरकारी विद्यालयों की बात की जाए तो जसप्रीत सिंह राज्य में प्रथम स्थान पर रहे विज्ञान वर्ग में तमन्ना ने 500 में से 481 तथा कला वर्ग में वंदना ने 485 और भूपिंदर कौर ने 482 अंक प्राप्त किए। कुल मिलाकर 12वीं कक्षा के 72 बच्चों ने 80% से अधिक अंक प्राप्त किए जोकि सरकारी विद्यालय में एक नया कीर्तिमान है।

विद्यालय के होनहार बच्चे सांस्कृतिक गतिविधियों में भी पीछे नहीं हैं। सत्र 2018-19 में विद्यालय के बच्चों ने कला-उत्सव और कल्चरल-फेस्ट में हरियाणवी लघु नाटिका और हरियाणवी समूह गान में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। वहीं 2019-20 में भी दोनों वर्गों में लघु नाटिका और हरियाणवी समूह गान में जिला स्तर पर प्रथम स्थान पाया, हरियाणवी नृत्य में दूसरा स्थान तथा रागिनी में इस विद्यालय के एक छात्र अजय कुमार ने जिला स्तर पर दूसरा स्थान अर्जित किया। लीगल लिटरेसी क्लब की प्रतियोगिता में इस क्लब के प्रभारी डॉ. बलवान सिंह के नेतृत्व में जिला स्तर पर लघु नाटिका, भाषण, प्रश्नोत्तरी और वाद-विवाद में प्रथम स्थान पाया तथा पीपीटी में दूसरा एवं स्लोगन और कविता में तीसरा स्थान प्राप्त किया। अंबाला मंडल में वाद-विवाद में प्रथम, भाषण में द्वितीय और लघु नाटिका एवं प्रश्नोत्तरी में तीसरा स्थान अर्जित किया। इसी प्रतियोगिता में राज्य स्तर पर भूपिंदर कौर ने भाषण में दूसरा स्थान प्राप्त किया।

विद्यालय को मुख्यमंत्री विद्यालय सौन्दर्यीकरण प्रतियोगिता-2019 के अंतर्गत खंड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त हो चुका है। इस समय विद्यालय में लगभग 1015 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और 35 अध्यापक-प्राध्यापक कार्यरत हैं। विद्यालय के सभी अध्यापक-

प्राध्यापक अनुभवी हैं तथा उच्च शैक्षणिक योग्यता रखते हैं, जिनमें 4 पीएच-डी तथा 4 यूजीसी नेट क्वालिफाइड हैं। इसके साथ-साथ विद्यालय के हिंदी प्राध्यापक सुनील कुमार को महानिदेशक शिक्षा विभाग श्री राकेश गुप्ता द्वारा 'भाषा-सारथी पुरस्कार-2018' से सम्मानित किया जा चुका है। विद्यालय में अंग्रेजी माध्यम से तीनों संकाय विज्ञान, वाणिज्य और कला में बच्चों को शिक्षा प्रदान करने की सुविधा है। पीने के लिए आरओ वाटर, बिजली के लिए जनरेटर, कंप्यूटर-लैब, अंग्रेजी-भाषा प्रयोगशाला, आईटी लैब, बैंकिंग लैब, विज्ञान प्रयोगशाला एवं संगीत प्रयोगशाला, पुस्तकालय और सरकार द्वारा छात्रा परिवहन योजना के अंतर्गत विद्यालय में आने-जाने की सुविधा भी सत्र 2019-20 से बच्चों को उपलब्ध करवाई गई है।

विद्यालय में एनएसएस की यूनिट भी निरंतर कार्यरत है और पिछले वर्ष ही पीसीसी की यूनिट भी विद्यालय को मिली है। जिसके अंतर्गत बच्चे अनुशासित रहकर समाज-सेवा और देश-सेवा की भावना से कार्य करते हैं। अगले सत्र से यह विद्यालय केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, नई-दिल्ली से संबद्ध होने जा रहा है। विद्यालय में वॉलीबाल, कबड्डी, बास्केटबॉल, क्रिकेट आदि खेलों की सुविधाएँ तथा कुश्ती के लिए सरकार की ओर से मैट का प्रबंध किया गया है। उच्च शिक्षा प्राप्त तथा प्रशिक्षित स्टाफ सभी विषयों के लिए उपलब्ध है जिनका साक्षात्कार के बाद ही विभाग द्वारा इस विद्यालय के लिए चयन किया गया है। प्रार्थना सभा के अंतर्गत विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र, योग-अभ्यास, शारीरिक-व्यायाम,

प्रश्नोत्तरी और मंच पर आकर अपने विचार अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए प्रार्थना सभा में अपने सदन के अनुसार मंच पर आकर प्रस्तुति देना अनिवार्य है ।

निर्धन एवं मेधावी विद्यार्थियों की सहायता करने में भी विद्यालय के अध्यापक कभी पीछे नहीं रहे हैं। राज्य में 12वीं कक्षा में तीसरा और चौथा स्थान प्राप्त करने वाले दोनों छात्र जसप्रीत सिंह और अक्षित निर्धन परिवार से आते हैं, 12वीं कक्षा की सभी पुस्तकें विद्यालय के अध्यापकों द्वारा ही इन दोनों छात्रों को निःशुल्क उपलब्ध करवाई गई हैं। जब जसप्रीत सिंह को लैपटॉप की आवश्यकता महसूस हुई तो विद्यालय की संगीत प्राध्यापिका मैडम रीटा शर्मा ने उनकी मदद की और उसे लैपटॉप लाकर दिया। इसी प्रकार मैडम अमरजीत कौर ने अक्षित को लैपटाप तथा मोबाइल दोनों ही उपलब्ध करवाए। जब दोनों बच्चों ने सीए के लिए पंजीकरण करवाया, तब उनकी 18,000 रुपये फीस राजेंद्र बिंदल सर ने अपनी ओर से भरकर मदद की। इसी प्रकार मैडम अमरजीत कौर ने दोनों बच्चों को सीए के लिए कोचिंग का प्रबंध किया। इसके साथ-साथ अवषेक शर्मा और गुरमीत कौर सहित लगभग 36 बच्चों को विद्यालय के अध्यापकों की ओर से 30 पुस्तकें और वर्दी देकर मदद की गई।

विद्यालय में सन् 2012 से एक हर्बल पार्क की भी स्थापना की गई है जिसमें जहाँ एक और नीम, पीपल, बरगद जैसे त्रिवेणी पौधे लगे हैं तो वहीं आम और जामुन के फलदार पौधे भी हैं। इसके साथ-साथ आँवला, तुलसी, गिलोय, सहजन, घृतकुमारी, अर्जुन, अमलतास, बेलपत्र, अशोका जैसे औषधीय पौधे भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। विद्यालय में वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला भी है इसलिए बच्चों को इन पौधों के बारे में जानने और नए नए प्रयोग करने में आसानी रहती है। इसके साथ-साथ बच्चे इन पौधों के औषधीय गुणों से भी लाभान्वित होते हैं और उनके बारे में जानकारी हासिल करते हैं। विद्यालय में फूल और पौधों से युक्त और भी अनेक पार्क हैं जिससे बच्चों को स्वच्छ एवं सुंदर वातावरण में पढ़ने का अवसर उपलब्ध होता है। विद्यालय में एक इको क्लब की स्थापना

की गई है जिसके अंतर्गत बच्चों को पौधे वितरित किए जाते हैं कुछ पौधे विद्यालय में लगाए जाते हैं और कुछ पौधे बच्चों को घर के लिए उपलब्ध करवाए जाते हैं। बच्चे उन पौधों को न केवल घर जाकर लगाते हैं बल्कि उनकी देखभाल भी करते है। समय-समय पर इस बात का ध्यान रखा जाता है कि जो पौधा बच्चे के द्वारा लगाया गया था वह अब किस स्थिति में है। इस प्रकार विद्यालय के बच्चों ने हजारों पौधों को अपने घर, विद्यालय या गाँव में लगाकर उन्हें जीवनदान दिया है।

इस विद्यालय के बच्चे खेलों में भी पीछे नहीं रहे हैं। सत्र 2018-19 में छात्रा नंदिता नैन ने जूडो में जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया तो वहीं अंडर 19 छात्रों की प्रतियोगिता में विद्यालय के बच्चों ने कबड्डी में जिला स्तर पर प्रथम स्थान पाया। इसी तरह विद्यालय में यूथ-पार्लियामेंट की स्थापना की गई है जिसमें विद्यालय के छात्र और छात्राएँ दोनों ही बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। सत्र 2019 में विद्यालय के बच्चों ने यूथ-पार्लियामेंट में जिला स्तर पर तीसरा स्थान प्राप्त किया और निरंतर अपनी संसद के बारे में सीखने और संसद की कार्यप्रणाली को किस प्रकार से चलाया जाता है, उसके बारे में जानने का अवसर प्राप्त किया।

चूँकि यह विद्यालय इस्माइलाबाद कस्बे में स्थित है जो कि कुरुक्षेत्र जिले के अंतर्गत आता है और कुरुक्षेत्र वह धरती है जहाँ पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का अमर सन्देश दिया था। इसी उपलक्ष्य में यहाँ हर वर्ष गीता जयंती का पर्व अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के रूप में मनाया मनाया जाता है। गीता के बारे में जानने, पढ़ने और समझने का यह सबसे अच्छा अवसर भी होता है इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय के बच्चे हर साल शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पर आयोजित अलग-अलग प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं। पिछली बार विद्यालय ने गीता श्लोकोच्चारण तथा गीता प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। विद्यालय इस बात को ध्यान में रखते हुए गीता जयंती पर होने वाली सभी प्रतियोगिताओं में बच्चों को प्रतिनिधि के रूप में भेजता है। इसके साथ-साथ भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित **भारत को जानो** प्रतियोगिता में विद्यालय के बच्चों ने खंड स्तर एवं मंडल स्तर पर अनेक बार प्रथम स्थान प्राप्त किया है। हरियाणा शिक्षा परियोजना परिषद की ओर से आयोजित 'स्पैल बी' 2019 प्रतियोगिता में विद्यालय के बच्चों ने प्रतिभागिता की और खंड स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा जिला स्तर प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान सुनिश्चित किया।

विद्यालय में लीगल लिटरेसी क्लब की भी स्थापना की गई है जिसके अंतर्गत बच्चों को समय-समय पर प्रार्थना सभा में अनेक वैधानिक प्रावधानों की जानकारियाँ प्रदान की जाती हैं और उनके अधिकार और उनके कर्तव्य के बारे में बच्चे इस क्लब के माध्यम से जानते हैं। साथ-साथ समाज में होने वाले अनेक प्रकार के अपराधों और

उसके बारे में भी कानूनों की जानकारी दी जाती है यही कारण है कि जब एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता लीगल लिटरेसी क्लब की ओर से की गई तो उसमें विद्यालय के बच्चों ने जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया और अंबाला मंडल में तीसरे स्थान पर रहे।

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रिक देश है जिसमें मताधिकार का प्रयोग बहुत महत्त्व रखता है। अपने मत के प्रति बड़े होकर बच्चे किस प्रकार से उसका प्रयोग करें इसके लिए उनके अंदर जागरूकता उत्पन्न करने के लिए एक मतदाता जागरूकता क्लब की भी स्थापना की गई है। इसमें समय समय पर विशेषज्ञों को बुलाकर भारतीय निर्वाचन प्रणाली की जानकारी बच्चों को दी जाती है। उन्हें बड़े होकर किस प्रकार से अपने मताधिकार का प्रयोग करना है और उनके माता-पिता किस प्रकार से अपने मताधिकार का प्रयोग करें इसके लिए उन्हें जागरूक करने हेतु यह क्लब बहुत अच्छी भूमिका निभा रहा है। इसके साथ-साथ जब हम सड़कों पर देखते हैं तो बहुत सी दुर्घटनाएँ ऐसी होती हैं जिनमें यातायात के नियमों का सही रूप से पालन न करने के कारण ये घटनाएँ घटती हैं। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय में **सड़क सुरक्षा क्लब** की भी स्थापना की गई है जिसके अंतर्गत बच्चों को सड़क पर चलते समय किन-किन नियमों का पालन करना चाहिए, मोटरसाइकिल चलाते समय हेलमेट का प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए, सड़क पर चलते हुए सुरक्षित रहने के लिए कौन-कौन से नियम हैं, हम उनका पालन किस प्रकार से कर सकते है, इन सब बातों की जानकारी दी जाती है। यह जानकारी कई बार जिला स्तर पर भेजे गए ट्रैफिक इंचार्ज विद्यालय में आकर बच्चों को प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालय में बालिका-मंच की भी स्थापना की गई है जिसमें छात्राओं की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अध्यापिकाएँ प्रत्येक सप्ताह में उनकी एक बैठक बुलाती हैं और छात्राओं की समस्याओं से अवगत होकर उनके निराकरण का उपाय उन्हें बताती हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि प्राचार्य श्री अजायब सिंह के नेतृत्व में यह विद्यालय हर क्षेत्र में नित नये कीर्तिमान स्थापित कर रहा है और दूसरे सरकारी विद्यालयों के लिए एक आदर्श रूप में सामने आया है।

हिंदी-प्राध्यापकद्वय
राजकीय आदर्श संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
इस्माइलाबाद, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

प्यारे विज्ञान अध्यापक साथियो! आप भी अपने विद्यार्थियों के साथ नवाचारी गतिविधियों के माध्यम से जुड़े हैं व उनका 'विज्ञान करके सीखो' विधि द्वारा ज्ञानवर्धन कर रहे हैं। इसी शृंखला में कुछ नई रोचक विज्ञान गतिविधियाँ जो विद्यार्थियों को करवायी जा सकती हैं, इस कड़ी में शामिल कर रहा हूँ।

1. सौर-ऊष्मा द्वारा पत्तों से पानी प्राप्त करना

पत्तों में रंध्र होते हैं और पत्ते वाष्पोत्सर्जन क्रिया रंध्रों द्वारा ही सम्पन्न करते हैं। जबकि टूटी हुई पत्तियाँ सूख जाती हैं उनका पानी कहाँ जाता है? इसी तरह सोचते हुए बच्चों ने एक नया विचार उपजाया व उस पर कार्यवाही की। उन्होंने सोचा कि क्यों न हम इस विचारोत्पन्न नवाचारी विधि से पत्तों से पानी निकाल कर देखें। इसके लिए बच्चों ने एक 2 घन फुट का एक गड्ढा तैयार किया फिर उस गड्ढे में आसपास से हरे भरे पौधों व पेड़ों की पत्तियाँ उस गड्ढे में लगाई यानी भर दीं। पत्तियों के बीच में एक धातु का कटोरा रखा और गड्ढे को एक पॉलीथिन से ढक दिया। पॉलीथिन के किनारों को ईंटों आदि से दबा दिया। जिससे कोई रिसाव न हो सके। सूर्य की धूप में पॉलिथीन के कारण गड्ढे के अंदर का तापमान पौधा घर प्रभाव के कारण बढ़ गया। पत्तियों से जल वाष्प रूप में निकलकर पॉलिथीन पर जमा होने लगी और संघनन के पश्चात पानी में बदल कर उस कटोरे में गिरने लगी। पॉलीथिन के बीचो-बीच एक छोटा-सा ढेला रख दिया गया था जिससे पूरे पॉलिथीन का झुकाव शंक्वाकार स्थिति में मध्य में आ गया था। पानी की बूँदें ढलान से फिसल फिसल कर उस कटोरे में एकत्र हो रही थीं। थोड़ी देर के बाद कटोरा पानी से भर गया, जब उस एकत्रित हुए पानी को टेस्ट किया व सूँघा तो उसमें से वैसी ही गंध आयी जैसी पत्तों में से आ रही थी। इसके बाद तो बच्चों ने तुलसी, पुदीना आदि औषधीय पौधों के वाष्पित जल/अर्क भी इसी प्रकार से निकाले। बच्चों ने पानी एकत्र करने की इस विधि को 'आपदा में पानी प्राप्त करना' तथा 'पत्ते का अर्क निकालिए' विधि रखा। इस विधि को देखकर सभी अचंभित हुए।

2.खुद की ऊँचाई ज्ञात करना व ग्राफीय निरूपण करना

कक्षा छह के बच्चों को उनकी विज्ञान की नोटबुक पर एक 4 समान खानों वाला वर्ग बनवाया गया। जिसमें प्रत्येक खाने में अप्रैल, अगस्त, नवम्बर व मार्च महीनों के नाम लिखवाए गये। बच्चे उत्सुकतावश यह जानना चाह रहे थे कि सर इन खानों में क्या लिखना है? तब

उन्हें कहा कि आओ, हम आपकी कक्षा में दीवार पर एक स्केल बनाते हैं। इस स्केल पर हम सेंटीमीटर व इंच के निशान लगाएँगे। बच्चों की सहायता से दरवाजे के साथ एक स्केल काले स्केच पेन से बनाई गई। जिसमें स्केल के एक तरफ 180 सेंटीमीटर व दूसरी तरफ 71 इंच के निशान मार्क किए गए। बच्चे यह देखकर समझ गए थे

कि इससे हमारी ऊँचाई (हाइट) नापी जाएगी। कक्षा छह में नेहा, विकास व ज्योति को तुरंत प्रशिक्षण दिया गया कि किस तरह से उन्होंने सभी बच्चों की हाइट नापनी है। कक्षा 6 के सभी बच्चों ने साल में 4 बार अपनी ऊँचाई माप कर इन खानों में लिखी। अगले साल सबने देखा कि हम कितने लंबे हो गए हैं। बच्चों ने साल भर की अपनी बढ़ती ऊँचाई का ग्राफीय निरूपण भी किया।

3. मोमबत्ती की ज्वाला के भागों के पैटर्न बनाना

मोमबत्ती की ज्वाला का अध्ययन करना एक बहुत

उपयोगी विज्ञान गतिविधि है। इसके विभिन्न भागों को ज्वाला के सीधे अवलोकन से या फिर काँच की प्लेट/पट्टी से भी सीखा जा सकता है। जब मोमबत्ती की ज्वाला स्थिर हो तो ज्वाला के दीप्त क्षेत्र में एक स्वच्छ काँच की प्लेट/स्लाइड प्रविष्ट करवायी गयी व उसे लगभग 10 सेकिंड तक पकड़े रखा फिर उसे हटा लिया। सभी बच्चों ने देखा कि काँच की प्लेट/स्लाइड पर एक गोल काला वलय बन गया है। यह ज्वाला के दीप्त क्षेत्र में उपस्थित बिना जले कार्बन कणों के जमाव को दर्शाता है। इस प्रकार बच्चों को मोमबत्ती की ज्वाला के भाग को एक नवाचारी विधि से समझने का अवसर मिला।

4. गर्म हवा से घूमता सर्पिल

सफेद या रंगीन कागज की एक शीट लीजिए। इस पर फोटो में दर्शाए अनुसार पेंसिल से एक सर्पिल (स्पाइरल) बनाइए। कागज़ को रेखा से काटिए। चित्र में दर्शाए अनुसार कागज़ काटने के बाद एक धागे स बाँध कर आयरन स्टैंड पर या कोई लंबी कील पर जलती हुई मोमबत्ती के ऊपर लटकाइए। स्पाइरल घूमने लगता है। इसकी व्याख्या इस प्रकार से है- मोमबत्ती की ज्वाला के सम्पर्क में आने वाली वायु गर्म होकर ऊपर उठने लगती है। गर्म व सामान्य वायु के बीच वायु लहरों से बनी गतिज ऊर्जा स्पाइरल को घुमाने लगती हैं। ध्यान

रखिए! सर्पिल का निचला भाग ज्वाला के ठीक ऊपर इतनी ऊँचाई पर हो कि उसमें आग न लगे।

5. गिलास में से गिलास बाहर निकालो

यह वायुमण्डलीय दबाव पर आधारित एक विज्ञान गतिविधि है। इसमें कुल दो, एक बड़ा व एक छोटा स्टेनलेस स्टील का गिलास लेते हैं। बड़े गिलास में छोटे गिलास को 80% तक डाल देते हैं। अब शर्त यह है कि बिना हाथ हिलाए बड़े गिलास में से छोटे गिलास को बाहर निकालना है।

दोनों गिलासों के अंदर वाली जगह पर वायुमंडलीय दबाव बढ़ाने के लिए हम दोनों गिलास के बीच में जो गैप है, उसमें अपने मुँह से फूँक मारते हैं। जब हवा बड़े गिलास के भीतर जाती है तो दोनों की गिलासों के बीच का वायुमंडलीय दबाव अधिक हो जाता है और छोटे गिलास के भीतर वायुमंडलीय दबाव कम हो जाता है। जिस कारण अंदर से वायुदबाव गिलास को बाहर की तरफ धकेलता है और गिलास बिना किसी हलचल के बाहर आ जाता है।

आशा करता हूँ कि आप को ऊपर वर्णित विज्ञान गतिविधियाँ अच्छी लगी होंगी और निकट भविष्य में आप विद्यार्थियों को ये विज्ञान गतिविधियाँ भी करवाएँगे।

तो मिलते हैं अगले अंक में, कुछ अन्य विज्ञान की रोचक गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक सह विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड- जगाधरी
जिला- यमुनानगर, हरियाणा

परीक्षा में अंकों का महत्त्व

आज रमेश बहुत उदास था, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे । वह अपने आप से लड़ रहा था। कभी उसे गुस्सा आता तो कभी वह कुछ शान्त होते हुए अपने आप को समझाने का प्रयास करता । लेकिन उसे कुछ सूझ नहीं रहा था । आशा के अनुरूप दसवीं की परीक्षा में अंक न आने से उसे भविष्य अंधकारमय नजर आने लगा। बार-बार एक ही बात उसके मन में आ रही थी कि वह घर वालों को क्या बताएगा। मैरिट में स्थान पाने का उसका सपना चकनाचूर होने से वह बहुत दुःखी हो गया। स्कूल के शिक्षकों को भी उसकी काबलियत पर गर्व था।

वह भारी मन से धीरे-धीरे अपने घर की तरफ जा रहा था। रास्ते में उसे धनपत, श्याम और वीरेन्द्र मिले, तीनों बहुत खुश थे। परीक्षा उत्तीर्ण करने की खुशी उनके चेहरों पर साफ झलक रही थी। उन्होंने रमेश की उदासी का कारण जानना चाहा, लेकिन रमेश उनकी बात का उत्तर दिए बिना ही अपने गंतव्य की तरफ चल पडा। उसे तो शिक्षा परीक्षा सब ढकोसला नजर आ रही थी। इतनी मेहनत के बाद भी पूरे अंक न मिलने के लिए कभी वह अपने आप को, तो कभी परीक्षकों को कोस रहा था। उसके पिता जी ने उसे पढाने के लिए क्या-क्या नहीं किया। थके-हारे पिता जी जब शाम को घर आते तो रमेश को पढ़ते हुए देखते तो उनकी सारी थकान मिट जाती और वे अक्सर माँ को कहते- मेरा रमेश मेरा नाम रोशन करेगा और माँ भी अपना हक जताते हुए गर्व से कहती बेटा किसका है, मैं इसके खिलाने-पिलाने में कौन सी कसर छोडती हूँ। आज रमेश को माँ और पिता जी के यही आशीर्वाद के शब्द तीर की तरह चुभ रहे थे।

किंकर्तव्यविमूढ़ रमेश एक जानी पहचानी आवाज सुन कर ठिठक गया। उसने अपने सामने अपने हैडमास्टर को खड़ा पाया।

अरे बेटा! कहाँ खोये हुए हो। मैं तो कितनी देर से तुम्हें आवाज दे रहा था । अरे हाँ, आज तो तुम्हारा रिजल्ट आया है ना? तुम तो हमारे स्कूल का गौरव और सम्मान हो। तुम्हारी कितने नम्बर आए हैं, मैरिट में कौन सा नम्बर आया? -हैडमास्टर साहब ने एक ही साँस में कई प्रश्न कर डाले। पर रमेश के पास इनका कोई जवाब नहीं था। आँसुओं से भीगा उसका चेहरा देख कर हैडमास्टर साहब कुछ समझ नहीं पाए। उन्होंने गम्भीर होते हुए रमेश से पूछा- बेटा क्या बात हो गई? रमेश ने रुँधे गले से बताया- गुरु जी मैं मैरिट में नहीं आ सका। मेरे सारे सपने चकनाचूर हो गए। अब मैं घर क्या मुँह दिखाऊँगा।

हैडमास्टर साहब सब समझ गए। उन्होंने रमेश की मनोदशा को देखते हुए उसे अपने साथ चलने को कहा। एक एकांत स्थान पर जाकर उन्होंने उससे सारी बात पूछी। सारी बात जानकर उन्होंने रमेश को समझाया- बेटा, परीक्षा-शिक्षा को अंकों से नहीं तोला जाता। तुम तो आज भी हमारे स्कूल के सिरमौर हो। बेशक तुम मैरिट में न आए हो पर तुम असफल भी नहीं हो। तुमने अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन का नाम तो सुना होगा। उन्होंने बहुत मेहनत की और कई बार उन्हें असफलता का सामना भी करना पडा, लेकिन उन्होंने कभी हार नहीं मानी। उनकी कहानी भी बडी दिलचस्प है। वे 21 वर्ष की उम्र में असफल हुए, फिर 22 वर्ष की उम्र में चुनाव हार गए। 26 वर्ष की आयु में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। उसके बाद उनका मानसिक संतुलन भी खराब हो गया। वे उम्र के 34वें साल में कांग्रेस का चुनाव हार गए। 45 वे साल में सीनेट का चुनाव हार गए और वे उपराष्ट्रपति न बन सके। 49 वर्ष की उम्र में फिर सीनेट का चुनाव हार गए। लेकिन हार उनके लिए एक पल की बाधा थी, कोई अन्त नहीं था और वे 52 वर्ष की आयु में अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए।

क्या तुम उन्हें असफल कहोगे। अगर वे अपनी सफलता का आकलन अपनी असफलता से करते तो क्या वे इतने ऊँचे पद पर पहुँच पाते। उसे हैडमास्टर साहब की ये बातें अच्छी लगीं और उसका मन कुछ शान्त होने लगा।

हैडमास्टर साहब ने कहा- रमेश, शिक्षा मतलब किताबी ज्ञान ही नहीं है। परीक्षा में प्राप्त किए गए नम्बर ही सब कुछ नहीं होते। शिक्षा वह है जिसमें हमारी प्रकृति प्रदत्त शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक शक्तियाँ पूर्ण विकसित होकर हमें सफल जीवन व्यतीत करने में समर्थ करती हैं । शिक्षा में सात्विक बुद्धित्व का विकसित होना बहुत जरूरी है। आदर्श शिक्षा के अंतर्गत चरित्र निर्माण, समाजसेवा, स्वावलम्बन, आत्मविश्वास एवं स्वाध्याय का विशेष महत्त्व है। शिक्षा से जीवन के नैसर्गिक भावों को प्रोत्साहन मिलता है। बिना पूर्ण ज्ञान के प्राप्त परीक्षा के नम्बरों का कोई मोल नहीं होता। परन्तु रमेश तुम नम्बरों के चक्कर में पड़ कर ऐसा क्यों सोच बैठे? तुम अब भी सब कुछ कर सकते हो। नम्बरों की यह लक्ष्मण-रेखा तुम्हें आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती।

अब रमेश अपने आप को रोक नहीं सका और हैडमास्टर साहब के चरणों की तरफ हाथ बढ़ाते हुए बोला- गुरु जी आज आपने मुझे बचा लिया। अगर आप न मिलते तो मैं कुछ भी कर लेता। मैं मेहनत करूँगा, पढूँगा और अपने पिता जी का सपना साकार करूँगा।

अपने प्रिय शिष्य की बात सुन कर उन्होंने उसे गले से लगा लिया और मन ही मन ईश्वर से उसकी सफलता की कामना करने लगे।

जगदीश श्योराण
सहायक सचिव (सेवानिवृत्त)
हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी
निवास- आजाद नगर, हिसार, हरियाणा

हर दिन, हर पल आगे कैसे बढ़ें

ज़िंदगी ईश्वर का अनमोल तोहफ़ा है, इसे भरपूर सकारात्मकता के भाव से जीयें और प्रत्येक दिन को एक मिशन की तरह लेकर चलें तो हर दिन, हर पल, कुछ नई उपलब्धि प्राप्त करेंगे। इसी आदत से ज़िंदगी आसान लगने लगेगी। अपना कर्तव्य ईमानदारी व पूरी निष्ठा से अगर हम निभा लेते हैं तो आत्मसंतुष्टि तो मिलेगी ही, अपने जीवन को भी हम सार्थक कर सकेंगे।

प्रकृति का नियम है कि इंसान जो बोता है, वही काटता है। आज की मेहनत हमें कल सफलता की ओर अग्रसर करेगी। अतः एक लक्ष्य निर्धारित करें। पूरे मन से प्रयास करें जिसके लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दें। भविष्य में सफल होने के कई रास्ते हैं लेकिन सफल लोगों में एक बात समान होती है कि वे कुछ ख़ास आदतें विकसित कर लेते हैं। कल्पना को साकार करने के लिए इच्छाशक्ति का होना अति आवश्यक है। किसी काम को करने के लिए हमारा मन, बुद्धि व इच्छा निश्चय कर लें तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है। कुछ लोग अपने आप ठोकर खाकर सीखते हैं। हर चीज़ को अपने आप अनुभव करके सीखने के लिए यह ज़िंदगी पर्याप्त नहीं है। इसलिए हमें दूसरे के अनुभवों से भी सीखना बहुत ज़रूरी है। अतः हमें समय के महत्त्व को समझना चाहिए। जब समय होता है तो हम उसकी क़दर नहीं करते और जब समय निकल जाता है तो समझ आती है। आज अभी यही क्षण मेरा है, इसी बात का विश्वास मन में रखें और प्रत्येक कार्य को पूरी लगन, ख़ुशी व हौसले के साथ करें। निर्णय जो भी होगा, अच्छा होगा। अगर अच्छा नहीं भी होता, तो अनुभव तो होगा। कोशिश में दोबारा लग जाएँ।

अपने आसपास के माहौल में हम सिर्फ़ उन्हीं व्यक्तियों को रखें, जो हमारे लक्ष्य में व्यवधान न डालें। बहुत सी कहानियाँ हैं, जिनसे सही जीवन जीने की सीख मिलती है। जब ख़ाली समय मिले तो ज्ञानवर्धक किताबें पढ़ें। सही खानपान और नियमित रूप से व्यायाम करके, हम अपनी ऊर्जा के स्तर को बढ़ा सकते हैं। छोटे-छोटे सकारात्मक लक्ष्य बनाए, उन पर एक सप्ताह चलें, फिर इसकी अवधि को बढ़ाते जाएं। अपने ज्ञान को दिन प्रतिदिन बढ़ाते जाएँ। आलोचना को भी चैलेंज समझ कर स्वीकार करें। नज़र अपने लक्ष्य पर रखें।

प्रत्येक कार्य का प्रारंभ, नई सोच से करें। अपना व्यवहार अच्छा रखें। कभी भी दूसरों की आलोचना से परेशान न हो। घर, परिवार व अपने साथियों की भी मदद करें। व्यर्थ की बातों में, अपना क़ीमती समय बर्बाद कदापि न करें। अब जीवन का मक़सद खोजना बहुत ज़रूरी है इसलिए उत्साहित हो कर अपने कार्य में तल्लीन रहें और अपनी पीठ को स्वयं ही थपथपायें। प्रत्येक कार्य को जिम्मेवारी से निभाएँ। सही दिशा में कार्य करें। ख़ुद पर व ईश्वर पर भरोसा रखें। अपनी पढ़ाई के साथ साथ अपने शौक को भी समय अवश्य दें। इससे आप भरपूर जोश में रहेंगे और यही जोश, उत्साह आपको आपके लक्ष्य तक ले जाएगा। किसी को बदलने में समय बर्बाद मत करें स्वयं अपना नजरिया बदलें।

सूर्य प्रतिदिन उदय होने के बाद यही संदेश देता है कि आज ही है, जो करना है कर लो। कल तो कभी नहीं आएगा। इसलिए सजगता यानी अवेयरनेस ही, जीवन को दिशा देती है जीवन का कोई भी निर्णय हम उस स्थिति में नहीं लें जब हम कन्फ्यूज़ हों। किसी भी निर्णय पर पहुँचने के लिए हमें दूरदर्शिता को भी ध्यान में रखना चाहिए ताकि भविष्य में बीते हुए समय का पछतावा न हों। अधिक कल्पना करने वाला और भावुक व्यक्ति हमेशा परेशानियों का सामना करता है। इसलिए जो भी निर्णय लें सोच समझकर कर लें। बड़ों की राय के साथ ले। टाइम का मैनेजमेंट अवश्य करें। ईश्वर भी सिर्फ़ उन्हीं की मदद करते हैं जो स्वयं अपनी मदद करता है। अगर आप आज मज़बूत नींव बना लेंगे तो दुनिया की हर चुनौती का सामना कर सकेंगे। अपने पर विश्वास होना अति आवश्यक है।

हिम्मत कर इंसान, तो क्या हो नहीं सकता,
ये जान ले नादान तो क्या हो नहीं सकता।

इसी भावना के साथ हम प्रेरित होकर अपने दिन की शुरुआत करें और एक-एक दिन को, अपनी ज़िंदगी में सार्थक करते जाएँ, कुछ नया सीखते जायें।

इन्द्रा बेनीवाल
उपनिदेशक माध्यमिक शिक्षा विभाग
हरियाणा

2020

नवंबर-दिसंबर माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 नवंबर- हरियाणा दिवस
4 नवंबर- करवा चौथ
7 नवंबर- राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस
11 नवंबर- राष्ट्रीय शिक्षा दिवस
14 नवंबर- दीपावली, बाल दिवस
15 नवंबर- विश्वकर्मा दिवस एवं गोवर्धन पूजा
16 नवंबर- अंतरराष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस
19 नवंबर- इंदिरा गांधी जन्मदिवस
20 नवंबर- छठ पूजा
24 नवंबर- गुरु तेगबहादुर शहीदी दिवस
30 नवंबर- गुरु नानक जयंती
1 दिसंबर- विश्व एड्स दिवस
3 दिसंबर- विश्व दिव्यांग दिवस
10 दिसंबर - मानवाधिकार दिवस
16 दिसंबर- विजय दिवस
18 दिसंबर - अन्तरराष्ट्रीय प्रवासी दिवस
25 दिसंबर - क्रिसमस
26 दिसंबर - शहीद उधम सिंह जयन्ती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Teacher accountability: Non-teaching work over classroom engagement

Indira Patil

While the Right to Education Act, 2009 mandates 200 days of teaching for primary classes, the actual number seems to be much lower in government schools. Based on qualitative fieldwork and a survey in Udaipur district of Rajasthan, Indira Patil discusses why government-school teachers prioritise non-teaching work over classroom engagement, and how this impacts school choices of parents.

The Right to Education Act, 2009 (RTE) mandates 200 days of teaching for primary classes. However, the actual number of days of teaching for primary classes in government schools seems to be much lower than that prescribed by the RTE. One of the major reasons for low classroom teaching is the high non-teaching work burden that keeps teachers outside the classroom during teaching hours.

Based on qualitative fieldwork, and a quantitative survey of over 100 teachers and principals across 40 gov-

ernment and low-fee private (LFP) schools in Udaipur district of the state of Rajasthan – conducted as part of a research study called Researching Accountability in the Indian System of Education (RAISE) – I discuss why teachers prioritise non-teaching work, and how this affects classroom engagement (or teaching) time and in turn, school choices of parents.

Reduced classroom engagement time

Classroom engagement time can be understood as the time spent by teachers on teaching and engaging with students in the classroom. Two aspects determine the classroom engagement time – the number of working days of the school, and number of hours spent by the teacher in the classroom on each working day.

The annual academic calendar of 2019-20, published by the Department of Education of the state government of Rajasthan, prescribes 206 working days for schools other than celebration days. During the academic year from May 2019 to April 2020, two elections – the general elections at the national level and panchayat elections at the village level – were held in Rajasthan. Government-school teachers were appointed as booth-level officers and were given training for election duty. Also, schools served as voting booths and were closed for a few days for security and setting up purposes. Thus, schools were not functional for a total of about 10 days during each of these elections. Combined with the week of exams, there were less than 200 working days for teaching and classroom engagement.

Further, the annual academic calendar mandates daily teaching of 4 hours during April-September (summer schedule) and 5 hours during October-March (winter schedule). It prescribes the following timetable for schools during the winter schedule:

However, the actual time spent teaching seems to be much lower. Below are excerpts from classroom ob-

Table 1. Winter timetable as prescribed by the annual academic calendar (Department of Education, Rajasthan)

Assembly	10 AM – 10:25 AM
Classes (4 sessions of 40 minutes each)	10:25 AM – 1:05 PM
Midday meal	1:05 PM – 1:30 PM
Classes (2 sessions of 40 minutes each, and 2 sessions of 35 minutes each)	1:30 PM – 4 PM

Table 2. A typical day in government school in Chikpur

Assembly	10:15 AM – 10:45 AM
Cleaning classrooms	10:45 AM – 11 AM
Milk served	11 AM – 11:30 AM
Classes	11:30 AM – 1 PM
Midday meal	1 PM – 2 PM
Classes	2 PM – 3:15 PM
Sports	3:15 PM – 3:45 PM

servations of grade 5 in a government school in Chikpur1 village:

Day 1: Teachers arrive in school at 10:15 AM. Students keep arriving until 10:30 AM, even after the start of the assembly. The assembly begins at 10:20 AM and goes on till 10:50 AM. After the assembly, students of grades 1 to 5 are asked to sit together and watch 'TV' (the smart board, which is an interactive digital board, is referred to as 'TV')2 The teacher says he has to document the textbook requirement for the next academic year and today is the last day for sending it.

The students are cramped inside the classroom, with a few of them changing lessons on the smart board, others playing and running around, and few others reading and writing. The classroom is chaotic. At 11:20 AM, a grade 6 boy asks students to come and drink milk. The students run out of the classroom immediately, and return at 11:50 AM. A few students are playing outside. After some time, the teacher enters the class and asks students to maintain silence. He informs them that no teaching will take place today as he would be going to the block office to submit some documents. By this point, many students are playing outside, with only a few watching the smart board, while others are reading, writing or playing indoors. The school has a lunch break between 1 PM and 2 PM. Student attendance has now reduced and the students who are present are mostly playing and running around. The students leave at 3:30 PM while the teachers leave at 3:50 PM.

Day 2 : The scenario is slightly

different from the previous day. The teacher is documenting the height and weight of students in primary classes during the pre-lunch session. A few students of grades 1 to 5 are seen playing in the corridor while others are watching the smart board. After lunch, the teacher engages with the class for an hour from 2 PM to 3 PM and thereafter asks students to play sports.

When discussing a typical day at a government school in Chikpur, a teacher said "School starts at 10 AM. Till 11:30 AM, we have the assembly prayers, cleaning, and milk provisioning. We then have classes till 1 PM, along with supervising the preparation of the midday meal. Meanwhile, if we receive any WhatsApp messages from officials of the Education Department such as the Block Education Officer, District Education Officer, etc., with tasks for us, then we complete the assigned work (such as providing data regarding school management, or fund utilisation, midday meal expenditure) and send it across. Then, from 1 PM to 1:30 PM we have the midday meal, which often ends by 2 PM, and class then goes on till 3 PM. After 3 PM, we mostly leave students to play as they do not feel like sitting in the classroom."

On both days, teachers were involved in documentation work during classroom hours and spent very little time in the classroom. Similar observations were recorded in other government schools across Udaipur during both qualitative and quantitative phases of the study.

Classroom teaching takes place for about 2.5-3 hours a day, that is, around 50-60% of the prescribed time. Thus, total classroom engagement time is much lower than that mandated by the RTE. As observed, non-teaching work burden is one of the main reasons for low classroom engagement. It is possible that teachers have a tendency to cite non-teaching work as an excuse for not engaging with students in the classroom, during the hours prescribed for this purpose. However, the extent of non-teaching work burden cannot be ignored.

Why teachers prioritise non-teaching work

When talking to a government-school teacher from Dholpur village, he said "When officials visit the school, they check whether milk has been served and whether the midday meal has been prepared and served at the school. The emphasis is not on whether Math or Hindi class took place on the day. Every day we spend 2-3 hours ensuring that milk and food are served. One day there is no cylinder, another day there are no groceries, another day there is no milk. One way or another, we have to ensure that milk and food are served. This inevitably becomes our priority over taking classes".

During this conversation, he received a forwarded message on WhatsApp from the Panchayat Elementary Education Officer seeking data on the number of teachers appointed and teacher vacancies at the school.

When asked about the frequency of administrative orders and circulars that are received via WhatsApp messages, a government-school principal in Sanpur village said, "We receive a circular every alternate day. The data are available online, but officials find it convenient to send WhatsApp messages to principals (or teachers) to get the data. For instance, last week, a question was asked during the Legislative Assembly session on the number of teacher vacancies. This information is available online, yet we received a message from the higher officials to send the list of the number of teacher appointments and vacancies in all government schools of the panchayat".

Thus, there seems to be duplication of work, as teachers often engage in compiling and sending data that have already been documented and are avail-

Figure 1. When are non-teaching activities undertaken by government-school teachers?

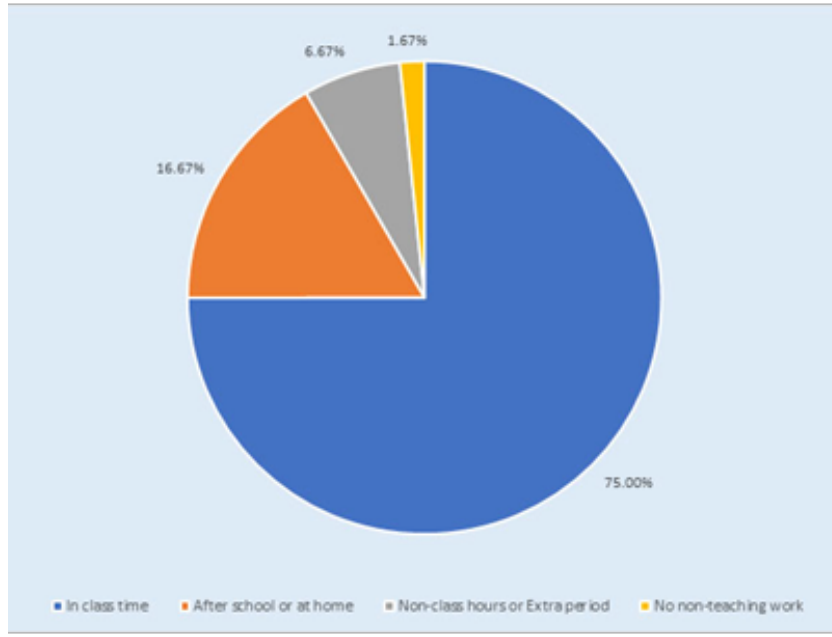

Figure 2. When are non-teaching activities undertaken by low-fee private-school teachers?

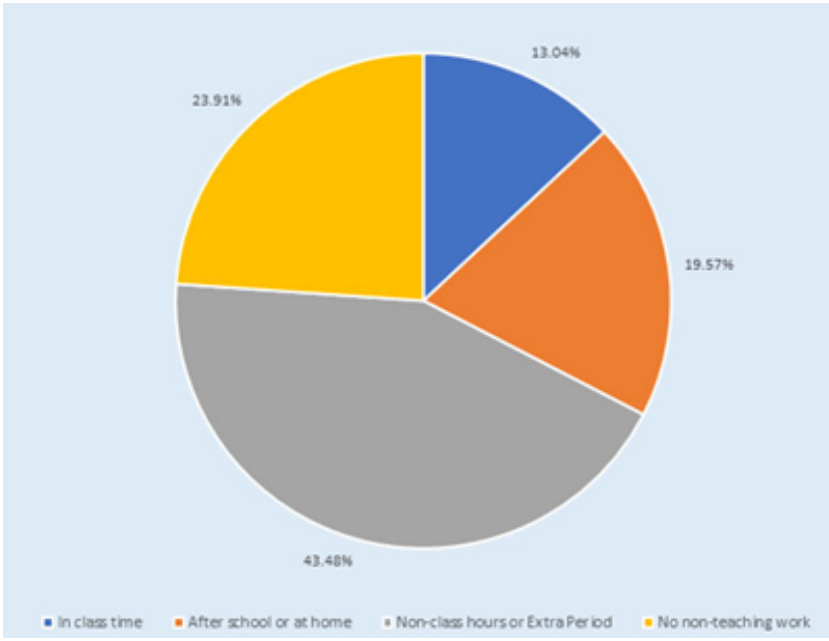

able online or with the officials.

As a government-school teacher from Sanpur village notes, "the common perception is that government-school teachers are complacent and do not work. We work, but we work more like clerks and less like teachers – we keep filling documents and upload data and hence, do not get enough time to teach properly. If you log on to the 'Shala Darpan'3 website at night, you will find thousands of teachers online, filling in data. We undertake paper documentation at school and online documentation at home. There is no working computer at the school or high-speed internet available in the village''.

The ad-hoc distribution of administrative work and the vigilant wait for WhatsApp messages with orders/circulars, is often arduous. According to a government-school principal from Chikpur village, "The moment my phone rings, I think of the WhatsApp message and what it might be about – training, an event, or a data requirement. It is like a sword hanging on our heads". Thus, teachers are held accountable for the completion of non-teaching work rather than classroom engagement time.

Government schools in Udaipur, particularly in rural areas, mainly cater to students from tribal communities, who are mostly first-generation learners. The limited presence and engagement of teachers in the classroom because of non-teaching work delays the completion of lessons and adversely affects the learning of students. This further exacerbates the existing learning gap of students from disadvantaged communities.

Non-teaching work of government vis-à-vis private school teachers

Figure 1 shows that around 75% of government teachers said they are involved in non-teaching activities during class time. On the other hand, Figure 2 shows that only 13% of teachers in LFP schools said they were involved in non-teaching work4 during class time. While 43.5% of private-school teachers said they engage in non-teaching work during non-class hours or extra classes, 23.9% said they have no non-teaching responsibilities.

Further, 83% of the surveyed government-school principals said that they do non-teaching work during class time. On the other hand, only 6% of private school principals said that they engage in non-teaching work during class time, while 94% of them said that they have distributed the work to teachers who do it during non-class hours or free sessions.

Government-school teachers tend to be better qualified than most teachers in LFP schools. Of the 46 LFP-school teachers surveyed in Udaipur, nearly a quarter of them did not have a teaching degree. In contrast, all of the 60 government-school teachers surveyed had a teaching degree. While all government-school teachers received annual in-service training, LFP school teachers did not receive any kind of in-service training. However, non-teaching work burden results in lower time being spent in classrooms by teachers in government schools than the teachers in private schools.

How classroom engagement drives school choice

It is seen that classroom engagement time is one of the major driving factors for parents to send their children to private schools. Sarita, mother of a grade five student of a Chikpur government school, shared that she was aware of the low classroom engagement at the school and said "no teaching happens in lower classes. Teachers switch on the 'TV' and ask students to watch it. They are busy with paperwork (kagaz likhte rehte hain)."

Further, Manisha from Chikpur village who sends her children to a LFP school in neighbouring Lalpur village,

said "in private schools, the teacher pays attention to students (dhyaan dete hain), is present in the class (class mein rehte hain) and students are in the school (bachhe school mein rehte hain)". Thus, greater engagement and not 'quality' of engagement is driving the school choice of families towards LFP schools.

Way forward: Prioritising classroom engagement

The newly drafted National Education Policy acknowledges non-teaching duties as one of the biggest challenges for teachers and says that "aside from the minimal Supreme Court directives related to election duty and conducting surveys, teachers will not be requested nor allowed to participate in any non-teaching activities during school hours that affect their capacities as teachers."

The non-teaching work largely involves school management, data collection, and documentation, with duplication and redundancy in many instances. The intermittent distribution of non-teaching work through the day and the pressure to be ready to act on the calls of higher authorities often burden the teachers and affect their ability to devote time to the primary role of teaching.

It is important that policymakers and bureaucrats at the higher echelons consider how duplication and redundancy may be reduced in processes, while allotting or directing non-teaching work to teachers. Also, there is a need to recruit a greater number of non-teaching staff in schools for undertaking administrative work. In cases, where documentation is online, offline documentation must be eliminated. In rural schools, where there is no/limited internet connectivity and IT resources, these must be provided, and offline documentation may be allowed. Where data are already available, schools must not be asked to compile and send it. Moreover, teachers must be primarily held accountable for their classroom engagement over other non-teaching activities.

Notes:

1. All names of localities and individuals have been anonymised to protect identities.
2. The students (including parents) refer to the smart board as 'TV', indicative of its perception as a means of entertainment through sound and visual effects to engage students. The lessons are in English and Hindi – many words/phrases are incomprehensible by students, as these are not used locally (where they speak Mewari, the local language). The teachers have not received any training on using the smart board, and do not facilitate understanding of the context of the lessons among the students. Instead, the smart board is used as a substitute to teachers, when they are not present in the classroom and are involved in non-teaching work.
3. 'Shala Darpan' bis an online portal managed by the state government of Rajasthan which serves as a database of information regarding government schools and education offices.
4. The non-teaching activities in LFP schools, as per the teachers, largely involve cultural and extracurricular activities. Some teachers also mentioned notebook-checking, exam paper correction, and maintaining student attendance registers as non-teaching activities. On the other hand, in government schools, non-teaching activities mostly include work related to school management/administration, data documentation as directed by higher authorities, and various government schemes like midday meal, milk provisioning, or distribution of iron tablets.

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/teacher-accountability-non-teaching-work-over-classroom-engagement.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasf

Vidya Bhawan Society, Udaipur
indirapatil32@gmail.com

Elders are a boon of life

Elders are a boon of our life. It is rightly observed that God can't be everywhere at the same time, so he has created elders in the form of grandfather, grandmother, father, mother, uncle, and aunt. Happiest is the man who possesses these relations with him and lives together under one roof with his elders as a family. They all share their joys and pains together; although even the pains if they are together do not matter. Caring elders never let anyone in the family down in any situation. But unluckily, call it the effect of the western culture, modernism or industrialization; some people here in India do also prefer small families. The slogan which was given to control rapid population growth was wrongly taken by these people, and they started thinking that "Hum do aur hamare do" is a complete family. The era of small families in India is a fairly new concept of living but it has not taken the form of a tradition yet.

People seeking employment opportunities in the urban area go and settle themselves in the cities with their wives, but still, many of them have to do this because of their monetary needs to keep life going smoothly. Despite the fact, they can't stay together with their elders, they keep themselves connected with their roots in the joint families. Many people whether they stay in any part of the country or abroad go join their families on special eves like festivals or wedding ceremonies.

The joy can't be explained of being together with family on such occasions. Wealth can't give the happiness which one enjoys when in a joint family. The presence of the elders at home makes everyone feel happy and special. The tensions and worries of the present-day world keep themselves away when we are staying under their blessings. Forget the mistake, if you have already done by separating yourself from a joint family. Your family is yours and it is your right to have the blessings of your elders. They are always joyfully ready to welcome you. Go and enjoy the blessings of your elders.

Shri Bhagwan Bawwa
Lecturer in English
Govt.Sr.Sec.School, Lookhi,
Rewari

Know your Hormones

Hypothalamus is like a Headmaster.
Pituitary is the master gland.
Growth hormones or the others,
All control in its hand.
Pineal brings sound sleep.
Thyroid regulates metabolism in deep.
Thymus sees calcium, phosphates.
With age only it disintegrates.
Adrenal is emergency gland,
Makes us ready before hand.
Pancreas both exo and endocrine,
Maintains sugar level very fine.
Testes give sperms and male traits.
Ovary eggs and female characters combine.

Jyotsna Kalkal
Lecturer Chemistry
Gurugram

The Rainbow Without a Hue

The rainbow, it is such a fantasy,
I bet, just look at it, you would be in ecstasy,
Such a masterpiece you would see,
Not every artist's cup of tea.

But folks, do consider my view,
What if the rainbow was without a hue?
Be it red, orange, green or blue!
Would you like it? Tell me who?

All you get is a monochromatic band,
Tales of the hidden pot of gold, will now never stand.
What was the heavenly bridge in the sky,
Is now just a hanging thread in the sky.

'Who is superior, violet or red?
Who are you to judge!' Nature says.
She says, 'Every colour adds its own grace,
Only then would the sky love to embrace
The lovely coloured rainbow lace.'

Nature says, 'Who is superior, fair or dark?
Who are you? Be it Tom, Dick, Harry or Mark?
Every colour adds its own grace,
Don't be judgemental on race!
Never undermine any beauty, have an open hand,
Else the world would become ugly,
like that monochromatic band!'

Atharv Shira
Class-10th
St. Kabir Public School, Sector-26
Chandigarh

Compendium of Academic Courses After +2

TEXTILE ENGINEERING

Introduction

Textile engineering courses deal with the application of scientific and engineering principles to the design and control of all aspects of fibres, textiles, and apparel processes, products, and machinery.

Institutes/Universities

1. Government SKSJ Technological Institute, K R Circle, Bengaluru
2. College of Textile Technology, Behrampur, Murshidabad
3. Institute of Textile Technology, Cuttack, Odisha
4. Indian Institute of Technology, Delhi
5. Government Central Textile Institute, Kanpur.
6. South Gujarat University, College of Engineering & Technology, Surat, Gujarat.
7. University of Bombay, Department of Chemical Technology, Mumbai, Maharashtra

Eligibility

- 10th / 12th for Diploma in Textile Engineering
- 10+2 with PCM for B.E. / B. Tech.
- B. E. /B. Tech for M. Tech / Post Graduate Diploma in Textile

Courses

- 1. 3 year Diploma course in Textile Engineering/ Textile Chemical Processing Technology (DCTPT), Textile Colour and Design (DTCD)
- 2. B.E./ B. Tech in Textile Engg. / Textile chemistry / Textile Technology / Textile plant Engineering.
- 3. M. Tech in Textile / Post Graduate Diploma in Textile Chemical Processing (PGDTCP)

AGRICULTURAL SCIENCE

Introduction

Agricultural Science is the study of

production of food and other goods i.e. plants and living organisms in a systematic and controlled manner. This field incorporates management of farms, horticulture and agri-business activities. It also gives insights of agrarian scenario of the country and its agriculture industry that manufacture agricultural machinery and equipment and is involved in procurement and processing of agri-products. It also studies banking activities for financing and developing farms, research and development for the purpose of improving capacity and quality of farm products and so on.

Agricultural science students can specialize in agricultural production and livestock.

Certificate/Diploma Courses

Eligibility - A pass in the Higher Secondary

Examination (10+2) or equivalent with related subjects

1. Diploma in Agriculture
2. Diploma in Horticulture

Eligibility

10+2 or equivalent having passed with Physics, Chemistry, Biology/ Math or Agriculture stream

Institutes/Universities

1. CCS Agriculture University, Hisar, Haryana
2. University of Agricultural Sciences, Bangalore
3. Acharya N G Ranga Agricultural University, Guntur, Andhra Pradesh
4. Andhra University, Visakhapatnam
5. Kerala Agricultural University (KAU), Thrissur, Kerala
6. Tamil Nadu Agricultural University, Coimbatore
7. Dr R Prasad Central Agriculture University, Samastipur, Bihar

UG/PG Courses

1. Bachelor of Science (Honours) in Agriculture
2. Bachelor of Fisheries Science (B.F.Sc.)
3. B. Sc. Food Technology
4. B. Sc. Horticulture
5. B. Tech Biotechnology
6. B. Tech. Agriculture Engineering
7. Master of Science in Agriculture
8. MBA Agri-business
9. M.Sc. Agricultural Biotechnology
10. Master of Science in Agriculture
11. Doctor of Philosophy in Agriculture

BIOLOGICAL SCIENCE

Introduction

Biological Science studies life and living organisms, their life cycles, adaptations and environment. There are various fields of study under the biological sciences including biochemistry, microbiology and evolutionary biology.

Courses

1. Bachelor in Biological Science
2. Master in Biological Science
3. PhD in Biological Science

Eligibility

10+2 with Physics, Chemistry and Biology as compulsory subjects.

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Science Education and Research (IISER), Pune, Maharashtra.
2. Indian Institute of Science Education and Research (IISER), Kolkata, West Bengal.

BIOTECHNOLOGY

Introduction

Biotechnology is utilizing the sciences of biology, chemistry, physics, engineering and information technology to develop tools and products to

apply to living cells/organisms.

Genetic Engineering

Genetic engineering is the study of knowledge obtained from genetics to alter the reproduction and hereditary processes of organisms. It deals in cloning, in-vitro fertilization, species hybridization or direct manipulation of the genetic material itself by the recombinant DNA technique.

Plant Tissue Culture

Functions in the field of in-vitro regeneration and propagation of plantlets, a Tissue Culture specialist may also be involved in plant germ plasma conservation.

Plant Genetics

Activities to improve plants by evolving new horticultural varieties through hybridization, this work is generally carried out in the laboratories.

Eligibility & Courses

1. For B. Sc. Courses: Pass in 10+2 with PCM. (Biology)
2. For M. Sc. Courses: Bachelor's degree under 10+2+3 in Physical, Biological, Agricultural, Veterinary, Fishery Sciences, Pharmacy, Engineering, Technology or Medicine (MBBS)
3. For M. Sc. (Agriculture) Biotechnology/M.Sc. Animal Biotechnology: Bachelor's degree in agriculture, horticulture, forestry, fishery, Veterinary Sciences or Agricultural Engineering.
4. For M Tech Biotechnology : B. Tech degree - in chemical Engineering, Biochemical Engineering, Industrial Biotech (BE), Leather technology, Pharmaceutical Technology, Food Technology, B. Pharma, and Dairy Technology or Master's Botany, Zoology Bio-chemistry, Microbiology, Genetics, Physiology, Pharmacology and Biophysics.

All India Biotechnology Entrance Examination

Jawaharlal Nehru University, New Delhi conducts the Combined Entrance examination for admission to M.Sc./M.Sc. (Agri.)/M.V.Sc.(Animal) Biotech/M. Tech Biotechnology in association with other universities in India. Candidates who have done their B. Sc. In physical, biological, agricultural, veterinary and fishery sciences, pharmacy, engineering, technology or medicine can take up this examination.

Education Abroad

The Ministry of Science and Technology awards the Biotechnology Overseas Associateship for advanced research in molecular biology, microbial genetics, gene therapy, virology, tissue culture and so on.

COMPUTER APPLICATIONS

Introduction

The Computer Applications course is designed to provide the student with the opportunity to expand and apply

technological knowledge.

Courses
1. Diploma in Computer Application
2. Bachelor in Computer Application
3. Master in Computer Application

Eligibility
10+2 or equivalent

Institutes/Universities
1. University of Madras, Chennai
2. Chhatrapati Shahuji Maharaj University, Kanpur,
3. University of Allahabad, Allahabad
4. University of Mumbai, Mumbai
5. National Institute of Electronics & Information Technology, New Delhi
6. Delhi University, Delhi

Note: Computer Application Courses are also offered by various private institutions. Therefore, aspirants are advised to ensure the recognition and approved courses prior to admission.

COMPUTER SCI ENCE

Introduction
Computer science is one of the known courses among engineering aspirants which aims on the basic elements of computer programming and networking. This course includes knowledge of design, implementation and management of information system of both hardware and software. It deals principally with the theory of computation and design of computational systems.

Courses
UG Courses
1. B.E. / B. Tech (Comp. Science, Info. Science, Info Tech)
2. B. Sc. (CS, IT, IS)
3. BCA.

PG Courses
1. ME / M. Tech
2. MCA.
3. M. Sc. (CS, IT)
4. PGDIT, PGDCA, etc.

Doctoral Courses
1. Ph. D

Eligibility
10+2 with (PCM) and followed by Entrance Test

Courses offered by NIELT (DOEACC)
1. A level – Advanced diploma: equal to Bachelor's degree
2. B level – equal to MCA degree
3. C level – equal o M. Tech

Institutes/Universities
1. Indian Institute of Technology Bombay, Mumbai
2. Indian Institute of Technology Delhi
3. Indian Institute of Technology Kanpur
4. Indian Institute of Technology Kharagpur
5. Delhi Technological University, Delhi
6. Indian Institute of Technology Banaras Hindu University, Varanasi
7. Indian Institute of Technology
8. Indian School of Mines Dhanbad,

Jharkhand
9. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

CYBER SECURITY

Introduction

Cyber Security deals with study of possible cyber threats and harms – technical, financial or personal. The course equips the professional to deal with many types of cybercrimes such as copyright breach, hacking, illegal mass-surveillance, computer virus, virtual pestering, identity threats, phishing etc.

The interest in technology, innovative ideas, problem solving prowess, logic & concept are expected from students who wish to join this new and challenging field.

Courses

B. Tech in Cyber Security /B. Tech in Computer Science or IT followed by an M. Tech in either Information Security or Cyber Security.

Eligibility

10+2 Science Stream

Institutes/Universities

1. IIT Hyderabad
2. IIT Delhi
3. IIIT Guwahati
4. IIIT Allahabad
5. AIACT&R, DELHI

EARTH SCIENCES/GEOGRAPHY

Introduction

Earth Sciences deals with study and research in various fields and concepts of Geology, examination and utilization of natural resources their management, sustenance and conservation.

Earth Sciences/Geography, studies climatic/ weather conditions of different regions with periodic developments, their effects, natural resources like water, minerals survey, earth and ocean characteristics and its science, air, rain, clouds and rivers aspects, monitoring of geographical environments, forests and weather forecast. The special study are in this field like Economic & Political Geography, Human Geography, Cultural Geography, Environment and Natural Resources Studies. The other aspects of Geography include Geomorphology, Climatology, Oceanography, Meteorology, Cartography, Geographic Information Systems and other allied areas.

Eligibility

10+2 or equivalent

Courses

1. BA with Geography as a subject
2. BA Honors (Geography)
3. Integrated M. Tech. (Geophysical Technology)
4. Integrated M. Tech. (Geological Technology)
5. M. Tech. Earth Sciences
6. M. Sc. (Applied Geology)
7. M. Phil. Geology
8. M. Phil. Geoinformatics
9. Ph.D. Geology
10. MA Geography
11. M. Sc Geography
12. M. Sc., M.Phil. & Ph. D
13. M. Sc. Geology (Five Year Integrated)
14. M. Sc. Geology (Two Year CBCS)
15. PG Diploma in Petroleum Geoscience
16. PG Diploma in Remote Sensing and GIS

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Technology, Roorkee, Uttarakhand
2. Indian Institute of Science, Bangaluru
3. Bangalore University, Bengaluru
4. Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana,
5. University of Delhi
6. MD University, Rohtak, Haryana
7. Annamalai University, Annamalainagar, Tamil Nadu
8. Indira Gandhi National Open University, New Delhi

(http://www.ignou.ac.in/)

Dr. Deviyani Singh

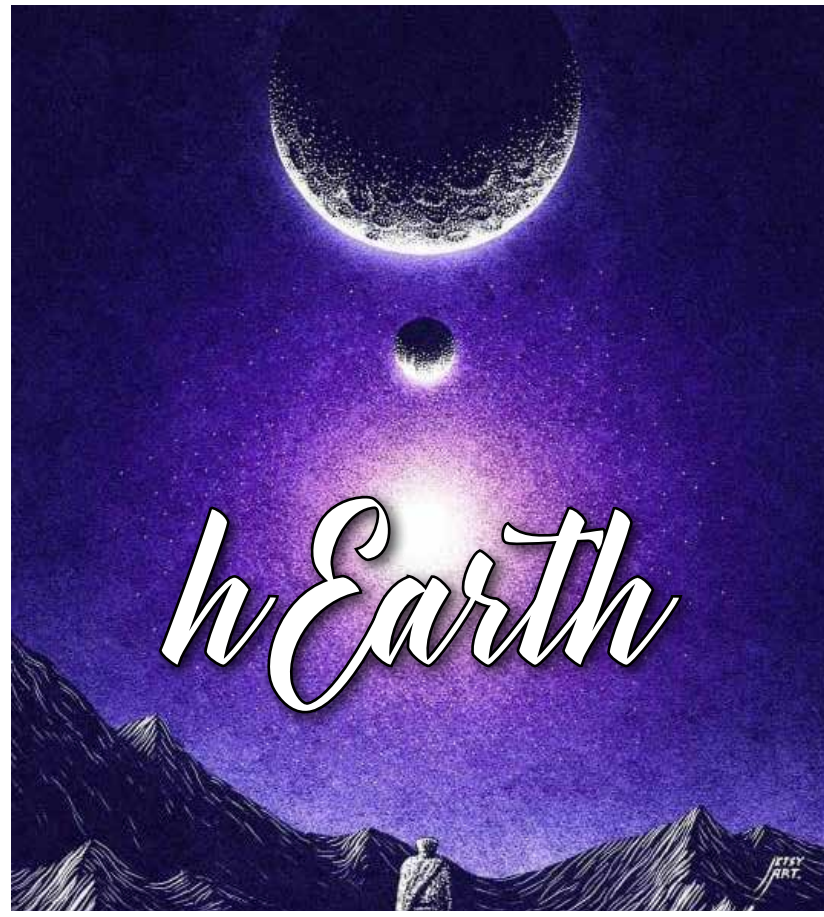

Eve remembered when strange things had already begun to happen on Earth. It was the year 2030 and the nations in their greed for expansion and economic dominance began researching new technologies. The earlier nuclear stockpiling Cold War race of the former superpowers America and Russia was now taken over by an intense rivalry between China and the USA. Each trying to outdo the other in every field. The Chinese had explored covert biological and chemical warfare as outright nuclear war was liable to bring about intervention of the United Nations. The USA along with other European countries retaliated by taking huge steps in Space research. They began a combined ambitious project of making a colony on Mars in case the Chinese took the last option of nuclear war in their craze for global dominance. Eve was part of the crew that had been assigned the project of building this station on the red planet. She had made many trips to and fro and the unmanned station was now fully functional and controlled by remote.

She was sitting in her garden contemplating the delicate pansies blossoming in late spring when she peered closer she noticed the leaves had begun curling and some were even burnt at the edges. Then all of a sudden purple and black rain began to fall. She looked up at the ominous black sky and feared the worst. She thought the Chinese must have tested a nuclear bomb again. They largely kept the effects of their nuclear tests secret but it was being felt all over the world. Radioactive particles and rays were being released. These were leading to the alteration of genetic materials and causing bone cancer. The radioactive fallout in the environment was being absorbed by humans and animals through contaminated food. Babies were born with abnormalities, but the Chinese refused to give up despite all the countries of the world appealing to them.

The world had barely survived the devastating effects of the Coronavirus which left many dead and economies the world over destroyed. It had an upside to it, the survivors were blessed with a cleaner and greener Earth. The joy however, was shortlived as the Chinese again began messing around with our already endangered planet. As a result of these tests, new mutant species were becoming visible. She looked at the solitary lizard clicking away at her balanced on the garden fence which had been active even in the cold winter which was usually their hibernating time. It was rumoured that the Chinese had even been experimenting with genetic mutation and mixing human and animal genes in a bid to create a superhuman race. But these tests were done far underground in highly secret bunkers so there was no way the outside world could get wind of them.

It was only when a very aged and respected Chinese scientist ran rogue and tweeted to the world that China had indeed invented 'Batmen'. Humans with the ability to fly and see in the dark using sonar. The world was made to believe he had gone mad and

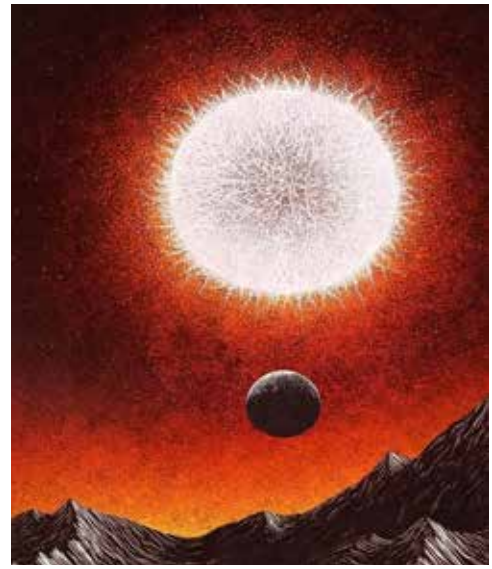

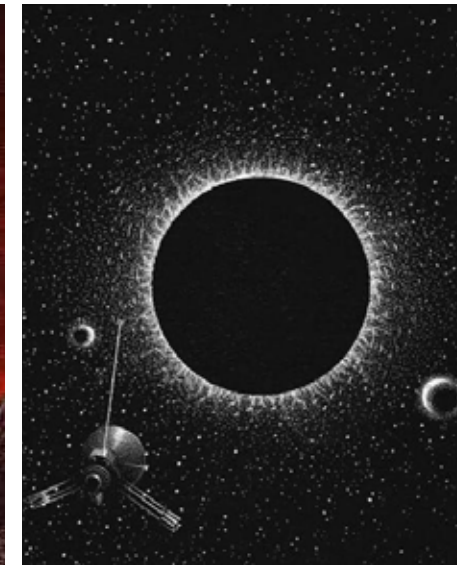

he soon disappeared. Some said he had been silenced or killed by the Chinese government.

The terrifying Amazon rain forests fires in 2019 had driven many wild animals out and the marsupials in the land down under- Australia began mutating to survive. Some species became extinct and new ones were born. People began to see a strange new species of Kangaroos that did not have a pouch outside but carried their young on their backs and walked upright all the time like humans. Their torso and hands were more developed than their older counterparts.

The climate had also undergone a huge change. There were very long and cold winters with smog for nearly 6 months and then the season would change suddenly to a hot and humid summer. Spring was very short now, just 15 days. Incessant torrential rains followed the short spring continuing for many days interspersed with hail storms which ruined crops. The nations had to manufacture food and keep huge stocks as famines were common. The nations had tried to get together many times to take responsible steps to curb global warming but the greed of some nations for development cut short their progress. The Polar ice caps were melting rapidly and some Pacific islands were on the verge of being submerged.

Eve heard the sirens blaring and rushed to the secret hanger where her craft was kept. She was always on duty and they had given her a penthouse suite with a rooftop garden built on top of the secret underground hanger. She skidded down the pole to the basement fireman style. She quickly put on her spacesuit and summoned to her crew to get on board. She had been told to follow a protocol whereby some VIP passengers were to be transported to her craft in case of an emergency in a pod through a secret underground tunnel. She did not know the identity of these passengers as it was highly confidential. The pod appeared all of a sudden like out of nowhere and attached itself to the craft. Eve gunned the engines and the craft blasted into space.

As she looked out of a porthole she saw large mushroom clouds forming on Earth-like giant purple mushrooms in an evil forest. She feared that was the last she was going to see of her beloved planet as it seemed the Chinese had exercised their last option and triggered a nuclear war.

A nuclear blast almost hit them and she struggled to steer clear. She looked around for her crew and found no one was responding. As she went to the rear end of the craft to her dismay she found that the firestorm caused by the nuclear bombs had damaged one side of the craft where most of the crew operated from. Eve recoiled in horror to see the charred bodies of her crew. She realised that the damage was irreparable. She quickly retreated back into the main craft and tried to steer it back on course. She realised to her dismay that she was now all alone save for the passengers in the secret pod.

Eve tried to keep her mind focussed on the task at hand. She alone had to get those VIP passengers to the Mars station. They would probably be the only survivors left of humans on Earth. She felt she would go insane and she struggled hard to get rid of the sinking feeling of desolation she was experiencing. In one moment she had lost everything, her home, her family, her planet. When she went back what would she find there she wondered? Just a "Republic of Insects and Grass" as Jonathan Schell wrote on the aftermath of a nuclear holocaust.

It was a very long and lonely journey although the time taken to reach Mars had been reduced to a month. It was the longest 30 days she had experienced in her life. At last, she saw the outline of the red planet and the beacons of the space station. She expertly lowered the craft onto the surface and made a safe landing. She wore her spacesuit and proceeded to the pod to unlock the doors. Her heart was pounding very fast in anticipation as to who she would meet. The pod was large enough to house only two people at the most. As the pod opened with a loud hissing sound she realised that the two people inside were not wearing spacesuits. She shouted to them to not step outside. They were a pair - a male nearly 8 feet tall and a female 7 feet tall. They were nothing like beings she had seen before but only in unconfirmed rumours. They had high cheekbones and sharp ears, a huge torso and skinny legs. They had webbed feet and hands and wings. The mutation from bats

was unmistakable. Their skin glistened a combination of brown and black. Their eyes were jet black. Eve gaped at them open-mouthed at a loss for words.

Finally, the female of the species spoke in a very high pitched voice which jarred Eve's eardrums. " We have rid the Earth of all humans as they are a selfish and uncaring race. We are mutants of both human and animals and we shall design a new ecosystem on Earth that will take care of the needs of both. I and my mate will start a new race and go back to Earth when it had recovered from the nuclear holocaust."

Eve was horrified and stammered -" W.. w..what would become of me?"

The male replied coldly, "You will have to be exterminated once you have finished your task of transporting us back to Earth after a few years."- He said pointing a laser gun at her and indicating that she should open the main door of the craft.

Eve asked. "How did you manage to get into the secret pod and where have you come from?"

The male explained. "Our race had been initiated by the Chinese, but they soon realised that they had indeed created a species far superior to them. They felt threatened and tried to kill us but my partner and I escaped and infiltrated your secret plans. We triggered the nuclear holocaust so we could save our species and destroy yours."

Eve saw that the pod door was near the damaged part of the craft. She pretended to open it but quickly lunged for a lever that shut the door between her and the pod. Then she ran to the main engine room and detached the pod. She saw it roll on the surface of Mars and when it came to a halt the male mutant stepped out, spread his wings and began flying towards her craft. As she fired the craft he came and landed on her windshield and clung on with his huge taloned wings, blocking her view. But Eve desperately maneuvered the craft sending it into a tail-spin. She went out further into space till they were too far away from the gravity of Mars and then she suddenly cut the engines bringing the craft to a dead halt. The momentum dislodged the male and she saw him trying to flap his wings to get back to Mars but he was too late and he just drifted off helplessly into space in slow motion.

She had no idea what to do next, she had barely enough fuel to make it to the next station which was still being built on Venus. There she could refuel for the trip back to Earth. One of her male colleagues Adamson had volunteered for overseeing the Venus station and she hoped to God he was still alive. It would indeed be a very lonely trip and she had no idea if the damaged craft could even make it. But in any case, it would be better to wait it out there as Earth was a burnt-out shell at the moment. She was sure if the Batwoman was still alive on Mars she would attack her if she went back there. Eve had enough supplies to last her a year at least. Thus she was left with a choice to either risk returning to Earth or go to Venus. She hoped she would find her colleague there and maybe they could start the human race all over again. She really had no idea if Earth would ever be inhabitable again. She chose the latter. As they say, life will always find a way...to home and hearth.

Pic art by Justin Estcourt-
https://linktr.ee/jetsyart

Disclaimer : This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

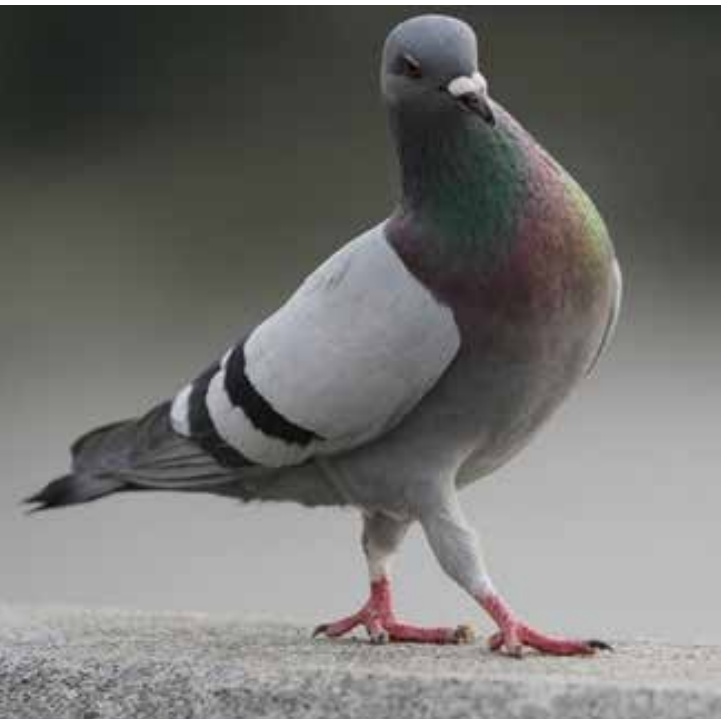

Amazing Facts

1. **Pigeons can see ultraviolet lights.**
2. If a statue in the park of a person on a horse has both front legs inthe air, the person died in battle; if the horse has one front leg inthe air,the person died as a result of wounds received in battle; if the horsehasall four legs on the ground, the person died of natural causes.
3. The little circles of paper that are cut out after a paper has been punched by a hole puncher are called "chad."
4. Teflon is the most slipperiest substance in the world.
5. The lifespan of a firefly is about seven days. During these days, they are busy trying to find a mate.
6. A crocodile can run up to a speed of 11 miles per hour.
7. In one day, adult lungs move about 10,000 litres of air.
8. Cows do not have any upper front teeth. Instead they have a thick pad on the top jaw.
9. Energy is being wasted if a toaster is left plugged in after use.
10. The Golden Gate Bridge was first opened in 1937.
11. Trees that are near street lights do not shed their leaves as fast as a tree that is in the country.
12. A Singapore singing group by the name of "The Oriental Singers," sang non-stop for 74 hours and five minutes.
13. Every 25 miles a car produces one pound of pollution.
14. There was a molasses flood in Boston on January 15, 1919 that killed 21 people and injured 150 people.
15. The Arctic Tern, which is a small bird, can fly a round trip from the Arctic to the Antarctic and back. This can be as long as twenty thousand miles per year. This is the longest migration for a bird.
16. The word "America" comes from the European explorer "Amerigo Vespucci.
17. Thomas Edison, the inventor of the light bulb was afraid of the dark.
18. In 1933, Mickey Mouse is believed to have received 800,000 fan letters.
19. Male rabbits are called "bucks," females are "does."
20. It took eleven years to built the Taj Mahal, (1632-1643).
21. Mangos are known throughout the world as the "King of Fruits."
22. The temperature of milk when it is coming out of a cow is about 36 degrees celsius.
23. Wild Flamingos are pink because they consume vast quantities of algae and brine shrimp.
24. The word "diastema" is the word for having a gap between your teeth.

2.25. While digging, an Armadillo can hold its breath for up to six minutes.

26. The sun is approximately 75% hydrogen, 25% helium by mass.
27. When a porcupine is born, its quills are soft and mostly white, but harden within hours.
28. Since 1978, at least 37 people have died as a result of shaking vending machines, in an attempt to get free merchandise. More than 100 people have been injured.
29. The first drug to be sold in the form of a tablet is Aspirin.
30. The original name for butterfly was flutterby.

www.greatfacts.com/

GENERAL KNOWLEDGE QUIZ

1. Which mountain in the east of Turkey is purported to have been the landing place of Noah's Ark? **Mt. Ararat**
2. The Norse adventurer Rollo was the first ruler of which famous Duchy of northern France? **Normandy**
3. Which school of art was pioneered by painters such as Pablo Picasso and Georges Braque? **Cubism**
4. Meryl Streep and Dustin Hoffman both won Oscars for their portrayal of a divorcing couple in which 1979 legal drama film? **Kramer Vs. Kramer**
5. Which type of bird was named after a group of islands of the western coast of Africa? **Guano**
6. With which state in the American West are Mormons most closely associated? **Utah**
7. Which blind singer and pioneer of soul music posthumously received 5 awards at the 2005 Grammy's, following his death the previous year? **Ray Charles**
8. In 1917, the British monarch George V changed the family name from Saxe-Coburg and Gotha to begin which new dynasty, in an attempt to avoid any German connotations? **Windsor**

9. Bohemia, Moravia, and parts of Silesia make up the territory of which modern central-European nation? **Czech Republic**
10. How many official languages are there in the United States of America? **0**
11. Which German striker holds the record for most goals at the FIFA World Cup, with 16 spread across four tournaments? **Miroslav Klose**
12. What is the surname of father-son politicians Pierre and Justin, who were first elected to the position of Canadian Prime Minister some 40 years apart? **Trudeau**
13. Which African country's official name translates into English as "Lion Mountains"? **Sierra Leone**
14. Bacchus, the Roman god of wine, was analogous to which Greek figure? **Dionysus**
15. Bernardo O'Higgins was an independence leader for which nation in the Americas during the 19th century? **Chile**
16. Which legendary film director (1899-1980) is well-known for his cameo roles in 39 of his 52 feature films? **Alfred Hitchcock**
17. Michael Jordan spent the majority of his NBA career with which Illinois-based basketball franchise? **Chicago Bulls**
18. The 1972 Olympic Games in which city were marred by a terrorist attack targeted at Israeli athletes? **Munich**
19. Tanganyika and Zanzibar united in 1964 to become which modern-day African state? **Tanzania**
20. The Gulf of Tonkin incident was a controversial confrontation that helped spark US intervention in which disastrous Asian war? **Vietnam War**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-451-general-knowledge/

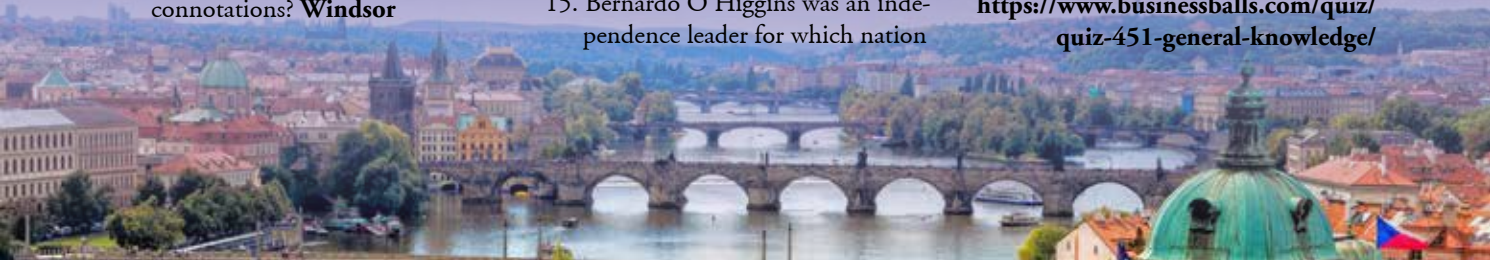

आदरणीय संपादक जी,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक सदा की भाँति ताज़गी और नवीनता लिए हुए था। मुखपृष्ठ पर छपा चित्र इस ओर संकेत कर रहा था कि प्रदेश में किस प्रकार प्रतिभाओं का सम्मान हो रहा है। यह अंक सुपर-100 कार्यक्रम की अभूतपूर्व सफलता को समर्पित था। साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से आने वाले मेधावी विद्यार्थियों के लिए सुपर-100 कार्यक्रम सचमुच वरदान साबित हुआ है। 'ट्रक ड्राइवर का पुत्र है बैच का टॉपर दीपक' पढ़कर लगा कि राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों को अगर समान अवसर प्रदान कर दिए जायें, तो वे कमाल का प्रदर्शन कर सकते हैं। पत्रिका के इस अंक को पढ़कर 'सुपर-100' में प्रवेश का क्रेज और बढ़ेगा। विश्व शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रमोद दीक्षित 'मलय' का लेख बेहद पसंद आया। अन्य लेख व स्थायी स्तंभ भी प्रभावी थे।

सविता
पीजीटी इतिहास, राकवमा विद्यालय काहनौर
जिला- रोहतक

आदरणीय संपादक जी,

पत्रिका का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। पढ़कर पता चला कि आईआईटी एडवांस व नीट परीक्षा में जबरदस्त प्रदर्शन करने वाले सुपर-100 के सितारे अत्यंत साधारण पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित हैं। मुख्यमंत्री जी द्वारा विशेष कार्यक्रम में इन विद्यार्थियों के सम्मान से न केवल इन विद्यार्थियों का हौसला बढ़ा, बल्कि यह अन्य विद्यार्थियों को भी बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करेगा। दूसरी ओर भिवानी बोर्ड द्वारा भी आयोजित कार्यक्रम में भी शिक्षा मंत्री द्वारा मेधावियों को सम्मानित किया गया है। प्रमोद कुमार के लेख 'इतिहास रच रहा है विद्यालय शिक्षा विभाग' को पढ़कर लगा कि सचमुच अब राजकीय विद्यालय कमाल का प्रदर्शन कर रहे हैं। पत्रिका की अन्य सामग्री भी स्तरीय व ज्ञानवर्धक थी।

दर्शन लाल बवेजा
विज्ञान अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कैंप
खंड जगाधरी, जिला यमुनानगर

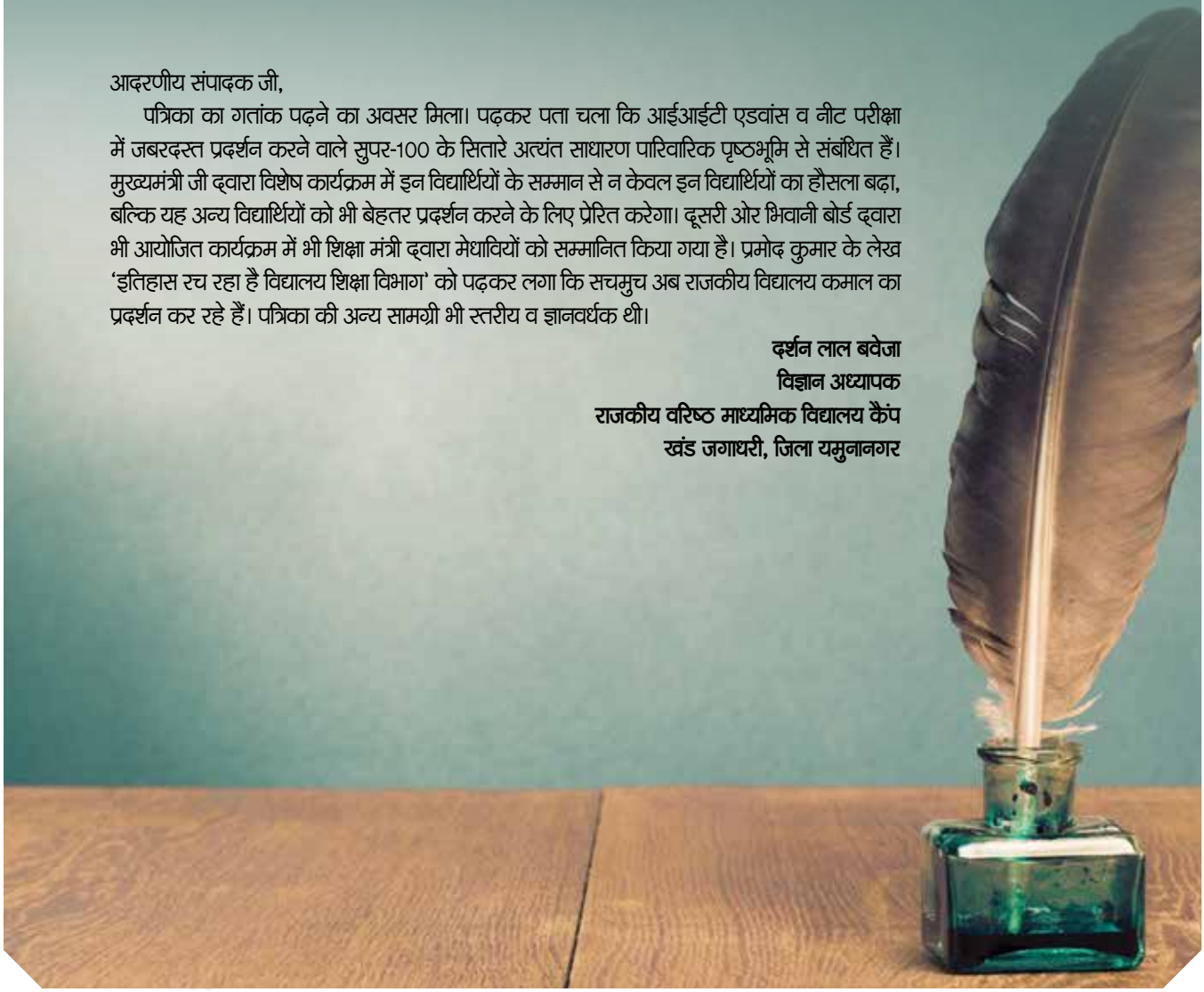

हरियाणा की 55वीं वर्षगाँठ

पर आप सभी को

हार्दिक शुभकामनाएँ

Sh. Satyadev Narayan Arya
Governor of Haryana

Sh. Dushvant Chautala
Dy. CM

55वां हरियाणा दिवस 01.11.2020

Area : 44,212 Sq.Km (भारत का 20वां राज्य क्षेत्र के अनुसार)

Pop. Density: 573 /km

Population : 25351462

Districts : 22

Biggest Distt. Sirsa

Smallest Distt. : Panchkula

Newest Distt. : Charkhi Dadri

Biggest City : Faridabad

प्रथम मुख्यमंत्री -		पंडित भगवत दयाल शर्मा	
मण्डल -	06	गाँव -	6841
उपमंडल -	74	लोकसभा सदस्य -	10
तहसील -	93	विधान सभा सदस्य -	90
उप तहसील -	50	राज्य सभा सदस्य -	05
ब्लॉक -	140	प्रथम राज्यपाल -	धर्मवीर
कस्बे -	154	प्रथम विधान सभा स्पीकर - शन्नो देवी	
ग्राम पंचायत -	6212	प्रथम हरियाणवी उपन्यास - झाडूफिरी	
पंचायत समिति -	119	राजकीय पक्षी -	काला तीतर
जिला परिषद -	21	राजकीय पशु -	काला हिरन

Districts as per

01 Nov.1966 - Ambala, Karnal, Jind, Rohtak, Hisar, Mahendergarh & Gurgaon.
22 Dec.1972 - Sonipat, Bhiwani.
23 Jan.1973 - Kurukshetra.
26 Aug.1975 - Sirsa.
02 Aug.1979 - Faridabad.
01 Nov.1989 - Rewari, Panipat, Kaithal, Yamunanagar.
15 Aug.1995 - Panchkula.
15 July 1997 - Jhajjar, Fatehabad.
04 April 2005 - Mewat.
15 Aug.2008 - Palwal.
01 Dec.2016 - Charkhi Dadri. (Officially Notified)

Total 22 Districts Now in Haryana

-Abhimanyu Dahia
PGT Geography GSSS Ugala (Ambala)

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

नोवल कोरोनावायरस रोग
(COVID-19)

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

Help us to help you

बच्चों को है समझाना,

बेवजह घर से बाहर नहीं जाना

बदलकर अपना व्यवहार, करें कोरोना पर वार

COVID-19 संबंधित जानकारी के लिए
राज्य हेल्पलाइन नंबरों या स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के 24X7 हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करें 1075 (टोल फ्री),
ई-मेल करें: ncov2019@gov.in , ncov2019@gmail.com

mohfw.gov.in @MoHFWIndia @MoHFW_INDIA @mohfwindia mohfwindia

If undelivered Please return to c/o Shiksha Saarthi Branch, 3rd Floor, Shiksha Sadan, Sector-5, Panchkula(HR)-134114